SAMPLE

Jyotish Sanjivani

MindSutra Software Technologies
A-16, Ramdutt Enclave, Milap Nagar,
Uttam Nagar, New Delhi-110059

श्रीगणेशाय नमः

गणानां त्वां गणपतिं हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम्।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नूतिभिः सीद सादनम् ।।

यह स्तुति हमारी शक्ति और सच्चे आत्म आनन्द को जानने और उसका अनुभव करने में हमारी सहायता करती है तथा इससे सार्वभौमिक एकता, मधुरता और खुशहाली में प्रगति होगी।

नवग्रहस्तोत्र

जपाकुसुमसंकाशं काश्पेयं महाद्युतिम्।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।।

अर्थ– जो गुड़हल के फूल के समान लाल है, जिसका जन्म कश्यप परिवार में हुआ है, जो बहुत उज्ज्वल है तथा अंधकार का शत्रु है और जो सभी पापों का नाश करता है, मैं उस दिवाकर को प्रणाम करता हूँ।

सार– नव ग्रह केवल भौतिक अर्थों में ही ग्रह या नक्षत्र नहीं हैं, वे केवल नौ में नहीं हैं, बल्कि संपूर्ण ब्रह्माण्ड के भौतिक अस्तित्व में उपस्थित सभी ग्रहों व नक्षत्रों में अंतर्निहित शक्ति हैं। सूर्य यहां सिर्फ पौधों द्वारा किए जाने वाले प्रकाशसंलेष्ण के लिए भौतिक उर्जा या गर्मी का स्रोत मात्र का प्रतिनिधि नहीं है, अपितु यह संपूर्ण ब्रह्माण्ड के लिए चेतना का प्रतीक है। जैसकि हम चेतना में जागते हैं, तो हम कम लड़खड़ाते हैं और कम गलतियां व पाप करते हैं तथा चेतना में नहीं उठते हैं, तो अधिक लड़खडाते हैं और अधिक गलतियां व पाप करते हैं (सभी पाप कार्य संपूर्ण स्वास्थ्य के बिगड़ने का कारण होते हैं)। अतः यहां सूर्य का उल्लेख सभी पापों का नाश करने के लिए किया गया है। सूर्य उज्ज्वल है और इसलिए यह अंधेरे का शत्रु हैं, ना केवल भौतिक अर्थों में बल्कि अज्ञानता के अंधकार का शत्रु होने के संदर्भ में भी।

यह स्तुति नींद, जड़त्व और निष्क्रियता पर विजय प्राप्त करने में सहायक सिद्ध होगी। यह अवसाद और हताशा पर विजय प्राप्त करने में सहायक सिद्ध होगी।

अर्थ– मै उस चंद्रमा को प्रणाम करता हूँ, जो दही, शंख और ओस की बूंदों के समान सुन्दर और दीप्तिमान है, जिसका जन्म समुद्र मंथन से हुआ है, जो शशक का प्रतीक है तथा जो भगवान शिव के मुकुट/मस्तक की शोभा बढ़ाता है।

सार– चंद्रमा की सुन्दरता का वर्णन करने का वास्तविक उद्देश्य उस सिद्धान्त की ओर संकेत करने से है, जो सार्वभौमिक अथवा ब्रह्माण्ड के मस्तिष्क के समान है। ब्रह्माण्डीय मन को पौधों का पालन–पोषण करने वाला कहा जाता है। इससे लगता है कि चंद्रमा से उपचारात्मक गुण पौधों में हस्तांतरित होते हैं। मन संपूर्ण संसार में आरोग्यसाधक के रूप में सुविख्यात है।

जब हम चंद्रमा के सिद्धान्त का व्यक्तिगत स्तर पर विचार करते हैं, तो केंद्रिय तंत्रिका प्रणाली से संबंधित तीन विशेषताएं दिखाई देती हैं– समुद्र के दूध से जन्म होना, शशक के समान होना तथा शिव के मस्तक की शोभा बढ़ाना। मन का जन्म अच्छी तरह से फैले हुए श्वेत तंत्रिका प्रणाली से, बुद्धि के साथ होना तथा मन जब वास्तव में स्वच्छ होता है, तो शिव के मुकुट की अथवा व्यक्तिगत रूप में स्वयं की सुन्दरता को बढ़ाता है।

यह स्तुति कमजोर और कोमल मन को दृढ़ बनाती है तथा व्यक्ति को कठिन परिस्थितियों से लड़ने और उन पर विजय प्राप्त करने में शक्ति प्रदान करती है।

धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं तं मंगलं प्रणमाम्यहम्।।

अर्थ– जिसका जन्म धरती के गर्भ से हुआ है, बिजली के चमकने जैसे उज्ज्वल, और जिसकी शक्तिशाली भुजाएं हैं, मै उस युवा मंगल को प्रणाम करता हूँ।

सार– भारतीय ज्योतिष के अनुसार, मंगल अग्नि के ब्रह्माण्डीय सिद्धान्त का प्रतिनिधित्व करता है तथा शौर्य, उद्यमशीलता, गतिशीलता, प्रलय, भयानक आग, महामारी, दंगे, चक्रवात और युद्ध का कारक माना जाता है। यह स्तुति अग्नि सिद्धान्त को विनियमित करने के लिए अभिप्रेरित करता है तथा इसे रचनात्मक दिशा में श्रृंखलाबद्ध करता है। यह एक राजा के सिद्धान्त के समान है।

संभवतः यह स्तुति उन सभी स्थिति में सहायता करता है, जो उपापचय को कम करे तथा शरीर को मंदगति, आलस्यपूर्ण और कमजोर बनाए। यह उर्जा प्रदान करके शरीर के सभी अंगों को सक्रिय कर सकता है। इसके अतिरिक्त, संभवतः यह शारीरिक प्रणाली के उत्तेजना, क्रोध और अत्यधिक सक्रियता को नियंत्रित करता है।

प्रियंगुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्।।

अर्थ– लालिमा युक्त श्याम वर्ण के दिखने वाले और अशोक के वृक्ष की कली के समान अद्वितीय सुन्दर शांत प्रकृति के बुध को मैं प्रणाम करता हूँ।

यह स्तुति स्पष्ट रूप से बुद्धिमत्ता और संयम से संबंधित है। धूसर बिन्दू मस्तिष्क की बुद्धि को दर्शाता है, जो कि असभ्य और बर्बर भावना व स्वभाव पर नियंत्रण रखता है। अतः यह संयम और अनुग्रह का शासकीय सिद्धांत है।

देवानां च ऋषिणां च गुरुं कांचनसंनिभम्।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्।।

अर्थ– जो देवताओं और ऋषियों के गुरु हैं, जो सुनहरे वर्ण के हैं तथा जो त्रिलोक के बुद्धि के स्वामी हैं, उन बुद्धिमान बृहस्पति को मैं प्रणाम करता हूँ।

सार– यह स्तुति स्पष्ट रूप से बुद्धिमान व्यक्ति को समर्पित है, जिसका मस्तिष्क के सभी केन्द्रों पर शासन है और इस प्रकार से वह चेतना के सभी तीन स्तरों स्वप्न, नींद और जागरण पर भी शासन करता है। सुनहरा वर्ण उस श्रेष्ठत्तम प्रकाश का सूचक लगता है, जो प्रत्येक गतिविधि पर शासन करता है। यह केंद्रिय तंत्रिका प्रणाली में जालीदार प्रणाली का प्रतिनिधित्व भी करता है, जो कि मस्तिष्क में सभी केन्द्रों की गतिविधि को सुनिश्चित करता है।

हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्।।

अर्थ– जो बेला के फूल और बर्फ के समान दीप्तिमान हैं, जो असुरों के सर्वश्रेष्ठ गुरु हैं तथा जो सभी शास्त्रों के प्रवक्ता हैं, मैं उस शुक्र को प्रणाम करता हूँ।

सार– यह स्तुति उस शुक्र को समर्पित है, जो भावनाओं एवं अन्तर्निहित प्रकृति के व्यवस्थित प्रशासन के लिए उत्तरदायी सिद्धान्त का सूचक प्रतीत होता है। ब्रह्माण्ड के हित के लिए इस सिद्धान्त के द्वारा यौन शक्ति और भौतिक शक्ति, जो कि दुराचारी हो सकती हैं, उन पर प्रत्यक्ष रूप से शासन किया जाता है। संरचनात्मक रूप से यह मस्तिष्क में संपूर्ण अंग तंत्र के संचालन का प्रतिनिधित्व करता है।

यह स्तुति जीवन और ब्रह्माण्ड के स्थायीकरण, स्फूर्ति, पर्याप्तता, उत्साह और प्रेम का प्रतिफल प्रतीत होता है।

नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।

अर्थ– मै उस स्थिर शनि को प्रणाम करता हूँ, जो नीले काजल के समान आभा वाले हैं, जो सूर्य के पुत्र हैं, यम के बड़े भाई हैं, तथा जिनका जन्म सूर्य और उनकी पत्नि छाया से हुआ है।

सार– यह स्तुति शनिदेव को समर्पित है, जो कि स्थिरता के देवता प्रतीत होते हैं। यदि अनजाने में अभिव्यक्त किया जाता है, तो यह प्रगति को धीमा कर सकता है, यदि उचित रूप से अभिव्यक्त किया जाता है, तो यह असामान्य और अव्यवस्थित घटनाओं को रोक सकता है। 'यम का बड़ा भाई' होना यह दर्शाता है, कि यम जीवन और मृत्यु के नियमन के लिए जिस सिद्धान्त अथवा देवत्व का प्रतिनिधित्व करते हैं, उसके समायोजन में स्थिरता महत्वपूर्ण स्थान रखता है। 'सूर्य का पुत्र' होना यह दर्शाता है, कि इसमें ज्ञान और अज्ञानता का प्रकाश व अंधकार की शक्ति है,। यह विकास की सीमा, जैविक क्षमता, शरीर में नकारात्मक उर्जा तंत्र का प्रतिनिधित्व कर सकता है।

अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्।
सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्।।

अर्थ– मै उस शक्तिमान और साहसी राहु को प्रणाम करता हूँ, जो अर्ध शरीर वाला है, जो सूर्य और चंद्रमा तक

को भी पीड़ित कर सकता है तथा जिसका जन्म सिंहिका के गर्भ से हुआ है।

सार– यह स्तुति राहु को समर्पित है। राहु अंतरिक्ष और समय में स्थित एक बिन्दु है, जब चंद्रमा धरती द्वारा सूर्य के परिक्रमा पथ को काटते हुए उत्तर की ओर चला जाता है।

यह ब्रह्माण्ड आश्चर्यों से भरा हुआ है। इस ब्रह्माण्ड के सृजन और विकास में अनेक समूहों और देवताओं का योगदान है। जो इस जगत में नकारात्मक और बुरा प्रतीत होता है, वह भी इसी सृजन का ही एक भाग है। इसलिए सार्वभौमिक कल्याण के लिए यह स्तुति राहु को समर्पित है।

पौराणिक कथाओं में राहु को विप्रचिती और सिंहिका का पुत्र कहा गया है। ये दो कक्षों के मिलन बिन्दु का प्रतीक जान पड़ता है, जिससे राहु उत्पन्न होता है, ताकि वे मानसिक अंधेरों के लिए उत्तरदायी भौतिक बलों का प्रतिनिधित्व कर सकते हैं। अतः व्यक्तिगत दृष्टि कोण से राहु उस स्थान और समय का प्रतिनिधित्व करता है, जब व्यक्ति मानसिक अंधकारों, भ्रम, कमजोर स्मरण शक्ति से पीड़ित होता है, तथा जब वह किसी भूत के अधीन होने का काल्पनिक चित्र बना सकता है।

हालांकि, निद्रा, विस्मृति का उचित सीमा तक होना स्वास्थ्यवर्द्धक होता है। अतः राहु को शुभ फलदायक कहा जाता है, सिवाय जन्म कुण्डली में स्थित कुछ परिस्थितियों और नक्षत्रों को छोड़कर।

पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम्।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्।।

अर्थ– जो पलाश के फूलों के समान लाल है, जो तारों और ग्रहों का मस्तक है और जो रौद्र रूप वाला भयावह है, मै उस केतु को प्रणाम करता हूँ।

सार– यह स्तुति केतु को समर्पित है। केतु वह बिन्दु है, जब चंद्रमा धरती द्वारा सूर्य के परिक्रमा पथ को काटते हुए दक्षिण की ओर चला जाता है।

केतु व्यक्ति के स्वभाव में अथवा ब्रह्माण्ड में हिंसा के सिद्धान्त को दर्शाता है। 'रूद्र' शब्द विनाश का प्रतीक है। सार्वभौमिक एवं साथ ही व्यक्तिगत जीवन में अधिकांश लोगों को विनाश और हिंसा से खतरा होता है। हालांकि, ब्रह्माण्डीय घटनाओं से विनाश और हिंसा को पृथक नहीं किया जा सकता है और जब यह उचित रूप में होता है, तो यह जीवन के आवश्यक और स्वास्थ्यवर्द्धक निर्माण में सहायक होता है। शरीर रचना, शारीरिक क्रिया विज्ञान और गर्भविज्ञान की पुस्तकों में विनाश की अनेक प्रक्रियाओं का वर्णन किया गया है।

अतः व्यक्तिगत जीवन और स्वभाव में हिंसा को नियंत्रित करने वाले केतु की स्तुति कहीं अधिक उचित है।

फलश्रुति

इति व्यासमुखोद्गीतं यः पठेत् सुसमाहितः।
दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशान्तिर्भविष्यति।।

अर्थ– अब यह स्तुति समाप्त होती है। जो भी व्यक्ति महर्षि व्यास द्वारा रचित इस स्तुति को दिन अथवा रात्रि के समय एकाग्रचित्त और शांतचित्त होकर पढ़ता या सुनता है, वह सभी प्रकार की आपदाओं से मुक्त हो जाता है।

सार– नवग्रहों और नक्षत्रों की स्तुति वास्तविक रूप में व्यक्ति को सच्चे आत्म का ज्ञान करवाता है तथा अब तक अनुपलब्ध उन उर्जा या शक्तियों को प्राप्त करने में सहायता करता है, जो कि विभिन्न रूपों में देवताओं के प्रतीक मानी जाती हैं।

नरनारीनृपाणां च भवेद्दुःस्वप्ननाशम्।
ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टिवर्धनम्।।

अर्थ– नर, नारी और शासक को अतुलनीय समृद्धि, स्वास्थ्य और शक्ति की प्राप्ति होती है तथा उनके बुरे स्वप्नों व विचारों का नाश होता है।

सार– सभी ग्रहों और नक्षत्रों की स्तुति से सुख–समृद्धि, स्वास्थ्य व शक्ति प्राप्त होती है। विनाशक गुणों के कारण सभी प्रकार की दरिद्रता, बुरे स्वप्न और बुरे विचार लुप्त हो जाते हैं।

ग्रहनक्षत्रजाः पीडस्तस्कराग्निसमुद्भवाः।
ताः सर्वाः प्रशमं यान्ति व्यासो ब्रूते न संशयः।।

अर्थ– जैसा कि व्यास ऋषि ने कहा है जो कि निःसन्देह, अचूक और सत्य है, कि ग्रहों और नक्षत्रों के अशुभ प्रभाव के कारण उत्पन्न चोर, अग्नि आदि की समस्याएं निरस्त हो जाती हैं।

सार– इस प्रकार महर्षि व्यास इस सत्य की घोषणा करते हैं, कि इन स्तुतियों का जाप व अध्ययन करने से सभी ग्रहों के प्रकोप और आपदाओं से मुक्ति मिलती है।

श्री महर्षि व्यास द्वारा रचित नवग्रह स्तोत्र समाप्त।

ज्योतिष सारिणी

मुख्य विवरण

जन्म दिनाकं	18:12:1973(मंगलवार)
जन्म समय	01:45:00
जन्म स्थान	new delhi
अक्षांश	028:36:00N
रेखांश	077:12:00E
यु./ग्रीष्म समय संस्कार	-00:00
जी. एम. टी. समय	020:15:00
स्थानीय समय	001:23:48 hrs
सांपातिक काल	007:09:02 hrs
स्थानीय समय संस्कार	-000:21:11
अयनांश	N.C.Lahiri(023:29:36)
सूर्योदय	07:11:19AM
सूर्यास्त	05:24:35PM
विक्रम संवत	2030
शक संवत	1895
संवत्सर	प्रमादी
संवत्सर अधिपति	इन्द्राग्नि

घात चक्र

राशि (सूर्य)	कुम्भ
मास	फाल्गुन
तिथि	5,10,15
वार	शुक्रवार
नक्षत्र	अश्लेषा
प्रहर	4
लग्न	सिहं
सूर्य सिद्धान्त योग	वज्र
करण	चतुश्पद

अवकहड़ा चक्र

लग्न	कन्या
लग्नाधिपति	बुध
राशि (चन्द्रमा)	कन्या
राशिपति	बुध
नक्षत्र	हस्ता
नक्षत्रपति	चन्द्रमा
नक्षत्र चरण	2
ऋतु	बसन्त
मास	चैत्र
पक्ष	कृष्ण
तिथि	नवमी
तिथि श्रेणी	रिक्ता
तिथि पति	सूर्य
करण	गरिज
करण श्रेणी	चर
करणपति	वासुदेव
गण	देव
योनि	हस्त (स्त्री)
वर्ण	वैश्य
सूर्य सिद्धान्त योग	सौभाग्य
रज्जु	कंठ
वश्य	द्विपद
तत्व	अग्नि
विहग	वायस
तत्वाधिपति	मंगल
नाड़ी	आदि
नाड़ी पद	मध्य
वेध	शतभिषा
आद्याक्षर	Shaa
पाया	स्वर्ण

ग्रह स्थिती

लग्न कुण्डली

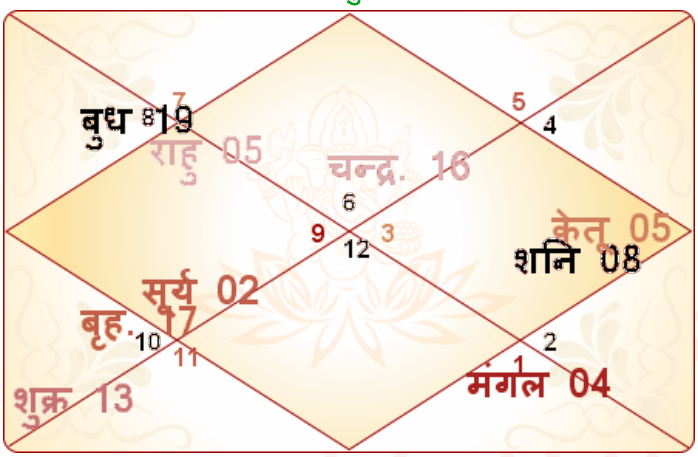

नवांमश कुण्डली

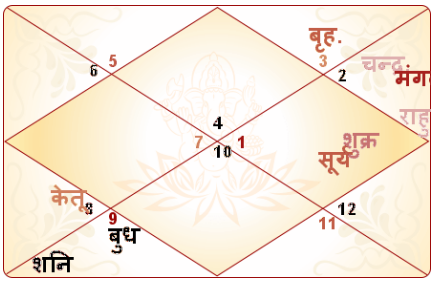

चन्द्र कुण्डली

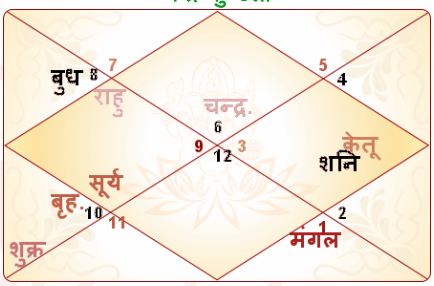

ग्रह स्थिती

ग्रह	राशि	अंश	गति	रा. पति	नक्षत्र	च.	न	न. पति	नवांश	नव. पति	विशेष
लग्न	कन्या	21:41:42	...	बुध	हस्ता	4	13	चन्द्रमा	कक्र	चन्द्रमा	
सूर्य	धनु	02:15:49	01:01:04	बृहस्पति	मूला	1	19	केतु	मेष	मंगल	मित्र राशि
चन्द्रमा	कन्या	16:00:57	13:01:33	बुध	हस्ता	2	13	चन्द्रमा	वृष	शुक्र	स्व नक्षत्र
मंगल	मेष	04:42:17	00:14:54	मंगल	अश्विनी	2	1	केतु	वृष	शुक्र	स्व राशि
बुध (ग्र.)	वृश्चिक	19:51:24	01:31:14	मंगल	ज्येष्ठा	1	18	बुध	धनु	बृहस्पति	स्व नक्षत्र
बृहस्पति	मकर	17:56:39	00:12:02	शनि	श्रवण	3	22	चन्द्रमा	मिथुन	बुध	नीच राशि
शुक्र	मकर	13:00:16	00:32:45	शनि	श्रवण	1	22	चन्द्रमा	मेष	मंगल	मित्र राशि
शनि (व.)	मिथुन	08:12:33	00:04:55	बुध	अरिद्रा	1	6	राहु	धनु	बृहस्पति	मित्र राशि
राहु (व.)	धनु	05:10:35	00:03:10	बृहस्पति	मूला	2	19	केतु	वृष	शुक्र	सम राशि
केतु (व.)	मिथुन	05:10:35	00:03:10	बुध	मृगशिर	4	5	मंगल	वृश्चिक	मंगल	सम राशि
हर्षल	तुला	03:20:59	00:02:22	शुक्र	चित्रा	4	14	मंगल	वृश्चिक	मंगल	...
नेपच्यून	वृश्चिक	14:20:40	00:02:10	मंगल	अनुराधा	4	17	शनि	वृश्चिक	मंगल	...
प्लूटो	कन्या	13:11:14	00:00:46	बुध	हस्ता	1	13	चन्द्रमा	मेष	मंगल	...

ग्रह से भाव (भाव मध्य) के बीच की दूरी

	लग्न	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	राहु	केतु	हर्षल	नेपच्यून	प्लूटो
लग्न	..	71	354	193	58	116	111	257	73	253	12	53	351
सूर्य	289	..	284	122	348	46	41	186	3	183	301	342	281
चन्द्रमा	6	76	..	199	64	122	117	262	79	259	17	58	357
मंगल	167	238	161	..	225	283	278	64	240	60	179	220	158
बुध	302	12	296	135	..	58	53	198	15	195	313	354	293
बृहस्पति	244	314	238	77	302	..	355	140	317	137	255	296	235
शुक्र	249	319	243	82	307	5	..	145	322	142	260	301	240
शनि	103	174	98	296	162	220	215	..	177	357	115	156	95
राहु	287	357	281	120	345	43	38	183	..	180	298	339	278
केतु	107	177	101	300	165	223	218	3	180	..	118	159	98
हर्षल	348	59	343	181	47	105	100	245	62	242	..	41	340
नेपच्यून	307	18	302	140	6	64	59	204	21	201	319	..	299
प्लूटो	9	79	3	202	67	125	120	265	82	262	20	61	..

विंशोत्तरी दशा

जन्म के समय विंशोत्तरी भोग्य दशा (अयनाश : 023:29:36) चन्द्रमा 5.0 व.5.0 म.26 द.

क्र0 स0	ग्रह दशा	अवधि	से
1	चन्द्रमा	5.0 y.5.0 m.26 d.	18:12:1973
2	मंगल	7.0 y.0.0 m.0 d.	14:06:1979
3	राहु	18.0 y.0.0 m.0 d.	14:06:1986
4	बृहस्पति	16.0 y.0.0 m.0 d.	13:06:2004
5	शनि	19.0 y.0.0 m.0 d.	13:06:2020
6	बुध	17.0 y.0.0 m.0 d.	14:06:2039
7	केतु	7.0 y.0.0 m.0 d.	13:06:2056
8	शुक्र	20.0 y.0.0 m.0 d.	14:06:2063
9	सूर्य	6.0 y.0.0 m.0 d.	14:06:2083

चन्द्रमा दशा

अन्तर्दशा	से
चन्द्रमा	
मंगल	
राहु	
बृहस्पति	
शनि	18:12:1973
बुध	14:04:1975
केतु	13:09:1976
शुक्र	14:04:1977
सूर्य	13:12:1978

मंगल दशा

अन्तर्दशा	से
मंगल	14:06:1979
राहु	10:11:1979
बृहस्पति	28:11:1980
शनि	04:11:1981
बुध	13:12:1982
केतु	10:12:1983
शुक्र	08:05:1984
सूर्य	08:07:1985
चन्द्रमा	13:11:1985

राहु दशा

अन्तर्दशा	से
राहु	14:06:1986
बृहस्पति	24:02:1989
शनि	20:07:1991
बुध	26:05:1994
केतु	13:12:1996
शुक्र	31:12:1997
सूर्य	31:12:2000
चन्द्रमा	25:11:2001
मंगल	26:05:2003

बृहस्पति दशा

अन्तर्दशा	से
बृहस्पति	13:06:2004
शनि	01:08:2006
बुध	12:02:2009
केतु	20:05:2011
शुक्र	25:04:2012
सूर्य	25:12:2014
चन्द्रमा	13:10:2015
मंगल	12:02:2017
राहु	19:01:2018

शनि दशा

अन्तर्दशा	से
शनि	13:06:2020
बुध	17:06:2023
केतु	24:02:2026
शुक्र	05:04:2027
सूर्य	05:06:2030
चन्द्रमा	17:05:2031
मंगल	16:12:2032
राहु	25:01:2034
बृहस्पति	01:12:2036

बुध दशा

अन्तर्दशा	से
बुध	14:06:2039
केतु	10:11:2041
शुक्र	07:11:2042
सूर्य	07:09:2045
चन्द्रमा	14:07:2046
मंगल	13:12:2047
राहु	10:12:2048
बृहस्पति	29:06:2051
शनि	04:10:2053

केतु दशा

अन्तर्दशा	से
केतु	13:06:2056
शुक्र	10:11:2056
सूर्य	10:01:2058
चन्द्रमा	17:05:2058
मंगल	16:12:2058
राहु	14:05:2059
बृहस्पति	01:06:2060
शनि	08:05:2061
बुध	17:06:2062

शुक्र दशा

अन्तर्दशा	से
शुक्र	14:06:2063
सूर्य	13:10:2066
चन्द्रमा	13:10:2067
मंगल	14:06:2069
राहु	14:08:2070
बृहस्पति	14:08:2073
शनि	13:04:2076
बुध	14:06:2079
केतु	14:04:2082

सूर्य दशा

अन्तर्दशा	से
सूर्य	14:06:2083
चन्द्रमा	01:10:2083
मंगल	01:04:2084
राहु	07:08:2084
बृहस्पति	02:07:2085
शनि	20:04:2086
बुध	02:04:2087
केतु	06:02:2088
शुक्र	13:06:2088

गोचर शनि

द्वादशे जन्मगै राशौ द्वितीये च शनैश्चर। सर्धानि सप्त वर्षाणि तथा दुखैर्युतो भवेत।।

(गोचर में जब शनि ग्रह, जन्म चंद्र से बारहवें, पहले और दूसरे भाव में भ्रमण करता है, उस समय (लगभग साढ़े सात वर्ष तक) को शनि साढ़ेसाती के नाम से जाना जाता है।)

प्रथम चक्र

साढ़ेसाती चक्र	गोचर राशि में	आरम्भ का समय	समाप्ति का समय	भ्रमण काल (व—म—दि)	शनि मूर्ति
प्रथम ढ़ैय्या	सिहं	07/09/1977	04/11/1979	2.0 y.1.0 m.28 d.	ताम्र
प्रथम ढ़ैय्या	सिहं	15/03/1980	27/07/1980	0.0 y.4.0 m.12 d.	ताम्र
द्वितिय ढ़ैय्या	कन्या	04/11/1979	15/03/1980	0.0 y.4.0 m.10 d.	स्वर्ण
द्वितिय ढ़ैय्या	कन्या	27/07/1980	06/10/1982	2.0 y.2.0 m.10 d.	रजत
तृतिय ढ़ैय्या	तुला	06/10/1982	21/12/1984	2.0 y.2.0 m.15 d.	ताम्र
तृतिय ढ़ैय्या	तुला	01/06/1985	17/09/1985	0.0 y.3.0 m.17 d.	स्वर्ण
कंटक शनि	धनु	17/12/1987	21/03/1990	2.0 y.3.0 m.3 d.	ताम्र
कंटक शनि	धनु	20/06/1990	15/12/1990	0.0 y.5.0 m.26 d.	लौह
अष्टम शनि	मेष	17/04/1998	07/06/2000	2.0 y.1.0 m.21 d.	रजत

द्वितिय चक्र

साढ़ेसाती चक्र	गोचर राशि में	आरम्भ का समय	समाप्ति का समय	भ्रमण काल (व—म—दि)	शनि मूर्ति
प्रथम ढ़ैय्या	सिहं	01/11/2006	10/01/2007	0.0 y.2.0 m.10 d.	ताम्र
प्रथम ढ़ैय्या	सिहं	16/07/2007	10/09/2009	2.0 y.1.0 m.26 d.	रजत
द्वितिय ढ़ैय्या	कन्या	10/09/2009	15/11/2011	2.0 y.2.0 m.6 d.	स्वर्ण
द्वितिय ढ़ैय्या	कन्या	16/05/2012	04/08/2012	0.0 y.2.0 m.19 d.	ताम्र
तृतिय ढ़ैय्या	तुला	15/11/2011	16/05/2012	0.0 y.6.0 m.1 d.	रजत
तृतिय ढ़ैय्या	तुला	04/08/2012	02/11/2014	2.0 y.2.0 m.29 d.	रजत
कंटक शनि	धनु	26/01/2017	21/06/2017	0.0 y.4.0 m.24 d.	स्वर्ण
कंटक शनि	धनु	26/10/2017	24/01/2020	2.0 y.2.0 m.29 d.	स्वर्ण
अष्टम शनि	मेष	03/06/2027	20/10/2027	0.0 y.4.0 m.18 d.	स्वर्ण
अष्टम शनि	मेष	23/02/2028	08/08/2029	1.0 y.5.0 m.14 d.	लौह
अष्टम शनि	मेष	05/10/2029	17/04/2030	0.0 y.6.0 m.12 d.	रजत

तृतिय चक्र

साढ़ेसाती चक्र	गोचर राशि में	आरम्भ का समय	समाप्ति का समय	भ्रमण काल (व—म—दि)	शनि मूर्ति
प्रथम ढ़ैय्या	सिहं	27/08/2036	22/10/2038	2.0 y.1.0 m.25 d.	स्वर्ण
प्रथम ढ़ैय्या	सिहं	05/04/2039	13/07/2039	0.0 y.3.0 m.8 d.	स्वर्ण
द्वितिय ढ़ैय्या	कन्या	22/10/2038	05/04/2039	0.0 y.5.0 m.13 d.	ताम्र
द्वितिय ढ़ैय्या	कन्या	13/07/2039	28/01/2041	1.0 y.6.0 m.17 d.	ताम्र
द्वितिय ढ़ैय्या	कन्या	06/02/2041	26/09/2041	0.0 y.7.0 m.19 d.	स्वर्ण
तृतिय ढ़ैय्या	तुला	28/01/2041	06/02/2041	0.0 y.0.0 m.9 d.	लौह
तृतिय ढ़ैय्या	तुला	26/09/2041	11/12/2043	2.0 y.2.0 m.15 d.	रजत
तृतिय ढ़ैय्या	तुला	23/06/2044	30/08/2044	0.0 y.2.0 m.7 d.	स्वर्ण
कंटक शनि	धनु	08/12/2046	06/03/2049	2.0 y.2.0 m.27 d.	ताम्र
कंटक शनि	धनु	10/07/2049	04/12/2049	0.0 y.4.0 m.25 d.	ताम्र
अष्टम शनि	मेष	07/04/2057	27/05/2059	2.0 y.1.0 m.20 d.	स्वर्ण

उपयुक्त रत्न का सुझाव

लग्नाधिपति के लिए रत्न

लग्नाधिपति (लग्न का स्वामी) – बुध

आपका लग्नेश है। चूंकि यह ना तो नीचस्थ है और ना ही त्रिक भाव या मारक भाव में स्थित है। इसलिए आप के लिए रत्न धारण कर सकते हैं।

बुध के लिए रत्न

पन्ना की भौतिक संरचना

पन्ना एक काफी आकर्षक रत्न है। पन्ना काफी कठोर होता है, लेकिन इसे आसानी से काटा जा सकता है। यह गहरा एवं चमकदार हरा रंग में पाया जाता है। यह सामंजस्य, प्रकृति के प्रति प्रेम, खुशहाली एवं आनन्द का सूचक है। हरा जेड, पेरिडोट, हरा तुरमली, सवोराइट, हरा डायोप्साइड इत्यादि पन्ना के ऊपरत्न हैं।

पन्ना धारण करने के फायदे

पन्ना धारण करने से सफलता, सौभाग्य एवं खुशहाली प्राप्त होती है। इससे बुद्धि तीव्र होती है तथा सीखने की योग्यता, दूरदर्शिता, स्मरण शक्ति, विश्वास, अन्तर्दृष्टि एवं सूक्ष्म–दृष्टि का विकास होता है। पन्ना धारण करना स्वास्थ्य– विशेषकर तंत्रिका एवं आंखों के लिए लाभदायक होता है। इससे विषयवस्तु के पूर्ण ज्ञान की प्राप्ति में मदद मिलती है। यह विषैले जीवों एवं ईर्ष्यालू व्यक्तियों के भय से बचाता है। पन्ना जहर का नाश एवं पाचन में मदद करता है। पन्ना धारक को प्रेत साया से दूर रखता है एवं पापों से मुक्ति दिलाता है। पन्ना धारण करने से अन्न, धन, सम्पत्ति एवं वंश में वृद्धि होती है।

रोगों पर पन्ना का प्रभाव

पन्ना धारण करने या पन्ना की भस्म का सेवन करने से निम्नलिखित रोग दूर होते हैं– पथरी, गुदा की गांठ, बहुमूत्र, खून गिरना, बवासीर, पित्त ज्वर, ज्वर, खांसी, गुर्दे का विकार, रक्त–विकार, आधासीसी इत्यादि।

धारण करने के नियम पन्ना

बढ़िया चमक, साफ रंग वाला एवं धब्बारहित पन्ना ही धारण करना चाहिए, इससे भाग्य में बढ़ोत्तरी होगी। पन्ना सोने से बनी अंगूठी या लॉकेट में पहनना चाहिए। पन्ना इस तरह धारण करना चाहिए कि यह निरंतर त्वचा के संपर्क में रहे। इसलिए अंगूठी में धारण करना ज्यादा लाभदायक होगा। पन्ना का वजन 3–7 कैरेट (3–7 रत्ती) होना चाहिए। पुरुषों को दायें हाथ में धारण करना चाहिए। यदि बुध मिथुन या कन्या राशि में हो या अश्लेषा, ज्येष्ठा एवं रेवती नक्षत्र में हो तथा बुध अथवा सूर्य के नवमांश में बुध स्थित हो तो बुधवार के दिन सूर्योदय से लेकर दो घंटे बाद सोने की अंगूठी में पन्ना जड़वाकर धारण करना चाहिए।

बुधवार के दिन सूर्योदय से दो घंटे के बाद नित्य क्रिया से निवृत्त होकर स्नान कर साफ वस्त्र धारण करें। इसके पश्चात पूर्वाभिमुख होकर भगवान गणेश की मूर्ति के सामने पूजा पर बैठें। सबसे पहले घी का दीपक एवं अगरबत्तियां जलायें एवं देवता के आगे फूल, फल एवं मिठाईया चढ़ायें। फिर रत्न जड़ित अंगूठी या लॉकेट को पंचामृत (दूध, दही, घी, चीनी एवं शहद) से धोयें। इसके पश्चात् अंगूठी या लॉकेट को गंगाजल या शुद्ध जल से धोकर देवता के चरणों में अर्पित करें।

अब सबसे पहले बुध देवता के बीज मंत्र का 9 बार जाप करें। फिर ध्यान मंत्र एवं ऋगवेद मंत्र का एक–एक बार जाप करें। तदुपरान्त बुध अष्टोत्तर शतनामावली (बुध ग्रह के 108 नाम) का जाप करें। इसके उपरांत बुध देवता का ध्यान करते हुए दण्डवत प्रणाम करें एवं आस्थापूर्वक अंगूठी को कनिष्ठिका अंगुली में धारण करें या लॉकेट को गले में धारण करें।

पन्ना दान की विधि

यंत्र

चांदी के पत्र पर यंत्र खुदवाकर उसके मध्य में पन्ना जड़वाकर उसकी प्राण–प्रतिष्ठा करें। फिर बुध मंत्र से पन्ने को बुधवार के दिन अभिमंत्रित करें। 64 दिन तक लगातार उपरोक्त मंत्र का जप करते हुए यंत्र की विधिवत् पूजा

9	4	11
10	8	6
5	12	7

करते रहें। तत्पश्चात्, सोना, मूंगा, कांस्य, घी, शक्कर, कपूर, हरा वस्त्र, हाथी दांत, एवं दक्षिणा सहित यंत्र ब्राह्मण को दान कर दें। बुधवार के दिन 10 बजे तक इस दान को करने से श्रेष्ठ फल प्राप्त होता है।

पन्ना के प्रभाव की अवधि

अंगुठी में जड़वाने के दिन से शुरू कर 3 वर्ष तक पन्ना प्रभावशाली रहता है एवं उसके बाद पन्ना का प्रभाव नष्ट हो जाता है। अतः उपरोक्त अवधि के बाद पन्ना बदल देना चाहिए।

नवमेश के लिए रत्न

नवमेश–

चूंकि आपका नवमेश आपकी कुण्डली में किसी मारक भाव का स्वामी है, इसलिए नवमेश के लिए कोई रत्न धारण करना आपके लिए उपयुक्त नहीं होगा।

योग–कारक ग्रह के लिए रत्न

योग–कारक ग्रह –

आपकी जन्मकुण्डली में कोई प्राकृतिक योग––कारक ग्रह नहीं है।

तात्कालिक योग–कारक ग्रह के लिए रत्न

तात्कालिक योग–कारक ग्रह –

ग्रह आपकी जन्मकुण्डली में तात्कालिक योग––कारक ग्रह है।चूंकि तात्कालिक योग–कारक ग्रह ना तो उच्चस्थ है, ना ही नीचस्थ है और ना ही अपने भाव में उपस्थित है। अतः आप ग्रह के लिए रत्न धारण कर सकते हैं।

शनि के लिए रत्न

नीलम की भौतिक संरचना

नीलम एक काफी आकर्षक रत्न है। यह अपने सौन्दर्य, आकर्षक रंग, पारदर्शिता, प्रतिरोधक शक्ति एवं स्थायित्व के लिए जाना जाता है। यह नीले रंग में पाया जाता है। यह सामंजस्य, सहानुभूति, मित्रता, भरोसा एवं वफादारी का सूचक है। तंजेनाइट, नीला स्पाइनल, जम्बुमणि इत्यादि नीलम के ऊपरत्न हैं।

नीलम धारण करने के फायदे

नीलम धारण करने से सफलता, सौभाग्य, खुशहाली प्राप्त होती है। यह जीवन में स्थायीत्व प्रदान करता है। नीलम दूसरों की ईर्ष्या एवं कुदृष्टि से बचाता है। यात्रा के दौरान आने वाले खतरों को दूर करता है। स्वास्थ्य लाभ एवं मानसिक अशांति या मानसिक बीमारियों को दूर करने में नीलम काफी सहायक होता है। नीलम रचनात्मक कार्यों, अन्तर्दृष्टि एवं ध्यान को प्रेरित करता है। नीलम जुकाम एवं पित्तदोष में लाभदायक होता है तथा शनि के प्रकोप से बचाता है। नीलम धारण करने से धारक दीर्घायु होता है एवं सम्मान, यश, ज्ञान एवं धन–सम्पत्ति प्राप्त करता है। नीलम सत्तापक्ष से सम्मान दिलवाता है, दुश्मनों से रक्षा करता है एवं मोह–माया को दूर करता है।

रोगों पर नीलम का प्रभाव

नीलम धारण करने या औषधि के रूप में सेवन करने से निम्नलिखित रोग दूर होते हैं– नेत्र रोग, मुंह से खून आना, दिमाग की गर्मी, हिचकी, पागलपन, खांसी, ज्वर, उपदंश, अजीर्ण, विषमज्वर इत्यादि।

धारण करने के नियम नीलम

बढ़िया चमक, साफ रंग वाला एवं धब्बारहित नीलम ही धारण करना चाहिए, इससे भाग्य में बढ़ोत्तरी होगी। नीलम सोना, चांदी या लोहे से बनी अंगूठी या लॉकेट में पहनना चाहिए। नीलम इस तरह धारण करना चाहिए कि यह निरंतर त्वचाा के संपर्क में रहे। इसलिए अंगूठी में धारण करना ज्यादा लाभदायक होगा। नीलम का वजन 3–7 कैरेट (कम से कम 4 रत्ती) होना चाहिए। पुरुषों को दायें हाथ में धारण करना चाहिए। जब शनि मकर अथवा कुम्भ राशि में हो या तुला राशि में उच्चस्थ हो या शनिवार को उत्तराषाढ़ा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, चित्रा, स्वाति अथवा विशाखा नक्षत्र हो, उस दिन नीलम सोना, चांदी या लोहे में जड़वाकर धारण करें।

शनिवार के दिन सूर्योदय से दो घंटे चालीस मिनट पहले नित्य क्रिया से निवृत्त होकर स्नान कर साफ वस्त्र धारण करें। इसके पश्चात पूर्वाभिमुख होकर भगवान गणेश की मूर्ति के सामने पूजा पर बैठें। सबसे पहले घी का दीपक एवं अगरबत्तियां जलायें एवं देवता के आगे फूल, फल एवं मिठाईया चढ़ायें। फिर रत्न जड़ित अंगूठी या लॉकेट को पंचामृत (दूध, दही, घी, चीनी एवं शहद) से धोयें। इसके पश्चात् अंगूठी या लॉकेट को गंगाजल या शुद्ध जल से धोकर देवता के चरणों में अर्पित करें।

अब सबसे पहले शनि देवता के बीज मंत्र का 23 बार जाप करें। फिर ध्यान मंत्र एवं ऋगवेद मंत्र का एक–एक बार जाप करें। तदुपरान्त शनि अष्टोत्तर शतनामावली (शनि ग्रह के 108 नाम) का जाप करें। इसके उपरांत शनि देवता का ध्यान करते हुए दण्डवत प्रणाम करें एवं आस्थापूर्वक अंगूठी को मध्यमा अंगुली में धारण करें या लॉकेट को गले में धारण करें।

नीलम दान की विधि

यंत्र

12	7	14
13	11	9
8	15	10

रांगा, सीसा या लोहे के पत्र पर शनि यंत्र खुदवाकर उसके मध्य में नीलम जड़वाकर उसकी प्राण प्रतिष्ठा करें। फिर शनि मंत्र से नीलम को शनिवार के दिन अभिमंत्रित करें। मध्याह्न काल में दीप बलि दें। त्तपश्चात् लोहा, उड़द, सरसों का तेल, भैंस, उपानह, काला वस्त्र एवं दक्षिणा सहित यंत्र ब्राह्मण को दान कर दें। इस प्रकार दान करने से शनि से संबंधित अरिष्ट दूर होते हैं एवं मनोकामना पूर्ण होती है।

नीलम के प्रभाव की अवधि

अंगुठी में जड़वाने के दिन से शुरू कर 5 वर्ष तक नीलम प्रभावशाली रहता है एवं उसके बाद नीलम का प्रभाव

नष्ट हो जाता है। अतः 5 वर्ष के बाद नीलम बदल देना चाहिए।

जन्म राशि के आधार पर रूद्राक्ष का सुझाव

आपकी जन्म राशि है। आपके लिए चतुर्मखी रूद्राक्ष उपयुक्त है।

इस रूद्राक्ष के इष्टदेव ब्रह्मा हैं। यह परिवार उत्पन्न कर उसे आगे बढ़ाने की क्षमता प्रदान करता है और आयुष्मान होने का वर देता है।

चारमुखी रूद्राक्ष को बृहस्पतिवार के दिन लाल धागे में पिरोकर सूर्योदय के बाद केले के पौधे से छुआकर ऊँ ब्रह्मा देवाय नमः मंत्र से अभिमंत्रित कर गले में धारण करें।

आपकी जन्म राशि है। आपके लिए षट्मुखी रूद्राक्ष उपयुक्त है।

इस रूद्राक्ष के इष्टदेव कार्तिकेय हैं। यह सामर्थ्य तथा शासन संबंधी कलाएं प्रदान करता है और विज्ञान, तकनीकी शिक्षा एवं शल्य चिकित्सा आदि क्षेत्रों में सफलता निश्चित करता है।

छःमुखी रूद्राक्ष के तीन मनकों को लाल धागे में पिरोकर सोमवार को शिवलिंग से छुआकर ऊँ नमः शिवाय कार्तिकेय नमः मंत्र का जप करते हुए गले में धारण करें।

रूद्राक्ष धारण करने का उपयुक्त समय

सामान्यतया सोमवार को रूद्राक्ष धारण करना शुभ माना गया है, लेकिन शिवरात्रि को धारण करना उत्तम होता है। इसके अतिरिक्त, रूद्राक्ष धारण करने के लिए निम्नलिखित शुभ समय हैं–

शुभ महीना/माह

आश्विन एवं कार्तिक माह–– उत्तम
मार्गशीर्ष एवं फाल्गुन माह–– मध्यम
आषाढ़ एवं श्रावण माह–– अधम
भाद्रपद, पौष एवं अधिक मास (मलमास)–– अशुभ।

शुभ दिन (वार)

जिस दिन ग्रह एवं नक्षत्र धारक के नाम––राशि के अनुकूल हों, उस दिन रूद्राक्ष धारण करना चाहिए।

रविवार, सोमवार, बुधवार, बृहस्पतिवार एवं शुक्रवार को रूद्राक्ष धारण करना उत्तम होता है, जबकि मंगलवार एवं शनिवार को अशुभ माना जाता है।

शुभ पक्ष

भौतिक सुख के लिए शुक्ल पक्ष में रूद्राक्ष धारण करना चाहिए, जबकि आध्यात्मिक सुख के लिए कृष्ण पक्ष में रूद्राक्ष धारण करना चाहिए।

शुभ तिथि

द्वितीया, पंचमी, दशमी, त्रयोदशी एवं पूर्णामसी को रूद्राक्ष धारण करना उत्तम होता है।

शुभ लग्न

रूद्राक्ष धारण करने के लिए मेष, कक्र, तुला, वृश्चिक, मकर एवं कुम्भ लग्न शुभ होता है।

शुभ नक्षत्र

स्वाति, विशाखा, राहिणी, ज्येष्ठा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, हस्त, अश्विनी, धनिष्ठा, शतभिषा एवं श्रवण नक्षत्र में रूद्राक्ष धारण करने से उत्तम फल की प्राप्ति होती है। इसके अतिरिक्त, किसी भी ग्रहण, तुला, मकर संक्रांति, अयन, शिव चौदस, बसंत पंचमी, एवं अमावस्या को भी रूद्राक्ष धारण कर सकते हैं।

रूद्राक्ष धारण करने की शास्त्रोक्त विधि

प्रातः काल शौच क्रिया से निवृत्त होकर मुख शद्धि करें। अशुद्ध मुंह से जप करने से उचित फल प्राप्त नहीं हो सकता है।

मुखशुद्धि विहीनस्य न मंत्रः फलदायकः।
दंतजिव्हा विशुद्धिं च ततः कुर्यात् प्रयत्नतः ।।

इसके बाद स्नान के लिए यथा संभव शुद्ध जल लें। स्नान के बाद अपने चित्त को शांत कर पूजा पर बैठें। पूजा प्रारम्भ करने से पहले भूमि शुद्धि अवश्य करें। भूमि शुद्धि मंत्र–

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वाः।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यंतरः शुचिः ।।

पूजा पर बैठने के लिए कुश के आसन का प्रयोग करें एवं पूर्व दिशा की ओर मुख करके बैठें। पूजा में शुद्ध जल से भरा पात्र रखें। पात्र पर नारियल रखकर प्राण––प्रतिष्ठा करें। फिर अपने कुलदेवता सहित सारे देवी––देवताओं का आह्वान कर रूद्राक्ष की पूजा करें।

सबसे पहले गोबर, गोमूत्र, दूध, दही, घी आदि पंचगव्य से रूद्राक्ष को स्नान करायें, फिर गंगाजल या शुद्ध जल से पुनः स्नान करायें। अब कांसे की थाली में पीपल के नौ पत्ते लेकर आठ पत्तों से अष्टदल कमल का आकार बनायें और एक पत्ता बीच में रखें। बीच वाले पत्ते पर रूद्राक्ष रखें। फिर ऊँ नमः शिवाय मंत्र का तीन बार जाप करें। अब स्वयं पर एवं पूजा के उपयोग की सभी वस्तुओं पर जल छिड़कते हुए निम्न मंत्र का तीन बार जप करें–

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वाः ।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यंतरः शुचिः ।।
ॐ गुरुभ्यो नमः। ॐ गणेशाय नमः। ॐ कुलदेवताभ्यो नमः। ॐ इष्टदेवताभ्यो नमः। ॐ मातृपितृचरणकमलेभ्यो नमः।

अब अपने दायें हाथ में आचमनी से गंगाजल लेकर प्रत्येक निम्न मंत्र का जाप करते हुए पीयें–

ॐ केशवाय नमः। ॐ नारायणाय नमः। ॐ माधवाय नमः।

अब निम्न मंत्र का जप करते हुए हाथ धोकर जल जमीन पर छोड़ दें–

ॐ गोविन्दाय नमः।

अब दायें हाथ में गंगाजल लेकर प्राणायाम के विनियोग का निम्न मंत्र पढ़कर जल जमीन पर छोड़ दें–

ॐ प्रणवस्य परब्रह्म ऋषिः परमात्मा देवता देवी गायत्री छंदः प्राणायामे विनियोगः।

फिर निम्न मंत्र से तीन प्राणायाम करें –

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम।
ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ आपो ज्योतिः रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्।

अब रूद्राक्ष पर कुश या आचमनी से जल छिड़कते हुए निम्न मंत्र का जाप करें–

ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय नमो नमः ।
भवेभवेनाति भवेभावस्वमान भवोद्भवाय नमः ।।

फिर फूल में चंदन एवं सुगंधित तेल लगाकर उससे रूद्राक्ष को स्पर्श करते हुए निम्न मंत्र का जाप करें–

ॐ वामदेवाय नमः, ॐ ज्येष्ठाय नमः, ॐ श्रेष्ठाय नमः, ॐ रुद्राय नमः, ॐ कलविकरणाय नमः, ॐ बलविकरणाय नमः, ॐ बलाय नमः, ॐ बलप्रमथनाय नमः, ॐ सर्वभूतदमनाय नमः, ॐ मनोन्मनाय नमः।

फिर रूद्राक्ष को धूप दिखाते हुए निम्न मंत्र का जप करें –

ॐ अघोरेभ्यो अघघोरेभ्यो: घोर घोरतरेभ्यः।
सर्वेभ्यः सर्व शर्वेभ्यो नमस्तेस्तु रुद्ररूपेभ्यः ।।

फिर रूद्र गायत्री मंत्र जपते हुए फूल से चंदन एवं सुगंधित तेल का लेप करें –

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोद्यात्।

चंदन का लेप करने पश्चात रूद्राक्ष के दाने पर ध्यान लगाकर ईशान मंत्र का जाप करें –

ॐ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां।
ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिः ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदा शिवोम् ।।

चतुर्मखी रूद्राक्ष धारण करने के विशेष नियम

विनियोग –

दायें हाथ में आचमनी में गंगाजल लेकर निम्न विनियोग मंत्र का जाप करें एवं जल को जमीन पर छोड़ दें।

ॐ अस्य श्री ब्रह्म मंत्रस्य भार्गव ऋषिः, अनुष्टुप छन्दः, ब्रह्मा देवता, वां बीजं, क्रां शक्तिः, सिद्धयर्थे रुद्राक्ष धारणार्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास –

निम्नलिखित मंत्र का जाप करते हुए दायें हाथ से अपने शरीर के अंगों क्रमशः शिरसि, मुख, हृदय, गुह्य एवं पैरों को स्पर्श करें।

ॐ भार्गव ऋषिः नमः शिरसि, अनुष्टुप छन्दसे नमः मुखे, ब्रह्मदेवतायै नमः हृदि, वां बीजाय नमः गुह्ये, क्रां शक्तये नमः पादयो, विनियोगाय नमः सर्वांगे।

करन्यास –

निम्नलिखित मंत्र का जाप करते हुए अपनी हथेली के क्रमश अंगूठा, तर्जनी, मध्यमा, अनामिका, कनिष्ठिका अंगुली एवं करतल––करपृष्ठ का स्पर्श करें।

ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः, ॐ वां तर्जनीभ्यां नमः, ॐ क्रां मध्यमाभ्यां नमः, ॐ तां अनामिकाभ्यां नमः, ॐ हां कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ॐ ईं करतल करपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्ययास –

निम्नलिखित मंत्र को पढ़ते हुए क्रमशः हृदय, सिर दोनों भुजाओं एवं आंखों को स्पर्श करें एवं अंतिम मंत्र से दायें हाथ को सिर के उपर से पीछे की तरफ घुमाते हुए सामने लायें एवं तर्जनी व मध्यमा से बायें हाथ पर ताली बजायें।

ॐ ॐ हृदयाय नमः, ॐ वां शिरसे स्वाहा, ॐ क्रां शिखायै वषट्, ॐ हां कवचाय हुम्। ॐ तां नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ ईं अस्त्राय फट्।

ध्यान मंत्र –

प्रणम्य शिरसा शाश्वदष्टनेत्रं चतुर्मुखम्।
गायत्रीसहितं देवं नमामि विधिमीश्वरम्।।

नीचे दिए गए किसी एक मंत्र के ग्यारह माला का जाप करें। माला जप करने के बाद किसी तांबे के बर्तन में रूद्राक्ष रखें। प्राणायाम करने के बाद जल से भरा पात्र बायें हाथ में लेकर दायां हाथ पात्र के नीचे छुआकर हटा लें। फिर रूद्राक्ष पर जल छींटें एवं रूद्राक्ष धारण करें।

१–ॐ वां क्रां तां हां इं (मूल मंत्र)
२–ॐ ह्रीं हूं नमः
३–ॐ ह्रीं
४–ॐ ह्रीं नमः (पंचाक्षरी मंत्र)
५–ॐ नमः शिवाय
६–ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगंधिंपुष्टिवर्धनम्, उर्वारुकमिवबंधनान्मृत्योर्मृक्षीय माऽमृतात्।

षट्मुखी रूद्राक्ष धारण करने के विशेष नियम

विनियोग –

दायें हाथ में आचमनी में गंगाजल लेकर निम्न विनियोग मंत्र का जाप करें एवं जल को जमीन पर छोड़ दें।

ॐ अस्य मंत्रस्य दक्षिणामूर्ति ऋषिः, पंक्ति छन्दः, श्री षष्ठमुखौ देवता, ऐं बीजं, सौं शक्तिः, क्लीं कीलकं, रुद्राक्ष धारणार्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास –

निम्नलिखित मंत्र का जाप करते हुए दायें हाथ से अपने शरीर के अंगों क्रमशः शिरसि, मुख, हृदय, गुह्य एवं पैरों को स्पर्श करें।

ॐ दक्षिणामूर्ति ऋषये नमः शिरसि, पंक्ति छन्दसे नमो मुखे, कार्तिकेय देवतायै नमो हृदि, ऐं बीजाय नमो गुह्ये, सौं शक्तये नमः पादयो, क्लीं कीलकायै नमः नाभौ, विनियोगाय नमः सर्वांगे।

करन्यास –

निम्नलिखित मंत्र का जाप करते हुए अपनी हथेली के क्रमश अंगूठा, तर्जनी, मध्यमा, अनामिका, कनिष्ठिका अंगुली एवं करतल––करपृष्ठ का स्पर्श करें।

ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः, ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः, ॐ श्रीं मध्यमाभ्यां नमः, ॐ क्लीं अनामिकाभ्यां नमः, ॐ सौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ॐ ऐं करतल करपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्ययास –

निम्नलिखित मंत्र को पढ़ते हुए क्रमशः हृदय, सिर दोनों भुजाओं एवं आंखों को स्पर्श करें एवं अंतिम मंत्र से दायें हाथ को सिर के उपर से पीछे की तरफ घुमाते हुए सामने लायें एवं तर्जनी व मध्यमा से बायें हाथ पर ताली बजायें।

ॐ ॐ हृदयाय नमः, ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा, ॐ श्रीं शिखायै वषट्, ॐ क्लीं कवचाय हुम्। ॐ सौं नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ ऐं अस्त्राय फट्।

ध्यान मंत्र –

क्रौञ्चपर्वतविदारणलोलो दानवेन्द्रवनिताकृतलण्डः।
चूतपल्लवशिरोमणिचोदी भोष्षडानन जगत्परिपाहि।।

नीचे दिए गए किसी एक मंत्र के ग्यारह माला का जाप करें। माला जप करने के बाद किसी तांबे के बर्तन में रूद्राक्ष रखें। प्राणायाम करने के बाद जल से भरा पात्र बायें हाथ में लेकर दायां हाथ पात्र के नीचे छुआकर हटा लें। फिर रूद्राक्ष पर जल छींटें एवं रूद्राक्ष धारण करें।

१–ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सौं ऐं (मूल मंत्र)
२–ॐ ह्रीं नमः
३–ॐ हूम्

४-ॐ हूं नमः

५-ॐ ह्रीं हुं नमः (पंचाक्षरी मंत्र)

६-ॐ नमः शिवाय

७-ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगंधिंपुष्टिवर्धनम्, उर्वारुकमिवबंधनान्मृत्योर्मृक्षीय माऽमृतात्।

रूद्राक्ष धारण करने के साधारण नियम

किसी भी सोमवार या शुभ दिन को सबसे पहले रूद्राक्ष को गंगाजल से स्नान करायें। फिर रूद्राक्ष पर चंदन का लेप लगायें। तत्पश्चात, रूद्राक्ष पर धूप, दीप आदि दिखाकर सफेद फूल अर्पित करें। उसके बाद शिवलिंग से रूद्राक्ष को स्पर्श कराते हुए कम से कम ग्यारह बार ऊँ नमः शिवाय मंत्र का जाप करें। भगवान शिव का ध्यान करते हुए रूद्राक्ष धारण करें या पूजा स्थल पर रख सकते हैं।

रूद्राक्ष धारण करने के पश्चात निम्न नियमों का पालन करना चाहिए –

मद्यं मांसं च लासुनं पलांडुं शिग्रुं एव च ।
श्लेषं अंतकं विड्वाराहं भक्षयं वर्जये नरः ।।

. रूद्राक्ष धारण करने के पश्चात् मांस, मदिरा, कोई नशीला पदार्थ, लहसुन, प्याज या अन्य कोई तामसिक पदार्थ का सेवन नहीं करना चाहिए। हमेशा सात्विक आहार लें।
. रूद्राक्ष को दिखावे की चीज ना बनायें।
. रात में रूद्राक्ष उतार कर पूजा के स्थान पर रख दें एवं सबुह सारे क्रिया––कर्म से निवृत्त होकर ऊँ नमः शिवाय का पांच बार जप कर धारण करें। जब भी माला उतारें तो उतार कर पूजा स्थल पर ही रखें।
. अभिमान ना करें।
. परोपकार करें।
. रूद्राक्ष का अपमान या दुरूपयोग ना करें।
. क्रोध ना करें।
. अपना आचरण एवं विचार पवित्र रखें।
. किसी को अपशब्द ना कहें।
. ब्रह्मचर्य का पालन करें।
. रूद्राक्ष का गंगाजल से अभिषेक करें।
. नहाते समय साबुन आदि ना लगायें।
. रूद्राक्ष धारण करते समय या पूजा करते समय स्थान शुद्धि अवश्य करें।
. रूद्राक्ष की पवित्रता बनाये रखें।
. हमेशा नित्यकर्म से निवृत होकर एवं पवित्र होकर ही रूद्राक्ष धारण करें।
. किसी व्यक्ति या धर्म आदि की निन्दा ना करें।
. गंदगी से दूर रहें।

. रूद्राक्ष के प्रति निष्ठा रखें।

. रूद्राक्ष माला को कभी भी खूंटी पर ना लटकायें।

. रूद्राक्ष माला रजस्वला स्त्री से दूर रखें।

. शवयात्रा में माला पहनकर ना जायें।

रूद्राक्ष की सत्यता प्रमाणित करने के लिए जांच

जांच संख्या 1 –

पानी की उपरी सतह पर रूद्राक्ष रखने से यदि यह डूब जाता है, तो रूद्राक्ष असली है, लेकिन यदि यह तैरता रहता है, तो रूद्राक्ष नकली है।

जांच संख्या 2 –

असली रूद्राक्ष बहुत उष्म होता है और यह विद्युत चुम्बकीय गुण के कारण तांबे को अपनी ओर आकर्षित करता है। यदि रूद्राक्ष के मोतियों को धागे में लटकाकर तांबे के चादर के छोटे से टुकड़े के उपर लटका दिया जाय तो ये मोती लगातार गोल––गोल घूमने लगेगें। यदि इनके घूमने की दिशा घड़ी की सूईयों की घूमने की दिशा के समान है, तो ये असली हैं।

जांच संख्या 3 –

एक कप दूध के अन्दर रूद्राक्ष के मोती को डाल दें और इसे पूरे दिन तक रखें। यदि दूध खराब नहीं होता है, तो मोती असली है और यदि दूध खराब हो जाता है तो यह झूठा है।

सर्व ग्रह दोष और उपाय

सूर्य से संबंधित दोष और उनके उपाय

सपात सूर्य दोष

यदि आपकी जन्म कुण्डली में सूर्य राहु या केतु के साथ स्थित है, तो आपकी कुण्डली में सपात सूर्य दोष लागू हो रहा है। इस स्थिति के कारण आपकी निर्णय क्षमता प्रभावित हो सकती है और आकस्मिक दुर्घटना का भी योग बन सकता है।

आपकी कुण्डली में सपात सूर्य दोष लागू हो रहा है।

शांति के उपाय –

आपको त्र्यम्बक मंत्र का संपुट लगाकर रूद्रसूक्त का पाठ करना चाहिए। हर साल अपने जन्मदिवस के दिन प्रातः घी में दूब को डूबोकर त्र्यबकम मंत्र से 28 या 108 आहूतियां दें। उस दिन व्रत भी रखें।

सूर्य ग्रह के साधारण उपाय

प्रातः उठने के बाद मुँह धोकर गीले मुँह ही पूर्व दिशा की ओर मुँह करके गायत्री मंत्र का 10 या 28 बार जप करें। स्नान करने के बाद गणेश भगवान का द्वादशाक्षर स्तोत्र और सूर्य कवच का पाठ करके सूर्य को जल का अर्घ्य दें। सूर्य की ओर मुँह करके सूर्य का अष्टाक्षर मंत्र का 10 या 28 बार जप करें। रात को सोने से पहले गायत्री मंत्र का 10 या 28 बार जप करें।

1– सूर्य एवं चंद्रमा की ओर मुँह करके या बहते हुए जल, नदी या तालाब में मल–मूत्र का त्याग नहीं करना चाहिए।

2– माता–पिता का अनादर नहीं करना चाहिए।

3– मानसिक या शारीरिक हिंसा, राग–द्वेष से दूर रहें।

4– अकारण ही क्रोध करने से बचें।

चन्द्रमा से संबंधित दोष और उनके उपाय

यदि आपका जन्म आपके अपने भाई–बहनों अथवा अपने माता–पिता के नक्षत्र में हुआ है, तो एक नक्षत्र जन्मदोष लागू होता है। इस दोष की वजह से आपके पूरे परिवार की सुख–शांति में बाधा उत्पन्न हो सकती है। आपके स्वास्थ्य पर भी बुरा असर पड़ सकता है।

शांति के उपाय –

अपने घर में किसी साफ–सुथरे स्थान पर पूजा बेदी का निर्माण करें और उस पूजा स्थान से ईशान कोण में एक कलश स्थापना करें। उस कलश को नये वस्त्र से ढक दें। देवताओं की पूजा के पश्चात सारे नक्षत्रों की पूजा करें। उसके बाद कलश पर जन्म नक्षत्र के देवता की विशेष रूप से पूजा करें। जन्म नक्षत्र के मंत्र से 108 आहुतियां देकर हवन करें। अपनी सामर्थ्य अनुसार अन्न, वस्त्र आदि का दान करें। जब चंद्रमा बड़े बिम्ब वाला हो, शुभ लग्न हो तथा रिक्ता तिथि एवं भद्रा करण ना हो, तो चंद्रमा के अनुकूल गोचर में यह उपाय करें।

लग्नस्थ चन्द्र दोष

यदि आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा लग्न में स्थित है, तो आपकी विचारधारा इस तरह से दृढ़ हो सकती है कि आप समयानुसार अपने को बदल नहीं सकते हैं, जिसकी वजह से आप हठी और काफी हद तक अव्यवहारिक दृष्टिकोण वाले बन सकते हैं। आपकी मानसिक स्थिति के कारण आपके कार्य करने की क्षमता प्रभावित हो सकती है।

आपकी कुण्डली में लग्नस्थ चन्द्र दोष लागू हो रहा है।

शांति के उपाय –

आपको चंद्रमा के सरल उपाय करने के साथ–साथ रूद्रसूक्त का भी पाठ करना चाहिए।

क्षीण चन्द्र दोष

यदि आपका जन्म कृष्णपष की अष्टमी से शुक्ल पक्ष की पंचमी के बीच में हुआ है, तो आपकी कुण्डली में क्षीण चंद्र दोष लागू होता है। आप तुनकमिजाज, काम में लापरवाही बरतने वाले एवं बिना किसी लक्ष्य के काम करने वाले हो सकते हैं। कभी–कभी अवसाद की स्थिति भी उत्पन्न हो सकती है।

आपकी कुण्डली में क्षीण चन्द्र दोष लागू हो रहा है।

शांति के उपाय –

इस दोष को दूर करने के लिए चंद्रमा शांति के सरल उपाय के साथ–साथ भगवान शंकर की पूजा करें। चंद्रमा जितना अधिक क्षीण हो, पूजा की मात्रा उतनी अधिक होनी चाहिए।

केमद्रुम योग दोष

यदि आपकी कुण्डली में चंद्रमा के आगे एवं पीछे के भावों में कोई ग्रह नहीं है, तो आपकी कुण्डली में केमद्रुम योग दोष लागू होता है। आपको जीवन पर्यन्त धन की कमी लगी रह सकती है, जिसके कारण पारिवारिक सुख और मानसिक शांति में कमी हो सकती है। यदि कुण्डली में चंद्रमा के साथ कोई ग्रह स्थित है या किसी ग्रह की दृष्टि पड़ रही है या चंद्रमा या लग्न से केन्द्र में कोई ग्रह स्थित है, तो केमद्रुम योग का प्रभाव कम हो जाता है।

आपकी कुण्डली में केमद्रुम योग दोष लागू हो रहा है।

शांति के उपाय –

इस दोष को दूर करने के लिए चंद्रमा शांति के सरल उपाय के साथ–साथ ऋषि वशिष्ठ के द्वारा लिखे हुए भगवान शंकर के दारिद्र्यदहन स्तोत्र का पाठ करें।

चन्द्रमा ग्रह के साधारण उपाय

सबसे पहले सूर्य दर्शन कर गायत्री मंत्र जपें। फिर नहा–धोकर गणेश, शिवजी और पार्वती का मंत्र जाप करें। फिर ऊँ नमः शिवाय मंत्र का 108 बार जप करें। चंद्रमा कवच का पाठ करें और सूर्य को अर्घ्य दें। सोमवार के दिन मांस–मदिरा का सेवन ना करें।

1– सूर्य एवं चंद्रमा की ओर मुँह करके या बहते हुए जल, नदी या तालाब में मल–मूत्र का त्याग नहीं करना चाहिए।
2– माता–पिता का अनादर नहीं करना चाहिए।
3– मानसिक या शारीरिक हिंसा, राग–द्वेष से बचना चाहिए।
4– अकारण ही क्रोध करने से बचना चाहिए।

मंगल से संबंधित दोष और उनके उपाय

आपकी कुण्डली में मंगल मेष राशि में बैठा हुआ है। आप स्वभाव से उग्र और तानाशाह हो सकते हैं। विपरीत

लिंग वाले आपके प्रति खास आकर्षण महसूस कर सकते हैं।

आपकी कुण्डली में मंगल आठवें भाव में स्थित है। आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य आपके लिए चिन्ता का विषय हो सकता है। आपका उनसे किसी कारणवश अलगाव भी हो सकता है।

यदि आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता है, तो आप मंगल कष्ट निवारक मंत्र का प्रतिदिन 8 बार जप करें।

यदि अपने जीवनसाथी के साथ संबंधों में सामंजस्य की कमी हो, तो आप रामचरितमानस के सुन्दर काण्ड का पाठ करें।

यदि आपके घर में अशांति हो तो ऊँ हां हां सः खं खः। मंत्र का 108 बार जाप करें। यदि यह पाठ घर के मुखिया या उनकी पत्नी के द्वारा किया जाता है, तो लाभ मिलने की संभावना अधिक हो सकती है।

यदि आपमें उत्साह की कमी या ज्यादा क्रोध अथवा अपने विचारों को व्यक्त ना कर पाने की कमी हो, तो आपको प्रतिदिन 28 बार मंगल गायत्री का जप करना चाहिए।

यदि मंगल दोष के कारण आपको बार––बार या साधारण चोट इत्यादि लगती है, तो आपको मंगल कवच का पाठ करना चाहिए।

यदि मंगल के कुप्रभाव आपकी संतान पर आ रहे हों तथा संतान का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता हो अथवा आपकी बात ना मानते हों, तो आपको मंगल कष्ट निवारक मंत्र का नियमित रूप से पाठ करना चाहिए।

यदि आप धन हानि, कर्ज में बढ़ोत्तरी आदि से परेशान हैं, तो आपको नियमित रूप से एक साल तक मंगलवार का व्रत करना चाहिए, जिससे मंगल के राशि जनित या भाव जनित दोष दूर हो सकते हैं।

मंगल ग्रह के साधारण उपाय

आपको रूद्रसूक्त का पाठ नियमित रूप से करना चाहिए। भैरव और हनुमान जी की नियमित पूजा करें। हनुमान चालीसा का नियमित पाठ करें। यदि रूद्रसूक्त का जप मुश्किल है, तो आगे लिखे हुए मंत्र का प्रतिदिन 28 बार जप करें।

अघोरेभ्यों अघघोरेभ्यो घोर घोर तरेभ्यः।
सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्तेतु रूद्ररूपेभ्यः।

मित्रों और संबंधियों से प्रेम पूर्वक व्यवहार करने से मंगल का अशुभ प्रभाव कम होता है।

बुध से संबंधित दोष और उनके उपाय

आपकी कुण्डली में बुध वृश्चिक राशि में स्थित है। आप चालाक एवं झगड़ालू स्वभाव वाले हो सकते हैं। आपके

मित्र स्वार्थी हो सकते हैं, जिसकी वजह से आपको आर्थिक हानि हो सकती है।

आपकी कुण्डली में बुध तीसरे, छठे या बारहवें भाव में स्थित है। आपमें संकोच और निराशा की भावना कभी–कभी बहुत ही ज्यादा हो सकती है।

यदि आपकी वाणी में दोष है, जैसे हकलाना, तुतलाना इत्यादि अथवा बुद्धि कमजोर है या अपने जुबान पर नियंत्रण नहीं है, तो आप कार्तिकेय मंत्र का जप पीपल के पेड़ के नीचे बैठकर दस बार करें। यह जप पुष्य नक्षत्र से शुरू करके अगले 27 दिनों तक करें।

यदि आप अपने विचार प्रकट करने में असमर्थ है या जनसमुदाय इत्यादि के सामने आप नहीं बोल पा रहे हैं, तो आप बुध कवच का नियमित पाठ करें।

यदि आपको तनाव से नींद नहीं आती है या नींद आने पर बुरे सपने दिखाई देते हैं, तो आपको बुध गायत्री मंत्र का दिन में 3 बार जप करना चाहिए।

यदि बुध के दोष के कारण धन नहीं ठहरता हो या आमदनी कम हो, तो आपको श्रीसूक्त का पाठ करना चाहिए।

यदि बुध के दोष के कारण धन नहीं ठहरता हो या आमदनी कम हो, तो आपको श्रीसूक्त का पाठ करना चाहिए।

यदि आपकी त्वचा में कोई विकार है, जैसे छोटे फुंसियों––फोड़े इत्यादि, तो इन विकारों को दूर करने के लिए शीतला माता के मंत्र का 10 हजार बार जप करें। जप समाप्त होने पर इसी मंत्र से 1000 आहूति दें।

यदि बुध के किसी दोष के कारण आपको व्यापार में सफलता नहीं मिल पाती है, तो बुध गायत्री का 10 हजार जप करें। जप के पश्चात अपने सामर्थ्य के अनुसार मूंग, घी, चाँदी या हाथी दाँत से बनी वस्तु का दान करें।

यदि बुध के किसी दोष के कारण आप किसी असाध्य रोग से पीड़ित है, तो आपको विष्णु सहस्त्र नाम का जप करना चाहिए।

बुध ग्रह के साधारण उपाय

आपको प्रतिदिन या हर बुधवार के दिन विष्णु सहस्त्र नाम स्त्रोत का पाठ करना चाहिए। प्रतिदिन सुबह ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय नामक द्वादशाक्षरी विष्णु मंत्र का 28 या 108 बार जप करें।

1– बिना अपशब्दों का प्रयोग किए बोलें।

2– अपने से छोटों के साथ प्रेमपूर्वक व्यवहार करें।

3– किसी कार्य के लिए गलत तरीका ना अपनायें।

बृहस्पति से संबंधित दोष और उनके उपाय

आपकी जन्मकुण्डली में बृहस्पति मकर राशि में स्थित है। आपमें धैर्य एवं बुद्धि की कमी हो सकती है। पर्याप्त मेहनत के बावजूद आपको उचित सफलता नहीं मिल सकती है। भाई–बन्धुओं से प्रेम एवं सहयोग की कमी हो सकती है। विवाहित जीवन में कटुता आ सकती है। आपमें अपना भला बुरा समझने की समझ कम हो सकती है।

यदि बृहस्पति की कमजोरी के कारण घर में पैसे की बरकत ना हो, तो गुरु गायत्री मंत्र का दिन में 10 बार पाठ करें।

व्यापार में वृद्धि के लिए आठ गुरु मंत्रों से गंगा जल को अभिमंत्रित करके अपने काम–धंधे की जगह पर छिड़कें।

यदि अपने जीवनसाथी के साथ आपके मतभेद हैं, तो गुरु गायत्री मंत्र का रोज सुबह 10 बार पाठ करें।

यदि आपके बीच कलह की स्थिति है, तो शिव एवं पार्वती की पूजा करें एवं अर्धनारीनटेश्वर स्त्रोत का पाठ सुबह–शाम करें।

यदि लड़की के विवाह में रूकावट आ रही हो या रिश्ता बनते–बनते रह जा रहा हो, तो तीन सौ पार्थिव लिंगों पर पूजा करने से इस समस्या का निवारण हो सकता है। यदि लड़के के विवाह में ऐसी स्थिति बन रही हो, तो दुर्गा सप्तशती का 17 बार पाठ करें।

बृहस्पति ग्रह के साधारण उपाय

बृहस्पति जनित दोषों को दूर करने के लिए आपको स्कन्द पुराण में वर्णित बृहस्पति स्त्रोत का पाठ करना चाहिए और पूर्णिमा इत्यादि के दिन सत्यनारायण भगवान की कथा सुननी चाहिए। बृहस्पति देव को हल्दी से रंगे चावल, पीले फूल, पीले चंदन समर्पित करना चाहिए। बृहस्पतिवार के दिन साबुत हल्दी, चने की दाल, नमक आदि का दान करना चाहिए।

1– शिक्षकों, गरुओं, वृद्धों, साधु–संतों और उच्च शिक्षित लोगों से प्रेमपूर्वक व्यवहार करें।

2– कोर्ट–कचहरी में झूठी गवाही ना दें।

शुक्र से संबंधित दोष और उनके उपाय

आपकी कुण्डली में शुक्र मकर राशि में स्थित है। विपरीत लिंग के अपने से बड़े व्यक्ति के साथ आपके नजदीकी संबंध हो सकते हैं, जिससे आपको हानि भी हो सकती है। आप हृदय रोग से पीड़ित हो सकती हैं।

संतान सुख के लिए कन्याओं को किसी भी प्रकार से ठेस नहीं पहुंचाना चाहिए। नवरात्र के दौरान कन्याओं का पूजन कर अपने सामर्थ्य के अनुसार भोजन एवं वस्त्र उपहार देना चाहिए। साल में किसी अवसर पर किसी व्यक्ति को शिव––पार्वती या विष्णु––लक्ष्मी का फोटो भेंट करना चाहिए या किसी ब्राह्मण को बिछाने योग्य चादर, तकिया या वस्त्रों का जोड़ा दान करना चाहिए। सौन्दर्य लहरी स्त्रोत या देवी सूक्त और श्रीकवच का रोजाना पाठ भी काफी लाभदायक होगा।

यदि शुक्र के दोष के कारण काम––वासना अनियंत्रित हो या अप्राकृतिक वासना के प्रति रूझान हो, तो आपको अथर्ववेद में कहे गये शिव संकल्प का रोजाना सोते समय एक बार पाठ करना चाहिए। आप शुक्र गायत्री का भी रोजाना 10 बार पाठ कर सकते हैं।

यदि घर में दरिद्रता हो या लक्ष्मी का वास ना हो, तो सुबह में अर्गला एवं कीलक स्त्रोत का पाठ करना चाहिए।

यदि शुक्र दोष के कारण शरीर में आलस्य हो या अधिक सोने के कारण कार्य अधूरे रह जा रहे हो, तो सुबह एवं रात में सोते समय रात्रिसूक्त का पाठ करना चाहिए।

यदि शुक्र दोष के कारण विवाह में बाधा उत्पन्न होती है, या संबंध तय नहीं हो पा रहा है, तो शुक्र स्तवराज का पाठ करना चाहिए।

शुक्र के दोष के कारण यदि बार––बार चोट लगती है, या शरीर में विकार उत्पन्न होता है, तो शुक्र कवच का पाठ करना चाहिए।

शुक्र ग्रह के साधारण उपाय

रोजाना सुबह स्नान करने के पश्चात तुलसी के पौधे को सींचकर आगे लिखे मंत्र का एक बार पाठ करें। फिर वहीं पर खड़े होकर तुलसी कवच का पाठ करें।

1– अपने जीवनसाथी से ही संबंध रखें।

2– कन्याओं और पराई स्त्रियों के प्रति सम्मान का भाव रखें।

शनि से संबंधित दोष और उनके उपाय

आपकी जन्मकुण्डली में शनि मिथुन राशि में स्थित है। आप प्रायः कर्जदारी की वजह से परेशान होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में शनि दसवें भाव में स्थित है। वरिष्ठ अधिकारियों के साथ आपके मतभेद हो सकते हैं। आपके सिर या मस्तिष्क में किसी तरह के विकार होने की संभावना है। अपने ससुराल वालों के कारण कष्ट प्राप्त हो सकता है।

शनि के राशिगत अथवा भावगत दोष के निवारण के लिए शनि गायत्री मंत्र का जप रोजाना आसन पर खड़े होकर एक निश्चित संख्या में करें।

यदि शनि की दशा अथवा गोचर के दौरान किसी तरह के रोग या दुर्घटना की वजह से जीवन पर संकट आए, तो मार्कण्डेय जी द्वारा रचित भगवान शंकर के महामृत्युंजय मंत्र का जप करना चाहिए।

यदि आपकी संतान आपके बताये रास्ते पर ना चलकर आपकी अवहेलना करती है, तो आपको शनि गायत्री का नियमित 28 या 108 बार जप करना चाहिए। शाम के समय हनुमान जी का ध्यान करते हुए हनुमान जी के भुजंग स्तोत्र या शिवताण्डव स्तोत्र का पाठ करने से आपको लाभ होगा।

शनि के साढ़ेसाती, गोचर काल अथवा शनि की दशा या अन्तर्दशा के अनुसार, यदि कुफल प्राप्त हो रहा हो, तो शनि स्तवराज मंत्र का जप करना चाहिए।

यदि शनि की दशा या गोचर के दौरान आपको बार––बार चोट लगती हो अथवा कोई रोग आपको परेशान कर रहा हो, तो आपको शनैश्चराष्टक स्तोत्र का पाठ करना चाहिए।

शनि ग्रह के साधारण उपाय

सोमवार, बुधवार एवं शनिवार को कडुवे तेल का मालिश करके स्नान करें और साफ–सफाई पर विशेष ध्यान दें। साफ–सुथरा रहने से शनि के सामान्य दोष स्वतः ही नष्ट हो जाते हैं। स्नान के पश्चात रोजाना भगवान शंकर जी, हनुमान जी या भैरव जी की स्तुति करनी चाहिए। टूटे बर्तन या आईना या चारपाई का प्रयोग ना करें।

नौकरों, दासों, मजदूरों व मेहनतकश लोगों का हक ना मारें। उनका व्यर्थ में अपमान ना करें।

गोचर शनि (शनि साढ़ेसाती) का फल और उपाय

द्वादशे जन्मगै राशौ द्वितीये च शनैश्चर।/ढुसार्धानि सप्त वर्षाणि तथा दुखैर्युतो भवेत।।

गोचर में जब शनि ग्रह, जन्म चंद्र से बारहवें, पहले और दूसरे भाव में भ्रमण करता है, उस समय (लगभग साढ़े सात वर्ष तक) को शनि साढ़ेसाती के नाम से जाना जाता है।

सामान्यतः यह माना जाता है, कि शनि की साढ़ेसाती के दौरान जातक मानसिक कष्ट, शारीरिक कष्ट एवं आर्थिक संकट से गुजरता है। साढ़ेसाती से लोग चिन्तित हो जाते हैं एवं उनके मन में एक अनजाना सा डर बना रहता है। जातक में असंतोष, निराशा, आलस्य, तनाव, रोगों से हानि, चोरी या आगजनी से हानि, घर में विवाद या किसी पारिवारिक सदस्य की मृत्यु आदि जैसे फल प्राप्त होने का डर बना रहता है। लेकिन हकीकत में साढ़ेसाती के किसी चरण का पूरा समय– साढ़े सात साल– ऐसा नहीं होता है। काफी शुभ फल जैसे विवाह, संतानोत्पत्ति, नौकरी या व्यवसाय में उन्नति, विदेश यात्रा, भूमि, भवन या वाहन का क्रय, कर्ज से मुक्ति, उंचे तबके के लोगों से संपक्र और उनसे लाभ, धार्मिक स्थलों की यात्रा या धार्मिक कार्यों का आयोजन, संतानों से सुख एवं खुशी आदि भी प्राप्त होते हैं।

प्रथम चक्र

प्रथम ढ़ैय्या

07/09/1977 – 04/11/1979

गोचर राशि – सिहं

समयावधि :

2.0 y.1.0 m.28 d.

आपके लिए यह चरण घातक हो सकता है। इस चरण के आरम्भ से ही आपको मानसिक तनाव रह सकता है। तनाव का कारण आपका संतान पक्ष हो सकता है। आपकी संतान आपके हर काम का विरोध करेगी। आपके लिए नित्य नई समस्यायें पैदा करेंगी। आप अपनी संतान की बीमारी पर भी काफी पैसा खर्च कर सकते हैं। आप अपने कार्यों से अपनी संतान के कार्यों में बाधायें उत्पन्न कर सकते हैं। आपकी संतान आपके विचारों से सहमत नहीं हो सकती है। अपनी संतान के कारण आपको कष्ट हो सकता है। आपको अपनी संतान पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

इस समय आपके शत्रु काफी सक्रिय होंगे एवं आपको हानि पहुंचाने की प्रयास करेंगे एवं अपने प्रयासों में वे सफल भी होंगे। आप कई अप्रत्याशित खर्चे कर सकते हैं, जिसकी आपको उम्मीद भी नहीं होगी। आप कई लम्बी यात्राएं कर सकते हैं, जिनसे कोई लाभ होने की संभावना नहीं है। नित्य नई आने वाली परेशानियों के कारण धर्म एवं ईश्वर पर से आपका विश्वास उठ सकता है। इस समय आप ना किसी को उधार दें और ना उधार लें, इससे कई समस्याओं से बच सकते हैं। आप उदर कष्ट एवं त्वचा संबंधित ऐसे रोगों से पीड़ित हो सकते हैं, जो लम्बे समय तक चल सकते हैं। भाग्य आपका साथ नहीं दे सकता है।

आपको मानसिक रूप से मजबूत बनना चाहिए। भावना में बहकर कोई ऐसा काम ना करें, जिससे आपको अपमानित होना पड़े। आपके मामा–मौसी को भी कई समस्यओं का सामना करना पड़ सकता है। आपके कार्यों में काफी बाधायें आ सकती हैं। आप आर्थिक रूप से इतने परेशान हो सकते हैं, कि धनोपार्जन के लिए किसी दूसरे शहर में जा सकते हैं, लेकिन वहां भी आपको सफलता प्राप्त नहीं हो सकती है। आप भोग–विलास एवं परिधान पर काफी खर्च कर सकते हैं। यदि आपकी आयु 30 से 46 के मध्य है, तो आपको पुत्र की प्राप्ति हो सकती है। मानसिक रूप से परेशान रहने के कारण आपका मस्तिष्क सही दिशा में कार्य नहीं कर सकता है। खुद को सफल करने के लिए आप फालतू के कार्यों पर अत्यधिक खर्चे कर सकते हैं, जिसका आपको बाद में पछतावा हो सकता है।

इस चरण के मध्य में आपको कुछ आराम मिल सकता है। आप अपनी मनोशक्ति के बल पर कुछ सफलताएं प्राप्त कर सकते हैं। कुछ समय के लिए आपकी आर्थिक स्थिति भी सुधर सकती है और आपके कुछ बिगड़े काम बन सकते हैं। लेकिन यह समय थोड़ी देर के लिए ही आएगा। इसके बाद आपके शत्रु पहले की तुलना में अधिक सक्रिय होंगे और आपको हानि पहुंचाने का प्रयास करेंगे, लेकिन वे सफल नहीं हो सकते हैं। यदि आप नौकरी करते हैं, तो आपके अधिकारी आपसे नाराज रह सकते हैं और आपको कष्ट पहुंचने का प्रयास कर सकते हैं। अपको सतक्र रहना चाहिए और अतिविश्वास में नहीं आना चाहिए। अतिविश्वास के कारण आप चोरी के शिकार हो सकते हैं, विशेषकर यात्रा के दौरान। इस समय आपको अपने ही कामों से अधिक हानि हो सकती है। अपने भाइयों से बंटवारा भी हो सकता है। यदि आपकी कुण्डली में किसी शुभ ग्रह की दशा चल रही है, तो अशुभ फलों में कुछ कमी हो सकती है। चरण के अन्त समय में लाभ के मौके प्राप्त होंगे, उनका पूरा फायदा उठायें।

प्रथम ढ़ैय्या
15/03/1980 – 27/07/1980
गोचर राशि – सिहं
समयावधि :
0.0 y.4.0 m.12 d.

आपके लिए यह चरण घातक हो सकता है। इस चरण के आरम्भ से ही आपको मानसिक तनाव रह सकता है। तनाव का कारण आपका संतान पक्ष हो सकता है। आपकी संतान आपके हर काम का विरोध करेगी। आपके लिए नित्य नई समस्यायें पैदा करेंगी। आप अपनी संतान की बीमारी पर भी काफी पैसा खर्च कर सकते हैं। आप अपने कार्यों से अपनी संतान के कार्यों में बाधायें उत्पन्न कर सकते हैं। आपकी संतान आपके विचारों से सहमत नहीं हो सकती है। अपनी संतान के कारण आपको कष्ट हो सकता है। आपको अपनी संतान पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

इस समय आपके शत्रु काफी सक्रिय होंगे एवं आपको हानि पहुंचाने की प्रयास करेंगे एवं अपने प्रयासों में वे

सफल भी होंगे। आप कई अप्रत्याशित खर्चे कर सकते हैं, जिसकी आपको उम्मीद भी नहीं होगी। आप कई लम्बी यात्राएं कर सकते हैं, जिनसे कोई लाभ होने की संभावना नहीं है। नित्य नई आने वाली परेशानियों के कारण धर्म एवं ईश्वर पर से आपका विश्वास उठ सकता है। इस समय आप ना किसी को उधार दें और ना उधार लें, इससे कई समस्याओं से बच सकते हैं। आप उदर कष्ट एवं त्वचा संबंधित ऐसे रोगों से पीड़ित हो सकते हैं, जो लम्बे समय तक चल सकते हैं। भाग्य आपका साथ नहीं दे सकता है।

आपको मानसिक रूप से मजबूत बनना चाहिए। भावना में बहकर कोई ऐसा काम ना करें, जिससे आपको अपमानित होना पड़े। आपके मामा–मौसी को भी कई समस्यओं का सामना करना पड़ सकता है। आपके कार्यों में काफी बाधायें आ सकती हैं। आप आर्थिक रूप से इतने परेशान हो सकते हैं, कि धनोपार्जन के लिए किसी दूसरे शहर में जा सकते हैं, लेकिन वहां भी आपको सफलता प्राप्त नहीं हो सकती है। आप भोग–विलास एवं परिधान पर काफी खर्च कर सकते हैं। यदि आपकी आयु 30 से 46 के मध्य है, तो आपको पुत्र की प्राप्ति हो सकती है। मानसिक रूप से परेशान रहने के कारण आपका मस्तिष्क सही दिशा में कार्य नहीं कर सकता है। खुद को सफल करने के लिए आप फालतू के कार्यों पर अत्यधिक खर्चे कर सकते हैं, जिसका आपको बाद में पछतावा हो सकता है।

इस चरण के मध्य में आपको कुछ आराम मिल सकता है। आप अपनी मनोशक्ति के बल पर कुछ सफलताएं प्राप्त कर सकते हैं। कुछ समय के लिए आपकी आर्थिक स्थिति भी सुधर सकती है और आपके कुछ बिगड़े काम बन सकते हैं। लेकिन यह समय थोड़ी देर के लिए ही आएगा। इसके बाद आपके शत्रु पहले की तुलना में अधिक सक्रिय होंगे और आपको हानि पहुंचाने का प्रयास करेंगे, लेकिन वे सफल नहीं हो सकते हैं। यदि आप नौकरी करते हैं, तो आपके अधिकारी आपसे नाराज रह सकते हैं और आपको कष्ट पहुंचने का प्रयास कर सकते हैं। अपको सतक्र रहना चाहिए और अतिविश्वास में नहीं आना चाहिए। अतिविश्वास के कारण आप चोरी के शिकार हो सकते हैं, विशेषकर यात्रा के दौरान। इस समय आपको अपने ही कामों से अधिक हानि हो सकती है। अपने भाइयों से बंटवारा भी हो सकता है। यदि आपकी कुण्डली में किसी शुभ ग्रह की दशा चल रही है, तो अशुभ फलों में कुछ कमी हो सकती है। चरण के अन्त समय में लाभ के मौके प्राप्त होंगे, उनका पूरा फायदा उठायें।

द्वितिय ढ़ैय्या

04/11/1979 – 15/03/1980

गोचर राशि – कन्या

समयावधि :

0.0 y.4.0 m.10 d.

यह चरण आपके लिए घातक हो सकता है। यदि आपकी कुण्डली में किसी शुभ ग्रह की दशा चल रही है, तभी आपको कुछ शुभ फल प्राप्त हो सकता है। इस चरण की शुरूआत से ही आपको अशुभ संकेत मिलने लगेंगे। आप मानसिक रोग, उन्माद, चर्मरोग, वात आदि से पीड़ित रह सकते हैं। यदि बचपन में ही यह चरण आता है,

तो आपको बालारिष्ठ हो सकता है। आपकी चिन्ता खत्म भी नहीं होगी, कि दूसरी नई चिन्ता आपके सामने होगी। आप मानसिक रूप से व्यथित हो सकते हैं एवं भले–बूरे की पहचान खो सकते हैं। काम–वासना आप पर हावी रहेगा। इसके लिए आप किसी भी हद तक जा सकते हैं और समाज में अपमानित हो सकते हैं। आप काफी स्वार्थी हो सकते हैं और हर काम में पहले अपना स्वार्थ देखेंगे।

यदि इस समय आपकी आयु 34 से 47 वर्ष के मध्य है, तो आपको अधिक कष्ट प्राप्त हो सकते हैं। यदि आप नौकरी करते हैं, तो आप नित्य नई समस्याओं का सामना कर सकते हैं। आपके सहयोगी आपके खिलाफ हो सकते हैं और आपकी शिकायत वरिष्ठ अधिकारियों से कर सकते हैं। इससे आपके वरिष्ठ अधिकारी भी आपसे नाराज हो सकते हैं और आप पर कोई कार्यवाई कर सकते हैं। परेशानी में आप कोई गलत काम कर सकते हैं और आपको स्थानान्तरित या निष्कासित किया जा सकता है। आपको हर काम सोच–विचार कर ही करना चाहिए, अन्यथा समस्या से घिर सकते हैं। आपके कई कार्य बनते–बनते बिगड़ सकते हैं। आपको अपनी वाणी पर संयम एवं क्रोध पर नियंत्रण रखना चाहिए।

आपको पूजा–पाठ की तरफ अपना मन लगाना चाहिए। यदि आप व्यवसाय करते हैं, तो आग या चोरी के माध्यम से आपको हानि होने की संभावना है। आपका पैसा व्यापार में फँस सकता है। पैसा मांगने पर लोग टाल–मटोल कर सकते हैं। धीरे–धीरे व्यापार में हानि बढ़ती जाएगी और आपका मन व्यापार से हट सकता है। आपके कुछ सहयोगी भी शत्रुता निभाने की ताक में हो सकते हैं, इसलिए आप सावधान रहें। ईश्वर की आराधना करें। इस समय आपके व्यवसाय पर कोई सरकारी छापा पड़ सकता है और आप पर आर्थिक दण्ड लग सकता है। यदि आप साझेदारी में व्यवसाय कर रहे हैं, तो आपके साझेदार आपको धोखा दे सकते हैं। मानसिक परेशानियों के कारण आप अपने व्यवसाय पर ठीक से ध्यान नहीं दे पायेंगे, जिसका फायदा आपके कर्मचारी चोरी आदि कर के उठा सकते हैं।

आपके पिता कुछ अस्वस्थ हो सकते हैं, और उनकी शल्य क्रिया होने की भी कुछ संभावना है। आपको संचार के माध्यम से कुछ अशुभ समाचार प्राप्त हो सकता है, जिससे आप अधिक परेशान हो सकते हैं। अपने किसी मित्र से लिया कोई पुराना कर्ज आप चुकाने की कोशिश कर सकते हैं, लेकिन आर्थिक स्थिति खराब होने के कारण आप इसमे सफल नहीं हो सकते हैं। इतना होने के बावजूद आपमें आत्मबल की कमी नहीं होगी। आपके शत्रु आपके लिए बाधायें उत्पन्न कर सकते हैं, लेकिन आप उनकी परवाह ना करते हुए काम में लगे रहें, आपको निश्चित रूप से सफलता प्राप्त होगी।

यदि आप पत्रकारिता, लेखन, समीक्षा या संपादन से संबंधित कार्य करते हैं, तो काफी सफलता प्राप्त कर सकते हैं। आपको दूसरे व्यक्तियों की सोच की चिंता नहीं हो सकती है। यदि आप चिकित्सा या केमिस्ट के क्षेत्र में हैं, तो इस समय आपको हानि हो सकती है। आपकी दी हुई दवा किसी को विपरित प्रतिक्रिया/रियेक्शन कर सकती है। विशेष सावधानी बरतें। यदि आप समाज सेवा या परोपकार में लिप्त हैं, तो आपको काफी उत्तम फल

प्राप्त हो सकता है। आपको इस चरण के दौरान मानसिक स्थिरता बनाये रखनी चाहिए।

द्वितिय ढ़ैय्या

27/07/1980 – 06/10/1982

गोचर राशि – कन्या

समयावधि :

2.0 y.2.0 m.10 d.

यह चरण आपके लिए घातक हो सकता है। यदि आपकी कुण्डली में किसी शुभ ग्रह की दशा चल रही है, तभी आपको कुछ शुभ फल प्राप्त हो सकता है। इस चरण की शुरूआत से ही आपको अशुभ संकेत मिलने लगेंगे। आप मानसिक रोग, उन्माद, चर्मरोग, वात आदि से पीड़ित रह सकते हैं। यदि बचपन में ही यह चरण आता है, तो आपको बालारिष्ठ हो सकता है। आपकी चिन्ता खत्म भी नहीं होगी, कि दूसरी नई चिन्ता आपके सामने होगी। आप मानसिक रूप से व्यथित हो सकते हैं एवं भले–बूरे की पहचान खो सकते हैं। काम–वासना आप पर हावी रहेगा। इसके लिए आप किसी भी हद तक जा सकते हैं और समाज में अपमानित हो सकते हैं। आप काफी स्वार्थी हो सकते हैं और हर काम में पहले अपना स्वार्थ देखेंगे।

यदि इस समय आपकी आयु 34 से 47 वर्ष के मध्य है, तो आपको अधिक कष्ट प्राप्त हो सकते हैं। यदि आप नौकरी करते हैं, तो आप नित्य नई समस्याओं का सामना कर सकते हैं। आपके सहयोगी आपके खिलाफ हो सकते हैं और आपकी शिकायत वरिष्ठ अधिकारियों से कर सकते हैं। इससे आपके वरिष्ठ अधिकारी भी आपसे नाराज हो सकते हैं और आप पर कोई कार्यवाई कर सकते हैं। परेशानी में आप कोई गलत काम कर सकते हैं और आपको स्थानान्तरित या निष्कासित किया जा सकता है। आपको हर काम सोच–विचार कर ही करना चाहिए, अन्यथा समस्या से घिर सकते हैं। आपके कई कार्य बनते–बनते बिगड़ सकते हैं। आपको अपनी वाणी पर संयम एवं क्रोध पर नियंत्रण रखना चाहिए।

आपको पूजा–पाठ की तरफ अपना मन लगाना चाहिए। यदि आप व्यवसाय करते हैं, तो आग या चोरी के माध्यम से आपको हानि होने की संभावना है। आपका पैसा व्यापार में फँस सकता है। पैसा मांगने पर लोग टाल–मटोल कर सकते हैं। धीरे–धीरे व्यापार में हानि बढ़ती जाएगी और आपका मन व्यापार से हट सकता है। आपके कुछ सहयोगी भी शत्रुता निभाने की ताक में हो सकते हैं, इसलिए आप सावधान रहें। ईश्वर की आराधना करें। इस समय आपके व्यवसाय पर कोई सरकारी छापा पड़ सकता है और आप पर आर्थिक दण्ड लग सकता है। यदि आप साझेदारी में व्यवसाय कर रहे हैं, तो आपके साझेदार आपको धोखा दे सकते हैं। मानसिक परेशानियों के कारण आप अपने व्यवसाय पर ठीक से ध्यान नहीं दे पायेंगे, जिसका फायदा आपके कर्मचारी चोरी आदि कर के उठा सकते हैं।

आपके पिता कुछ अस्वस्थ हो सकते हैं, और उनकी शल्य क्रिया होने की भी कुछ संभावना है। आपको संचार के माध्यम से कुछ अशुभ समाचार प्राप्त हो सकता है, जिससे आप अधिक परेशान हो सकते हैं। अपने किसी मित्र से

लिया कोई पुराना कर्ज आप चुकाने की कोशिश कर सकते हैं, लेकिन आर्थिक स्थिति खराब होने के कारण आप इसमे सफल नहीं हो सकते हैं। इतना होने के बावजूद आपमें आत्मबल की कमी नहीं होगी। आपके शत्रु आपके लिए बाधायें उत्पन्न कर सकते हैं, लेकिन आप उनकी परवाह ना करते हुए काम में लगे रहें, आपको निश्चित रूप से सफलता प्राप्त होगी।

यदि आप पत्रकारिता, लेखन, समीक्षा या संपादन से संबंधित कार्य करते हैं, तो काफी सफलता प्राप्त कर सकते हैं। आपको दूसरे व्यक्तियों की सोच की चिंता नहीं हो सकती है। यदि आप चिकित्सा या केमिस्ट के क्षेत्र में हैं, तो इस समय आपको हानि हो सकती है। आपकी दी हुई दवा किसी को विपरित प्रतिक्रिया/रियेक्शन कर सकती है। विशेष सावधानी बरतें। यदि आप समाज सेवा या परोपकार में लिप्त हैं, तो आपको काफी उत्तम फल प्राप्त हो सकता है। आपको इस चरण के दौरान मानसिक स्थिरता बनाये रखनी चाहिए।

तृतिय ढ़ैय्या
06/10/1982 – 21/12/1984
गोचर राशि – तुला
समयावधि :
2.0 y.2.0 m.15 d.

आपको इस चरण में मिश्रित फल प्राप्त होगा। फल का स्वभाव आपकी कुण्डली में चल रही महादशा पर अधिक निर्भर करेगा। शुरू में आपको अशुभ फल प्राप्त हो सकते हैं, लेकिन बाद में शुभ फल प्राप्त होने लगेंगे। आप कोई भी काम काफी सोच–विचार के बाद ही करें। अपनी वाणी पर नियंत्रण रखें एवं कोई भी काम जल्दबाजी में ना करें, हानि हो सकती है। आप पर काम का बोझ बढ़ सकता है, लेकिन यह भविष्य के लिए फायदेमंद होगा। इस समय आपको धन लाभ हो सकता है। यदि आप पर कोई कर्ज है, तो आप उसे चुकाने में सक्षम होंगे। आप भूमि, भवन या वाहन खरीद सकते हैं। अपनी माता से कोई उपहार प्राप्त हो सकता है। अपने विरोधियों से सावधान रहें।

यदि आप व्यवसाय करते हैं, तो अपनी मेहनत एवं दिमाग से तरक्की करेंगे। आपको अपने व्यवसाय में चोरी होने की काफी संभावना है। अपने कर्मचारियों से सावधान रहें। अधिक कार्यभार होने के कारण आप अपने परिवार पर पर्याप्त समय नहीं दे सकते हैं, जिसकी वजह से आपके परिवार वाले आपसे नाराज हो सकते हैं। यदि आप नौकरी करते हैं, तो मनचाहे स्थान पर अपना स्थानान्तरण करवा सकते हैं। आपके अधिकारी आपसे खुश रह सकते हैं, लेकिन आपके सहयोगी उन्हें भड़का सकते हैं। किसी भी कागज पर बिना पढ़े हस्ताक्षर ना करें। यदि आप आर्थिक लेन–देन के क्षेत्र में हैं, तो आपको काफी सावधान रहना चाहिए, आप पर रिश्वत का आरोप लग सकता है। नेताओं से दूर रहें, उन्हें किसी भी तरह से नाराज ना करें।

आप परोपकार एवं धार्मिक कार्यों में बढ़–चढ़ कर हिस्सा लेंगे, जिससे आपको समाज में सम्मान मिलेगा। आपको धार्मिक साहित्य के अध्ययन में रूचि हो सकती है। आप धार्मिक स्थल की यात्रा भी कर सकते हैं। यदि आप

अभी विद्यार्थी हैं, तो खूब मेहनत करें, अन्यथा परीक्षा में असफल हो सकते हैं। चरण के मध्य काल में आपकी माता अस्वस्थ रह सकती हैं, जिसकी वजह से आप काम पर ध्यान नहीं दे पाएंगे। इससे आपको आर्थिक हानि हो सकती है। कुछ समय बाद आपकी माता स्वस्थ हो जाएंगी और आप अपने काम पर पुनः ध्यान देने लगेंगे। अधिक कार्य होने के कारण आप घर पर समय नहीं दे पाएंगे, जिसकी वजह से आपके जीवनसाथी नाराज हो सकते हैं। अतः परिवार पर भी पर्याप्त समय दें। इस समय आपकी आर्थिक उन्नति होगी। अपने मित्रों एवं रिश्तेदारों से मधुर संबंध बनाकर रखें। वाणी पर संयम बहुत जरूरी है। आपके शत्रु आपको हानि पहुंचाने का प्रयास करेंगे, लेकिन वे सफल नहीं हो पाएंगे। आप उनकी परवाह ना करते हुए अपना काम करते रहें।

इस समय आप पैरों में दर्द से पीड़ित रह सकते हैं। अधिक मेहनत एवं भाग–दौड़ के कारण आपका शरीर कमजोर हो सकता है। वैसे तो आपको पैसे की कमी नहीं होगी, लेकिन आप हमेशा अधिक धन कमाने के बारे में सोचते रह सकते हैं। आप सुख की प्राप्ति के लिए इधर–उधर भटक सकते हैं और अपने घर पर ध्यान नहीं दे सकते हैं। आप लोगों पर वर्चस्व पाने की कोशिश में लगे रहेंगे। धन कमाने के लिए आप किसी दूरस्थ स्थान या विदेश भी जा सकते हैं। आपको उंचाई से गिरने, वाहन से चोट, आग, बिजली या किसी जानवर से चोट का खतरा हो सकता है। आपको काफी सावधानी से काम करना चाहिए और ईश्वार का ध्यान करते हुए आगे बढ़ते रहना चाहिए।

तृतिय ढ़ैय्या
01/06/1985 – 17/09/1985
गोचर राशि – तुला
समयावधि :
0.0 y.3.0 m.17 d.

आपको इस चरण में मिश्रित फल प्राप्त होगा। फल का स्वभाव आपकी कुण्डली में चल रही महादशा पर अधिक निर्भर करेगा। शुरू में आपको अशुभ फल प्राप्त हो सकते हैं, लेकिन बाद में शुभ फल प्राप्त होने लगेंगे। आप कोई भी काम काफी सोच–विचार के बाद ही करें। अपनी वाणी पर नियंत्रण रखें एवं कोई भी काम जल्दबाजी में ना करें, हानि हो सकती है। आप पर काम का बोझ बढ़ सकता है, लेकिन यह भविष्य के लिए फायदेमंद होगा। इस समय आपको धन लाभ हो सकता है। यदि आप पर कोई कर्ज है, तो आप उसे चुकाने में सक्षम होंगे। आप भूमि, भवन या वाहन खरीद सकते हैं। अपनी माता से कोई उपहार प्राप्त हो सकता है। अपने विरोधियों से सावधान रहें।

यदि आप व्यवसाय करते हैं, तो अपनी मेहनत एवं दिमाग से तरक्की करेंगे। आपको अपने व्यवसाय में चोरी होने की काफी संभावना है। अपने कर्मचारियों से सावधान रहें। अधिक कार्यभार होने के कारण आप अपने परिवार पर पर्याप्त समय नहीं दे सकते हैं, जिसकी वजह से आपके परिवार वाले आपसे नाराज हो सकते हैं। यदि आप नौकरी करते हैं, तो मनचाहे स्थान पर अपना स्थानान्तरण करवा सकते हैं। आपके अधिकारी आपसे खुश रह सकते हैं, लेकिन आपके सहयोगी उन्हें भड़का सकते हैं। किसी भी कागज पर बिना पढ़े हस्ताक्षर ना करें। यदि

आप आर्थिक लेन–देन के क्षेत्र में हैं, तो आपको काफी सावधान रहना चाहिए, आप पर रिश्वत का आरोप लग सकता है। नेताओं से दूर रहें, उन्हें किसी भी तरह से नाराज ना करें।

आप परोपकार एवं धार्मिक कार्यों में बढ़–चढ़ कर हिस्सा लेंगे, जिससे आपको समाज में सम्मान मिलेगा। आपको धार्मिक साहित्य के अध्ययन में रूचि हो सकती है। आप धार्मिक स्थल की यात्रा भी कर सकते हैं। यदि आप अभी विद्यार्थी हैं, तो खूब मेहनत करें, अन्यथा परीक्षा में असफल हो सकते हैं। चरण के मध्य काल में आपकी माता अस्वस्थ रह सकती हैं, जिसकी वजह से आप काम पर ध्यान नहीं दे पाएंगे। इससे आपको आर्थिक हानि हो सकती है। कुछ समय बाद आपकी माता स्वस्थ हो जाएंगी और आप अपने काम पर पुनः ध्यान देने लगेंगे। अधिक कार्य होने के कारण आप घर पर समय नहीं दे पाएंगे, जिसकी वजह से आपके जीवनसाथी नाराज हो सकते हैं। अतः परिवार पर भी पर्याप्त समय दें। इस समय आपकी आर्थिक उन्नति होगी। अपने मित्रों एवं रिश्तेदारों से मधुर संबंध बनाकर रखें। वाणी पर संयम बहुत जरूरी है। आपके शत्रु आपको हानि पहुंचाने का प्रयास करेंगे, लेकिन वे सफल नहीं हो पाएंगे। आप उनकी परवाह ना करते हुए अपना काम करते रहें।

इस समय आप पैरों में दर्द से पीड़ित रह सकते हैं। अधिक मेहनत एवं भाग–दौड़ के कारण आपका शरीर कमजोर हो सकता है। वैसे तो आपको पैसे की कमी नहीं होगी, लेकिन आप हमेशा अधिक धन कमाने के बारे में सोचते रह सकते हैं। आप सुख की प्राप्ति के लिए इधर–उधर भटक सकते हैं और अपने घर पर ध्यान नहीं दे सकते हैं। आप लोगों पर वर्चस्व पाने की कोशिश में लगे रहेंगे। धन कमाने के लिए आप किसी दूरस्थ स्थान या विदेश भी जा सकते हैं। आपको उंचाई से गिरने, वाहन से चोट, आग, बिजली या किसी जानवर से चोट का खतरा हो सकता है। आपको काफी सावधानी से काम करना चाहिए और ईश्वार का ध्यान करते हुए आगे बढ़ते रहना चाहिए।

कंटक शनि
17/12/1987 – 21/03/1990
गोचर राशि – धनु
समयावधि :
2.0 y.3.0 m.3 d.

इस चरण का फल आपके लिए काफी अशुभ हो सकता है। आपको एक साथ कई रोग हो सकते हैं। इन रोगों के कारण आप काफी निराश हो सकते हैं। आपके पिता को भी कष्ट हो सकता है, जिससे आप परेशान हो सकते हैं। यदि किसी क्रूर/अशुभ ग्रह की दशा भी चल रही है, तो आप किसी नजदीकी का वियोग भी सह सकते हैं। संचार के माध्यम से कोई अशुभ समाचार प्राप्त हो सकता है। यदि आप नौकरी करते हैं, तो आपके सहकर्मी आपके साथ शत्रुतापूर्ण व्यवहार कर सकते हैं। आप पर नित्य नए आरोप लग सकते हैं, जिसकी वजह से आप मानसिक रूप से काफी परेशान हो सकते हैं और अस्पताल में भी भर्ती हो सकते हैं। आपकी नौकरी भी छूट सकती है।

आपका कोई पुराना शत्रु अचानक आपके सामने आ सकता है, जिसकी वजह से आप परेशन रह सकते हैं। इस समय कोई भी आपकी मदद को नहीं आएगा। आप कई प्रकार से हानि उठा सकते हैं और आर्थिक हानि हो सकती है। यदि आप कोई व्यवसाय करते हैं, तो आपका व्यवसाय बंद होने के कगार पर हो सकता है। यदि किसी शुभ ग्रह के प्रभाव से आपका व्यवसाय बच जाता है, तो भी हानि तो होनी ही है। शत्रु आपके व्यवसाय की बदनामी फैला सकते हैं। आपके किसी कर्मचारी को लालच देकर आपकी गुप्त सूचनाएं एकत्र कर सकते हैं और छापा पड़वाने में मुख्य भूमिका निभा सकते हैं। आपको सत्तापक्ष से भी हानि हो सकती है। आपका कोई भुगतान रूक सकता है। आप जो भी काम करें, सोच–समझ कर ही करें। अनुकूल समय का इंतजार करें एवं बुरे समय को ईश्वर का ध्यान करते हुए निकाल दें।

वाहन चलाते समय काफी सावधानी बरतें, दुर्घटना की संभावना हो सकती है। सिर में गंभीर चोट लगने की अधिक संभावना है। आपके मामा या मौसी की ओर से आप पर कोई गंभीर आरोप लग सकता है, जिसकी वजह से आपकी माता को कष्ट हो सकता है। उनका स्वास्थ्य खराब हो सकता है। आपके जीवनसाथी का व्यवहार भी आपके प्रति परिवर्तित हो सकता है, जिसकी वजह से आप मानसिक रूप से परेशान हो सकते हैं। आप गलत कार्यों की तरफ आकृष्ट हो सकते हैं। सत्तापक्ष से भी दण्ड मिल सकता है। इस चरण में आपके धनोपार्जन के सारे प्रयास विफल हो सकते हैं, और जो कुछ भी आप कमायेंगे वो सब भोग–विलास में गवां सकते हैं।

यदि आपकी आयु 34 से 47 वर्ष के मध्य है और राहु भी अशुभ है, तो आपको कारावास भी हो सकता है। यदि मंगल अशुभ है, तो किसी दुर्घटना में अपना कोई अंग भी गंवा सकते हैं। इस दौरान आप अपने भाइयों से अलग हो सकते हैं और जो कुछ धन बंटवारे से मिलेगा वो फालतू के कार्यों में खर्च कर सकते हैं। आप उचित निर्णय लेने में अक्षम हो सकते हैं। लोगों के प्रति आपका व्यवहार भी बदल सकता है, जिसकी वजह से आपके अपने लो भी आपसे बात करना पसंद नहीं कर सकते हैं। आपमें धर्म के प्रति आस्था कम हो सकती है। आपको धार्मिक कार्यों में मन लगाना चाहिए।

कंटक शनि

20/06/1990 – 15/12/1990

गोचर राशि – धनु

समयावधि :

0.0 y.5.0 m.26 d.

इस चरण का फल आपके लिए काफी अशुभ हो सकता है। आपको एक साथ कई रोग हो सकते हैं। इन रोगों के कारण आप काफी निराश हो सकते हैं। आपके पिता को भी कष्ट हो सकता है, जिससे आप परेशान हो सकते हैं। यदि किसी क्रूर/अशुभ ग्रह की दशा भी चल रही है, तो आप किसी नजदीकी का वियोग भी सह सकते हैं। संचार के माध्यम से कोई अशुभ समाचार प्राप्त हो सकता है। यदि आप नौकरी करते हैं, तो आपके सहकर्मी आपके साथ शत्रुतापूर्ण व्यवहार कर सकते हैं। आप पर नित्य नए आरोप लग सकते हैं, जिसकी वजह से आप मानसिक रूप से काफी परेशान हो सकते हैं और अस्पताल में भी भर्ती हो सकते हैं। आपकी नौकरी भी

छूट सकती है।

आपका कोई पुराना शत्रु अचानक आपके सामने आ सकता है, जिसकी वजह से आप परेशन रह सकते हैं। इस समय कोई भी आपकी मदद को नहीं आएगा। आप कई प्रकार से हानि उठा सकते हैं और आर्थिक हानि हो सकती है। यदि आप कोई व्यवसाय करते हैं, तो आपका व्यवसाय बंद होने के कगार पर हो सकता है। यदि किसी शुभ ग्रह के प्रभाव से आपका व्यवसाय बच जाता है, तो भी हानि तो होनी ही है। शत्रु आपके व्यवसाय की बदनामी फैला सकते हैं। आपके किसी कर्मचारी को लालच देकर आपकी गुप्त सूचनाएं एकत्र कर सकते हैं और छापा पड़वाने में मुख्य भूमिका निभा सकते हैं। आपको सत्तापक्ष से भी हानि हो सकती है। आपका कोई भुगतान रूक सकता है। आप जो भी काम करें, सोच–समझ कर ही करें। अनुकूल समय का इंतजार करें एवं बुरे समय को ईश्वर का ध्यान करते हुए निकाल दें।

वाहन चलाते समय काफी सावधानी बरतें, दुर्घटना की संभावना हो सकती है। सिर में गंभीर चोट लगने की अधिक संभावना है। आपके मामा या मौसी की ओर से आप पर कोई गंभीर आरोप लग सकता है, जिसकी वजह से आपकी माता को कष्ट हो सकता है। उनका स्वास्थ्य खराब हो सकता है। आपके जीवनसाथी का व्यवहार भी आपके प्रति परिवर्तित हो सकता है, जिसकी वजह से आप मानसिक रूप से परेशान हो सकते हैं। आप गलत कार्यों की तरफ आकृष्ट हो सकते हैं। सत्तापक्ष से भी दण्ड मिल सकता है। इस चरण में आपके धनोपार्जन के सारे प्रयास विफल हो सकते हैं, और जो कुछ भी आप कमायेंगे वो सब भोग–विलास में गवां सकते हैं।

यदि आपकी आयु 34 से 47 वर्ष के मध्य है और राहु भी अशुभ है, तो आपको कारावास भी हो सकता है। यदि मंगल अशुभ है, तो किसी दुर्घटना में अपना कोई अंग भी गंवा सकते हैं। इस दौरान आप अपने भाइयों से अलग हो सकते हैं और जो कुछ धन बंटवारे से मिलेगा वो फालतू के कार्यों में खर्च कर सकते हैं। आप उचित निर्णय लेने में अक्षम हो सकते हैं। लोगों के प्रति आपका व्यवहार भी बदल सकता है, जिसकी वजह से आपके अपने लो भी आपसे बात करना पसंद नहीं कर सकते हैं। आपमें धर्म के प्रति आस्था कम हो सकती है। आपको धार्मिक कार्यों में मन लगाना चाहिए।

अष्टम शनि

17/04/1998 – 07/06/2000

गोचर राशि – मेष

समयावधि :

2.0 y.1.0 m.21 d.

इस चरण का फल आपके लिए अधिक अशुभ नहीं हो सकता है। यदि आपकी कुण्डली में शनि किसी शुभ भाव में बैठा है, तो आपको शुभ फल अधिक प्राप्त हो सकता है। आपको काफी शारीरिक कष्ट हो सकते हैं, जो कि मृत्युतुल्य हो सकते हैं। आपके भाई–बहनों को भी कष्ट हो सकता है। आप भी रोग ग्रस्त हो सकते हैं। अर्श, भगंदर आदि होने की अधिक संभावना है। आप निम्न तबके की महिलाओं के सम्पक्र में आ सकते हैं, जिससे

आप समाज में अपमानित हो सकते हैं। आपको अपना चरित्र एवं व्यवहार साफ रखना चाहिए। आपका अवैध संबंध बहुत जल्द लोगों के सामने आ सकता है और आपके परिवार में क्लेश हो सकता है।

यदि आप विद्यार्थी हैं, तो आपको अपने समाज पर ध्यान देना चाहिए, क्योंकि इस चरण के दौरान आपके भटकने की काफी संभावना है। अध्ययन के क्षेत्र में आपको सफलता प्राप्त हो सकती है। आपको अपने खर्चे पर नियंत्रण रखना चाहिए और जितना पैसा घर से मिलता है, उतने में ही काम चलायें। अधिक सपने ना देंखें। आप नित्य कई गलतियां कर सकते हैं बाद में आपको पछतावा भी होगा, लेकिन ग्रहों के प्रभाव से पुनः वहीं गलतियां दोहराते रहेंगे। आप अपने कार्यों से ही अपने लोगों में हंसी के पात्र बन सकते हैं। आप अपने कार्यों को कार्यान्वित करने के लिए फरेब का सहारा भी ले सकते हैं। लोग आपकी बातों पर विश्वास नहीं कर सकते हैं। आपके अपने लोग भी आपका साथ छोड़ सकते हैं। आपके व्यवहार में आए परिवर्तन से आपके दोस्त भी दुश्मन बन सकते हैं। आपके पुराने शत्रु आपके कामों में बाधा पहुंचा सकते हैं। आपका कोई शत्रु आपसे मित्रता कर आपसे गलत कार्य करवा सकता है, सचेत रहें।

यदि आप व्यवसाय करते हैं, तो आपके कपटपूर्ण वयवहार के कारण कई लोग आपके साथ व्यापार बंद कर सकते हैं। आपका मन अपने कारोबार में नहीं लग सकता है। आप आलसी हो सकते हैं, जिसकी वजह से आप व्यवसाय में पिछड़ सकते हैं तथा आपके कर्मचारी इसका लाभ उठा सकते हैं। व्यापार में आर्थिक संकट आ सकता है और आप कर्जदारों से मुंह छिपा सकते हैं। यदि आप नौकरी करते हैं, तो शारीरिक अक्षमता के कारण आपका मन अपने काम में नहीं लग सकता है। आप समय पर अपना काम पूरा नहीं कर पाएंगे, जिससे आपके वरिष्ठ अधिकारी आपसे नाराज हो सकते हैं और आपका स्थानान्तरण भी हो सकता है। आपको कोई दण्ड भी मिल सकता है। इस समय आप सिर्फ अपना स्वार्थ देख सकते हैं। आप सिर्फ धनोपार्जन के बारे में सोच सकते हैं। आप रिश्वत आदि भी लेना शुरू कर सकते हैं, लेकिन यह सबके सामने आ जाएगा। आपके सहयोगी ही आपको रंगे हाथ पकड़वा सकते हैं।

यदि आपकी आयु 34 से 46 वर्ष के मध्य है, तो आपको अधिक कष्ट हो सकता है। इस चरण के दौरान आप अधिकांश समय अस्वस्थ ही रहेंगे, लेकिन आप जब स्वस्थ होंगे, तो आप पर काम–वासना हावी रहेगा। आप अप्राकृतिक संबंध भी बना सकते हैं, जिससे आपको गुप्त यौन रोग होने का खतरा हो सकता है।

द्वितिय चक्र

प्रथम ढ़ैय्या

01/11/2006 – 10/01/2007

गोचर राशि – सिहं

समयावधि :

0.0 y.2.0 m.10 d.

आपके लिए यह चरण घातक हो सकता है। इस चरण के आरम्भ से ही आपको मानसिक तनाव रह सकता है। तनाव का कारण आपका संतान पक्ष हो सकता है। आपकी संतान आपके हर काम का विरोध करेगी। आपके लिए नित्य नई समस्यायें पैदा करेंगी। आप अपनी संतान की बीमारी पर भी काफी पैसा खर्च कर सकते हैं। आप अपने कार्यों से अपनी संतान के कार्यों में बाधायें उत्पन्न कर सकते हैं। आपकी संतान आपके विचारों से सहमत नहीं हो सकती है। अपनी संतान के कारण आपको कष्ट हो सकता है। आपको अपनी संतान पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

इस समय आपके शत्रु काफी सक्रिय होंगे एवं आपको हानि पहुंचाने की प्रयास करेंगे एवं अपने प्रयासों में वे सफल भी होंगे। आप कई अप्रत्याशित खर्चे कर सकते हैं, जिसकी आपको उम्मीद भी नहीं होगी। आप कई लम्बी यात्राएं कर सकते हैं, जिनसे कोई लाभ होने की संभावना नहीं है। नित्य नई आने वाली परेशानियों के कारण धर्म एवं ईश्वर पर से आपका विश्वास उठ सकता है। इस समय आप ना किसी को उधार दें और ना उधार लें, इससे कई समस्याओं से बच सकते हैं। आप उदर कष्ट एवं त्वचा संबंधित ऐसे रोगों से पीड़ित हो सकते हैं, जो लम्बे समय तक चल सकते हैं। भाग्य आपका साथ नहीं दे सकता है।

आपको मानसिक रूप से मजबूत बनना चाहिए। भावना में बहकर कोई ऐसा काम ना करें, जिससे आपको अपमानित होना पड़े। आपके मामा–मौसी को भी कई समस्यओं का सामना करना पड़ सकता है। आपके कार्यों में काफी बाधायें आ सकती हैं। आप आर्थिक रूप से इतने परेशान हो सकते हैं, कि धनोपार्जन के लिए किसी दूसरे शहर में जा सकते हैं, लेकिन वहां भी आपको सफलता प्राप्त नहीं हो सकती है। आप भोग–विलास एवं परिधान पर काफी खर्च कर सकते हैं। यदि आपकी आयु 30 से 46 के मध्य है, तो आपको पुत्र की प्राप्ति हो सकती है। मानसिक रूप से परेशान रहने के कारण आपका मस्तिष्क सही दिशा में कार्य नहीं कर सकता है। खुद को सफल करने के लिए आप फालतू के कार्यों पर अत्यधिक खर्चे कर सकते हैं, जिसका आपको बाद में पछतावा हो सकता है।

इस चरण के मध्य में आपको कुछ आराम मिल सकता है। आप अपनी मनोशक्ति के बल पर कुछ सफलताएं प्राप्त कर सकते हैं। कुछ समय के लिए आपकी आर्थिक स्थिति भी सुधर सकती है और आपके कुछ बिगड़े काम बन सकते हैं। लेकिन यह समय थोड़ी देर के लिए ही आएगा। इसके बाद आपके शत्रु पहले की तुलना में अधिक सक्रिय होंगे और आपको हानि पहुंचाने का प्रयास करेंगे, लेकिन वे सफल नहीं हो सकते हैं। यदि आप नौकरी करते हैं, तो आपके अधिकारी आपसे नाराज रह सकते हैं और आपको कष्ट पहुंचने का प्रयास कर सकते हैं। अपको सतक्र रहना चाहिए और अतिविश्वास में नहीं आना चाहिए। अतिविश्वास के कारण आप चोरी के शिकार हो सकते हैं, विशेषकर यात्रा के दौरान। इस समय आपको अपने ही कामों से अधिक हानि हो सकती है। अपने भाइयों से बंटवारा भी हो सकता है। यदि आपकी कुण्डली में किसी शुभ ग्रह की दशा चल रही है, तो अशुभ फलों में कुछ कमी हो सकती है। चरण के अन्त समय में लाभ के मौके प्राप्त होंगे, उनका पूरा फायदा उठायें।

प्रथम ढ़ैय्या

16/07/2007 – 10/09/2009

गोचर राशि – सिहं

समयावधि :

2.0 y.1.0 m.26 d.

आपके लिए यह चरण घातक हो सकता है। इस चरण के आरम्भ से ही आपको मानसिक तनाव रह सकता है। तनाव का कारण आपका संतान पक्ष हो सकता है। आपकी संतान आपके हर काम का विरोध करेगी। आपके लिए नित्य नई समस्यायें पैदा करेंगी। आप अपनी संतान की बीमारी पर भी काफी पैसा खर्च कर सकते हैं। आप अपने कार्यों से अपनी संतान के कार्यों में बाधायें उत्पन्न कर सकते हैं। आपकी संतान आपके विचारों से सहमत नहीं हो सकती है। अपनी संतान के कारण आपको कष्ट हो सकता है। आपको अपनी संतान पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

इस समय आपके शत्रु काफी सक्रिय होंगे एवं आपको हानि पहुंचाने की प्रयास करेंगे एवं अपने प्रयासों में वे सफल भी होंगे। आप कई अप्रत्याशित खर्चे कर सकते हैं, जिसकी आपको उम्मीद भी नहीं होगी। आप कई लम्बी यात्राएं कर सकते हैं, जिनसे कोई लाभ होने की संभावना नहीं है। नित्य नई आने वाली परेशानियों के कारण धर्म एवं ईश्वर पर से आपका विश्वास उठ सकता है। इस समय आप ना किसी को उधार दें और ना उधार लें, इससे कई समस्याओं से बच सकते हैं। आप उदर कष्ट एवं त्वचा संबंधित ऐसे रोगों से पीड़ित हो सकते हैं, जो लम्बे समय तक चल सकते हैं। भाग्य आपका साथ नहीं दे सकता है।

आपको मानसिक रूप से मजबूत बनना चाहिए। भावना में बहकर कोई ऐसा काम ना करें, जिससे आपको अपमानित होना पड़े। आपके मामा–मौसी को भी कई समस्यओं का सामना करना पड़ सकता है। आपके कार्यों में काफी बाधायें आ सकती हैं। आप आर्थिक रूप से इतने परेशान हो सकते हैं, कि धनोपार्जन के लिए किसी दूसरे शहर में जा सकते हैं, लेकिन वहां भी आपको सफलता प्राप्त नहीं हो सकती है। आप भोग–विलास एवं परिधान पर काफी खर्च कर सकते हैं। यदि आपकी आयु 30 से 46 के मध्य है, तो आपको पुत्र की प्राप्ति हो सकती है। मानसिक रूप से परेशान रहने के कारण आपका मस्तिष्क सही दिशा में कार्य नहीं कर सकता है। खुद को सफल करने के लिए आप फालतू के कार्यों पर अत्यधिक खर्चे कर सकते हैं, जिसका आपको बाद में पछतावा हो सकता है।

इस चरण के मध्य में आपको कुछ आराम मिल सकता है। आप अपनी मनोशक्ति के बल पर कुछ सफलताएं प्राप्त कर सकते हैं। कुछ समय के लिए आपकी आर्थिक स्थिति भी सुधर सकती है और आपके कुछ बिगड़े काम बन सकते हैं। लेकिन यह समय थोड़ी देर के लिए ही आएगा। इसके बाद आपके शत्रु पहले की तुलना में अधिक सक्रिय होंगे और आपको हानि पहुंचाने का प्रयास करेंगे, लेकिन वे सफल नहीं हो सकते हैं। यदि आप नौकरी करते हैं, तो आपके अधिकारी आपसे नाराज रह सकते हैं और आपको कष्ट पहुंचने का प्रयास कर सकते

हैं। अपको सतक्र रहना चाहिए और अतिविश्वास में नहीं आना चाहिए। अतिविश्वास के कारण आप चोरी के शिकार हो सकते हैं, विशेषकर यात्रा के दौरान। इस समय आपको अपने ही कामों से अधिक हानि हो सकती है। अपने भाइयों से बंटवारा भी हो सकता है। यदि आपकी कुण्डली में किसी शुभ ग्रह की दशा चल रही है, तो अशुभ फलों में कुछ कमी हो सकती है। चरण के अन्त समय में लाभ के मौके प्राप्त होंगे, उनका पूरा फायदा उठायें।

द्वितिय ढ़ैय्या

10/09/2009 – 15/11/2011

गोचर राशि – कन्या

समयावधि :

2.0 y.2.0 m.6 d.

यह चरण आपके लिए घातक हो सकता है। यदि आपकी कुण्डली में किसी शुभ ग्रह की दशा चल रही है, तभी आपको कुछ शुभ फल प्राप्त हो सकता है। इस चरण की शुरूआत से ही आपको अशुभ संकेत मिलने लगेंगे। आप मानसिक रोग, उन्माद, चर्मरोग, वात आदि से पीड़ित रह सकते हैं। यदि बचपन में ही यह चरण आता है, तो आपको बालारिष्ठ हो सकता है। आपकी चिन्ता खत्म भी नहीं होगी, कि दूसरी नई चिन्ता आपके सामने होगी। आप मानसिक रूप से व्यथित हो सकते हैं एवं भले–बूरे की पहचान खो सकते हैं। काम–वासना आप पर हावी रहेगा। इसके लिए आप किसी भी हद तक जा सकते हैं और समाज में अपमानित हो सकते हैं। आप काफी स्वार्थी हो सकते हैं और हर काम में पहले अपना स्वार्थ देखेंगे।

यदि इस समय आपकी आयु 34 से 47 वर्ष के मध्य है, तो आपको अधिक कष्ट प्राप्त हो सकते हैं। यदि आप नौकरी करते हैं, तो आप नित्य नई समस्याओं का सामना कर सकते हैं। आपके सहयोगी आपके खिलाफ हो सकते हैं और आपकी शिकायत वरिष्ठ अधिकारियों से कर सकते हैं। इससे आपके वरिष्ठ अधिकारी भी आपसे नाराज हो सकते हैं और आप पर कोई कार्यवाई कर सकते हैं। परेशानी में आप कोई गलत काम कर सकते हैं और आपको स्थानान्तरित या निष्कासित किया जा सकता है। आपको हर काम सोच–विचार कर ही करना चाहिए, अन्यथा समस्या से घिर सकते हैं। आपके कई कार्य बनते–बनते बिगड़ सकते हैं। आपको अपनी वाणी पर संयम एवं क्रोध पर नियंत्रण रखना चाहिए।

आपको पूजा–पाठ की तरफ अपना मन लगाना चाहिए। यदि आप व्यवसाय करते हैं, तो आग या चोरी के माध्यम से आपको हानि होने की संभावना है। आपका पैसा व्यापार में फँस सकता है। पैसा मांगने पर लोग टाल–मटोल कर सकते हैं। धीरे–धीरे व्यापार में हानि बढ़ती जाएगी और आपका मन व्यापार से हट सकता है। आपके कुछ सहयोगी भी शत्रुता निभाने की ताक में हो सकते हैं, इसलिए आप सावधान रहें। ईश्वर की आराधना करें। इस समय आपके व्यवसाय पर कोई सरकारी छापा पड़ सकता है और आप पर आर्थिक दण्ड लग सकता है। यदि आप साझेदारी में व्यवसाय कर रहे हैं, तो आपके साझेदार आपको धोखा दे सकते हैं। मानसिक परेशानियों के कारण आप अपने व्यवसाय पर ठीक से ध्यान नहीं दे पायेंगे, जिसका फायदा आपके कर्मचारी चोरी आदि कर के

उठा सकते हैं।

आपके पिता कुछ अस्वस्थ हो सकते हैं, और उनकी शल्य क्रिया होने की भी कुछ संभावना है। आपको संचार के माध्यम से कुछ अशुभ समाचार प्राप्त हो सकता है, जिससे आप अधिक परेशान हो सकते हैं। अपने किसी मित्र से लिया कोई पुराना कर्ज आप चुकाने की कोशिश कर सकते हैं, लेकिन आर्थिक स्थिति खराब होने के कारण आप इसमे सफल नहीं हो सकते हैं। इतना होने के बावजूद आपमें आत्मबल की कमी नहीं होगी। आपके शत्रु आपके लिए बाधायें उत्पन्न कर सकते हैं, लेकिन आप उनकी परवाह ना करते हुए काम में लगे रहें, आपको निश्चित रूप से सफलता प्राप्त होगी।

यदि आप पत्रकारिता, लेखन, समीक्षा या संपादन से संबंधित कार्य करते हैं, तो काफी सफलता प्राप्त कर सकते हैं। आपको दूसरे व्यक्तियों की सोच की चिंता नहीं हो सकती है। यदि आप चिकित्सा या केमिस्ट के क्षेत्र में हैं, तो इस समय आपको हानि हो सकती है। आपकी दी हुई दवा किसी को विपरित प्रतिक्रिया/रियेक्शन कर सकती है। विशेष सावधानी बरतें। यदि आप समाज सेवा या परोपकार में लिप्त हैं, तो आपको काफी उत्तम फल प्राप्त हो सकता है। आपको इस चरण के दौरान मानसिक स्थिरता बनाये रखनी चाहिए।

द्वितिय ढ़ैय्या
16/05/2012 – 04/08/2012
गोचर राशि – कन्या
समयावधि :
0.0 y.2.0 m.19 d.

यह चरण आपके लिए घातक हो सकता है। यदि आपकी कुण्डली में किसी शुभ ग्रह की दशा चल रही है, तभी आपको कुछ शुभ फल प्राप्त हो सकता है। इस चरण की शुरूआत से ही आपको अशुभ संकेत मिलने लगेंगे। आप मानसिक रोग, उन्माद, चर्मरोग, वात आदि से पीड़ित रह सकते हैं। यदि बचपन में ही यह चरण आता है, तो आपको बालारिष्ठ हो सकता है। आपकी चिन्ता खत्म भी नहीं होगी, कि दूसरी नई चिन्ता आपके सामने होगी। आप मानसिक रूप से व्यथित हो सकते हैं एवं भले–बूरे की पहचान खो सकते हैं। काम–वासना आप पर हावी रहेगा। इसके लिए आप किसी भी हद तक जा सकते हैं और समाज में अपमानित हो सकते हैं। आप काफी स्वार्थी हो सकते हैं और हर काम में पहले अपना स्वार्थ देखेंगे।

यदि इस समय आपकी आयु 34 से 47 वर्ष के मध्य है, तो आपको अधिक कष्ट प्राप्त हो सकते हैं। यदि आप नौकरी करते हैं, तो आप नित्य नई समस्याओं का सामना कर सकते हैं। आपके सहयोगी आपके खिलाफ हो सकते हैं और आपकी शिकायत वरिष्ठ अधिकारियों से कर सकते हैं। इससे आपके वरिष्ठ अधिकारी भी आपसे नाराज हो सकते हैं और आप पर कोई कार्यवाई कर सकते हैं। परेशानी में आप कोई गलत काम कर सकते हैं और आपको स्थानान्तरित या निष्कासित किया जा सकता है। आपको हर काम सोच–विचार कर ही करना चाहिए, अन्यथा समस्या से घिर सकते हैं। आपके कई कार्य बनते–बनते बिगड़ सकते हैं। आपको अपनी वाणी पर

संयम एवं क्रोध पर नियंत्रण रखना चाहिए।

आपको पूजा–पाठ की तरफ अपना मन लगाना चाहिए। यदि आप व्यवसाय करते हैं, तो आग या चोरी के माध्यम से आपको हानि होने की संभावना है। आपका पैसा व्यापार में फँस सकता है। पैसा मांगने पर लोग टाल–मटोल कर सकते हैं। धीरे–धीरे व्यापार में हानि बढ़ती जाएगी और आपका मन व्यापार से हट सकता है। आपके कुछ सहयोगी भी शत्रुता निभाने की ताक में हो सकते हैं, इसलिए आप सावधान रहें। ईश्वर की आराधना करें। इस समय आपके व्यवसाय पर कोई सरकारी छापा पड़ सकता है और आप पर आर्थिक दण्ड लग सकता है। यदि आप साझेदारी में व्यवसाय कर रहे हैं, तो आपके साझेदार आपको धोखा दे सकते हैं। मानसिक परेशानियों के कारण आप अपने व्यवसाय पर ठीक से ध्यान नहीं दे पायेंगे, जिसका फायदा आपके कर्मचारी चोरी आदि कर के उठा सकते हैं।

आपके पिता कुछ अस्वस्थ हो सकते हैं, और उनकी शल्य क्रिया होने की भी कुछ संभावना है। आपको संचार के माध्यम से कुछ अशुभ समाचार प्राप्त हो सकता है, जिससे आप अधिक परेशान हो सकते हैं। अपने किसी मित्र से लिया कोई पुराना कर्ज आप चुकाने की कोशिश कर सकते हैं, लेकिन आर्थिक स्थिति खराब होने के कारण आप इसमे सफल नहीं हो सकते हैं। इतना होने के बावजूद आपमें आत्मबल की कमी नहीं होगी। आपके शत्रु आपके लिए बाधायें उत्पन्न कर सकते हैं, लेकिन आप उनकी परवाह ना करते हुए काम में लगे रहें, आपको निश्चित रूप से सफलता प्राप्त होगी।

यदि आप पत्रकारिता, लेखन, समीक्षा या संपादन से संबंधित कार्य करते हैं, तो काफी सफलता प्राप्त कर सकते हैं। आपको दूसरे व्यक्तियों की सोच की चिंता नहीं हो सकती है। यदि आप चिकित्सा या केमिस्ट के क्षेत्र में हैं, तो इस समय आपको हानि हो सकती है। आपकी दी हुई दवा किसी को विपरित प्रतिक्रिया/रियेक्शन कर सकती है। विशेष सावधानी बरतें। यदि आप समाज सेवा या परोपकार में लिप्त हैं, तो आपको काफी उत्तम फल प्राप्त हो सकता है। आपको इस चरण के दौरान मानसिक स्थिरता बनाये रखनी चाहिए।

तृतिय ढ़ैय्या
15/11/2011 – 16/05/2012
गोचर राशि – तुला
समयावधि :
0.0 y.6.0 m.1 d.

आपको इस चरण में मिश्रित फल प्राप्त होगा। फल का स्वभाव आपकी कुण्डली में चल रही महादशा पर अधिक निर्भर करेगा। शुरू में आपको अशुभ फल प्राप्त हो सकते हैं, लेकिन बाद में शुभ फल प्राप्त होने लगेंगे। आप कोई भी काम काफी सोच–विचार के बाद ही करें। अपनी वाणी पर नियंत्रण रखें एवं कोई भी काम जल्दबाजी में ना करें, हानि हो सकती है। आप पर काम का बोझ बढ़ सकता है, लेकिन यह भविष्य के लिए फायदेमंद होगा। इस समय आपको धन लाभ हो सकता है। यदि आप पर कोई कर्ज है, तो आप उसे चुकाने में सक्षम होंगे। आप

भूमि, भवन या वाहन खरीद सकते हैं। अपनी माता से कोई उपहार प्राप्त हो सकता है। अपने विरोधियों से सावधान रहें।

यदि आप व्यवसाय करते हैं, तो अपनी मेहनत एवं दिमाग से तरक्की करेंगे। आपको अपने व्यवसाय में चोरी होने की काफी संभावना है। अपने कर्मचारियों से सावधान रहें। अधिक कार्यभार होने के कारण आप अपने परिवार पर पर्याप्त समय नहीं दे सकते हैं, जिसकी वजह से आपके परिवार वाले आपसे नाराज हो सकते हैं। यदि आप नौकरी करते हैं, तो मनचाहे स्थान पर अपना स्थानान्तरण करवा सकते हैं। आपके अधिकारी आपसे खुश रह सकते हैं, लेकिन आपके सहयोगी उन्हें भड़का सकते हैं। किसी भी कागज पर बिना पढ़े हस्ताक्षर ना करें। यदि आप आर्थिक लेन–देन के क्षेत्र में हैं, तो आपको काफी सावधान रहना चाहिए, आप पर रिश्वत का आरोप लग सकता है। नेताओं से दूर रहें, उन्हें किसी भी तरह से नाराज ना करें।

आप परोपकार एवं धार्मिक कार्यों में बढ़–चढ़ कर हिस्सा लेंगे, जिससे आपको समाज में सम्मान मिलेगा। आपको धार्मिक साहित्य के अध्ययन में रूचि हो सकती है। आप धार्मिक स्थल की यात्रा भी कर सकते हैं। यदि आप अभी विद्यार्थी हैं, तो खूब मेहनत करें, अन्यथा परीक्षा में असफल हो सकते हैं। चरण के मध्य काल में आपकी माता अस्वस्थ रह सकती हैं, जिसकी वजह से आप काम पर ध्यान नहीं दे पाएंगे। इससे आपको आर्थिक हानि हो सकती है। कुछ समय बाद आपकी माता स्वस्थ हो जाएंगी और आप अपने काम पर पुनः ध्यान देने लगेंगे। अधिक कार्य होने के कारण आप घर पर समय नहीं दे पाएंगे, जिसकी वजह से आपके जीवनसाथी नाराज हो सकते हैं। अतः परिवार पर भी पर्याप्त समय दें। इस समय आपकी आर्थिक उन्नति होगी। अपने मित्रों एवं रिश्तेदारों से मधुर संबंध बनाकर रखें। वाणी पर संयम बहुत जरूरी है। आपके शत्रु आपको हानि पहुंचाने का प्रयास करेंगे, लेकिन वे सफल नहीं हो पाएंगे। आप उनकी परवाह ना करते हुए अपना काम करते रहें।

इस समय आप पैरों में दर्द से पीड़ित रह सकते हैं। अधिक मेहनत एवं भाग–दौड़ के कारण आपका शरीर कमजोर हो सकता है। वैसे तो आपको पैसे की कमी नहीं होगी, लेकिन आप हमेशा अधिक धन कमाने के बारे में सोचते रह सकते हैं। आप सुख की प्राप्ति के लिए इधर–उधर भटक सकते हैं और अपने घर पर ध्यान नहीं दे सकते हैं। आप लोगों पर वर्चस्व पाने की कोशिश में लगे रहेंगे। धन कमाने के लिए आप किसी दूरस्थ स्थान या विदेश भी जा सकते हैं। आपको उंचाई से गिरने, वाहन से चोट, आग, बिजली या किसी जानवर से चोट का खतरा हो सकता है। आपको काफी सावधानी से काम करना चाहिए और ईश्वार का ध्यान करते हुए आगे बढ़ते रहना चाहिए।

तृतिय ढ़ैय्या
04/08/2012 – 02/11/2014
गोचर राशि – तुला
समयावधि :
2.0 y.2.0 m.29 d.

आपको इस चरण में मिश्रित फल प्राप्त होगा। फल का स्वभाव आपकी कुण्डली में चल रही महादशा पर अधिक निर्भर करेगा। शुरू में आपको अशुभ फल प्राप्त हो सकते हैं, लेकिन बाद में शुभ फल प्राप्त होने लगेंगे। आप कोई भी काम काफी सोच–विचार के बाद ही करें। अपनी वाणी पर नियंत्रण रखें एवं कोई भी काम जल्दबाजी में ना करें, हानि हो सकती है। आप पर काम का बोझ बढ़ सकता है, लेकिन यह भविष्य के लिए फायदेमंद होगा। इस समय आपको धन लाभ हो सकता है। यदि आप पर कोई कर्ज है, तो आप उसे चुकाने में सक्षम होंगे। आप भूमि, भवन या वाहन खरीद सकते हैं। अपनी माता से कोई उपहार प्राप्त हो सकता है। अपने विरोधियों से सावधान रहें।

यदि आप व्यवसाय करते हैं, तो अपनी मेहनत एवं दिमाग से तरक्की करेंगे। आपको अपने व्यवसाय में चोरी होने की काफी संभावना है। अपने कर्मचारियों से सावधान रहें। अधिक कार्यभार होने के कारण आप अपने परिवार पर पर्याप्त समय नहीं दे सकते हैं, जिसकी वजह से आपके परिवार वाले आपसे नाराज हो सकते हैं। यदि आप नौकरी करते हैं, तो मनचाहे स्थान पर अपना स्थानान्तरण करवा सकते हैं। आपके अधिकारी आपसे खुश रह सकते हैं, लेकिन आपके सहयोगी उन्हें भड़का सकते हैं। किसी भी कागज पर बिना पढ़े हस्ताक्षर ना करें। यदि आप आर्थिक लेन–देन के क्षेत्र में हैं, तो आपको काफी सावधान रहना चाहिए, आप पर रिश्वत का आरोप लग सकता है। नेताओं से दूर रहें, उन्हें किसी भी तरह से नाराज ना करें।

आप परोपकार एवं धार्मिक कार्यों में बढ़–चढ़ कर हिस्सा लेंगे, जिससे आपको समाज में सम्मान मिलेगा। आपको धार्मिक साहित्य के अध्ययन में रूचि हो सकती है। आप धार्मिक स्थल की यात्रा भी कर सकते हैं। यदि आप अभी विद्यार्थी हैं, तो खूब मेहनत करें, अन्यथा परीक्षा में असफल हो सकते हैं। चरण के मध्य काल में आपकी माता अस्वस्थ रह सकती हैं, जिसकी वजह से आप काम पर ध्यान नहीं दे पाएंगे। इससे आपको आर्थिक हानि हो सकती है। कुछ समय बाद आपकी माता स्वस्थ हो जाएंगी और आप अपने काम पर पुनः ध्यान देने लगेंगे। अधिक कार्य होने के कारण आप घर पर समय नहीं दे पाएंगे, जिसकी वजह से आपके जीवनसाथी नाराज हो सकते हैं। अतः परिवार पर भी पर्याप्त समय दें। इस समय आपकी आर्थिक उन्नति होगी। अपने मित्रों एवं रिश्तेदारों से मधुर संबंध बनाकर रखें। वाणी पर संयम बहुत जरूरी है। आपके शत्रु आपको हानि पहुंचाने का प्रयास करेंगे, लेकिन वे सफल नहीं हो पाएंगे। आप उनकी परवाह ना करते हुए अपना काम करते रहें।

इस समय आप पैरों में दर्द से पीड़ित रह सकते हैं। अधिक मेहनत एवं भाग–दौड़ के कारण आपका शरीर कमजोर हो सकता है। वैसे तो आपको पैसे की कमी नहीं होगी, लेकिन आप हमेशा अधिक धन कमाने के बारे में सोचते रह सकते हैं। आप सुख की प्राप्ति के लिए इधर–उधर भटक सकते हैं और अपने घर पर ध्यान नहीं दे सकते हैं। आप लोगों पर वर्चस्व पाने की कोशिश में लगे रहेंगे। धन कमाने के लिए आप किसी दूरस्थ स्थान या विदेश भी जा सकते हैं। आपको उंचाई से गिरने, वाहन से चोट, आग, बिजली या किसी जानवर से चोट का खतरा हो सकता है। आपको काफी सावधानी से काम करना चाहिए और ईश्वार का ध्यान करते हुए आगे बढ़ते रहना चाहिए।

कंटक शनि

26/01/2017 – 21/06/2017

गोचर राशि – धनु

समयावधि :

0.0 y.4.0 m.24 d.

इस चरण का फल आपके लिए काफी अशुभ हो सकता है। आपको एक साथ कई रोग हो सकते हैं। इन रोगों के कारण आप काफी निराश हो सकते हैं। आपके पिता को भी कष्ट हो सकता है, जिससे आप परेशान हो सकते हैं। यदि किसी क्रूर/अशुभ ग्रह की दशा भी चल रही है, तो आप किसी नजदीकी का वियोग भी सह सकते हैं। संचार के माध्यम से कोई अशुभ समाचार प्राप्त हो सकता है। यदि आप नौकरी करते हैं, तो आपके सहकर्मी आपके साथ शत्रुतापूर्ण व्यवहार कर सकते हैं। आप पर नित्य नए आरोप लग सकते हैं, जिसकी वजह से आप मानसिक रूप से काफी परेशान हो सकते हैं और अस्पताल में भी भर्ती हो सकते हैं। आपकी नौकरी भी छूट सकती है।

आपका कोई पुराना शत्रु अचानक आपके सामने आ सकता है, जिसकी वजह से आप परेशन रह सकते हैं। इस समय कोई भी आपकी मदद को नहीं आएगा। आप कई प्रकार से हानि उठा सकते हैं और आर्थिक हानि हो सकती है। यदि आप कोई व्यवसाय करते हैं, तो आपका व्यवसाय बंद होने के कगार पर हो सकता है। यदि किसी शुभ ग्रह के प्रभाव से आपका व्यवसाय बच जाता है, तो भी हानि तो होनी ही है। शत्रु आपके व्यवसाय की बदनामी फैला सकते हैं। आपके किसी कर्मचारी को लालच देकर आपकी गुप्त सूचनाएं एकत्र कर सकते हैं और छापा पड़वाने में मुख्य भूमिका निभा सकते हैं। आपको सत्तापक्ष से भी हानि हो सकती है। आपका कोई भुगतान रूक सकता है। आप जो भी काम करें, सोच–समझ कर ही करें। अनुकूल समय का इंतजार करें एवं बुरे समय को ईश्वर का ध्यान करते हुए निकाल दें।

वाहन चलाते समय काफी सावधानी बरतें, दुर्घटना की संभावना हो सकती है। सिर में गंभीर चोट लगने की अधिक संभावना है। आपके मामा या मौसी की ओर से आप पर कोई गंभीर आरोप लग सकता है, जिसकी वजह से आपकी माता को कष्ट हो सकता है। उनका स्वास्थ्य खराब हो सकता है। आपके जीवनसाथी का व्यवहार भी आपके प्रति परिवर्तित हो सकता है, जिसकी वजह से आप मानसिक रूप से परेशान हो सकते हैं। आप गलत कार्यों की तरफ आकृष्ट हो सकते हैं। सत्तापक्ष से भी दण्ड मिल सकता है। इस चरण में आपके धनोपार्जन के सारे प्रयास विफल हो सकते हैं, और जो कुछ भी आप कमायेंगे वो सब भोग–विलास में गवां सकते हैं।

यदि आपकी आयु 34 से 47 वर्ष के मध्य है और राहु भी अशुभ है, तो आपको कारावास भी हो सकता है। यदि मंगल अशुभ है, तो किसी दुर्घटना में अपना कोई अंग भी गंवा सकते हैं। इस दौरान आप अपने भाइयों से अलग हो सकते हैं और जो कुछ धन बंटवारे से मिलेगा वो फालतू के कार्यों में खर्च कर सकते हैं। आप उचित निर्णय लेने में अक्षम हो सकते हैं। लोगों के प्रति आपका व्यवहार भी बदल सकता है, जिसकी वजह से आपके अपने लो

भी आपसे बात करना पसंद नहीं कर सकते हैं। आपमें धर्म के प्रति आस्था कम हो सकती है। आपको धार्मिक कार्यों में मन लगाना चाहिए।

कंटक शनि

26/10/2017 – 24/01/2020

गोचर राशि – धनु

समयावधि :

2.0 y.2.0 m.29 d.

इस चरण का फल आपके लिए काफी अशुभ हो सकता है। आपको एक साथ कई रोग हो सकते हैं। इन रोगों के कारण आप काफी निराश हो सकते हैं। आपके पिता को भी कष्ट हो सकता है, जिससे आप परेशान हो सकते हैं। यदि किसी क्रूर/अशुभ ग्रह की दशा भी चल रही है, तो आप किसी नजदीकी का वियोग भी सह सकते हैं। संचार के माध्यम से कोई अशुभ समाचार प्राप्त हो सकता है। यदि आप नौकरी करते हैं, तो आपके सहकर्मी आपके साथ शत्रुतापूर्ण व्यवहार कर सकते हैं। आप पर नित्य नए आरोप लग सकते हैं, जिसकी वजह से आप मानसिक रूप से काफी परेशान हो सकते हैं और अस्पताल में भी भर्ती हो सकते हैं। आपकी नौकरी भी छूट सकती है।

आपका कोई पुराना शत्रु अचानक आपके सामने आ सकता है, जिसकी वजह से आप परेशन रह सकते हैं। इस समय कोई भी आपकी मदद को नहीं आएगा। आप कई प्रकार से हानि उठा सकते हैं और आर्थिक हानि हो सकती है। यदि आप कोई व्यवसाय करते हैं, तो आपका व्यवसाय बंद होने के कगार पर हो सकता है। यदि किसी शुभ ग्रह के प्रभाव से आपका व्यवसाय बच जाता है, तो भी हानि तो होनी ही है। शत्रु आपके व्यवसाय की बदनामी फैला सकते हैं। आपके किसी कर्मचारी को लालच देकर आपकी गुप्त सूचनाएं एकत्र कर सकते हैं और छापा पड़वाने में मुख्य भूमिका निभा सकते हैं। आपको सत्तापक्ष से भी हानि हो सकती है। आपका कोई भुगतान रूक सकता है। आप जो भी काम करें, सोच–समझ कर ही करें। अनुकूल समय का इंतजार करें एवं बुरे समय को ईश्वर का ध्यान करते हुए निकाल दें।

वाहन चलाते समय काफी सावधानी बरतें, दुर्घटना की संभावना हो सकती है। सिर में गंभीर चोट लगने की अधिक संभावना है। आपके मामा या मौसी की ओर से आप पर कोई गंभीर आरोप लग सकता है, जिसकी वजह से आपकी माता को कष्ट हो सकता है। उनका स्वास्थ्य खराब हो सकता है। आपके जीवनसाथी का व्यवहार भी आपके प्रति परिवर्तित हो सकता है, जिसकी वजह से आप मानसिक रूप से परेशान हो सकते हैं। आप गलत कार्यों की तरफ आकृष्ट हो सकते हैं। सत्तापक्ष से भी दण्ड मिल सकता है। इस चरण में आपके धनोपार्जन के सारे प्रयास विफल हो सकते हैं, और जो कुछ भी आप कमायेंगे वो सब भोग–विलास में गवां सकते हैं।

यदि आपकी आयु 34 से 47 वर्ष के मध्य है और राहु भी अशुभ है, तो आपको कारावास भी हो सकता है। यदि मंगल अशुभ है, तो किसी दुर्घटना में अपना कोई अंग भी गंवा सकते हैं। इस दौरान आप अपने भाइयों से अलग

हो सकते हैं और जो कुछ धन बंटवारे से मिलेगा वो फालतू के कार्यों में खर्च कर सकते हैं। आप उचित निर्णय लेने में अक्षम हो सकते हैं। लोगों के प्रति आपका व्यवहार भी बदल सकता है, जिसकी वजह से आपके अपने लो भी आपसे बात करना पसंद नहीं कर सकते हैं। आपमें धर्म के प्रति आस्था कम हो सकती है। आपको धार्मिक कार्यों में मन लगाना चाहिए।

अष्टम शनि

03/06/2027 – 20/10/2027

गोचर राशि – मेष

समयावधि :

0.0 y.4.0 m.18 d.

इस चरण का फल आपके लिए अधिक अशुभ नहीं हो सकता है। यदि आपकी कुण्डली में शनि किसी शुभ भाव में बैठा है, तो आपको शुभ फल अधिक प्राप्त हो सकता है। आपको काफी शारीरिक कष्ट हो सकते हैं, जो कि मृत्युतुल्य हो सकते हैं। आपके भाई–बहनों को भी कष्ट हो सकता है। आप भी रोग ग्रस्त हो सकते हैं। अर्श, भगंदर आदि होने की अधिक संभावना है। आप निम्न तबके की महिलाओं के सम्पक्र में आ सकते हैं, जिससे आप समाज में अपमानित हो सकते हैं। आपको अपना चरित्र एवं व्यवहार साफ रखना चाहिए। आपका अवैध संबंध बहुत जल्द लोगों के सामने आ सकता है और आपके परिवार में क्लेश हो सकता है।

यदि आप विद्यार्थी हैं, तो आपको अपने समाज पर ध्यान देना चाहिए, क्योंकि इस चरण के दौरान आपके भटकने की काफी संभावना है। अध्ययन के क्षेत्र में आपको सफलता प्राप्त हो सकती है। आपको अपने खर्चे पर नियंत्रण रखना चाहिए और जितना पैसा घर से मिलता है, उतने में ही काम चलायें। अधिक सपने ना देंखें। आप नित्य कई गलतियां कर सकते हैं बाद में आपको पछतावा भी होगा, लेकिन ग्रहों के प्रभाव से पुनः वहीं गलतियां दोहराते रहेंगे। आप अपने कार्यों से ही अपने लोगों में हंसी के पात्र बन सकते हैं। आप अपने कार्यों को कार्यान्वित करने के लिए फरेब का सहारा भी ले सकते हैं। लोग आपकी बातों पर विश्वास नहीं कर सकते हैं। आपके अपने लोग भी आपका साथ छोड़ सकते हैं। आपके व्यवहार में आए परिवर्तन से आपके दोस्त भी दुश्मन बन सकते हैं। आपके पुराने शत्रु आपके कामों में बाधा पहुंचा सकते हैं। आपका कोई शत्रु आपसे मित्रता कर आपसे गलत कार्य करवा सकता है, सचेत रहें।

यदि आप व्यवसाय करते हैं, तो आपके कपटपूर्ण वयवहार के कारण कई लोग आपके साथ व्यापार बंद कर सकते हैं। आपका मन अपने कारोबार में नहीं लग सकता है। आप आलसी हो सकते हैं, जिसकी वजह से आप व्यवसाय में पिछड़ सकते हैं तथा आपके कर्मचारी इसका लाभ उठा सकते हैं। व्यापार में आर्थिक संकट आ सकता है और आप कर्जदारों से मुंह छिपा सकते हैं। यदि आप नौकरी करते हैं, तो शारीरिक अक्षमता के कारण आपका मन अपने काम में नहीं लग सकता है। आप समय पर अपना काम पूरा नहीं कर पाएंगे, जिससे आपके वरिष्ठ अधिकारी आपसे नाराज हो सकते हैं और आपका स्थानान्तरण भी हो सकता है। आपको कोई दण्ड भी मिल सकता है। इस समय आप सिर्फ अपना स्वार्थ देख सकते हैं। आप सिर्फ धनोपार्जन के बारे में सोच सकते

हैं। आप रिश्वत आदि भी लेना शुरू कर सकते हैं, लेकिन यह सबके सामने आ जाएगा। आपके सहयोगी ही आपको रंगे हाथ पकड़वा सकते हैं।

यदि आपकी आयु 34 से 46 वर्ष के मध्य है, तो आपको अधिक कष्ट हो सकता है। इस चरण के दौरान आप अधिकांश समय अस्वस्थ ही रहेंगे, लेकिन आप जब स्वस्थ होंगे, तो आप पर काम–वासना हावी रहेगा। आप अप्राकृतिक संबंध भी बना सकते हैं, जिससे आपको गुप्त यौन रोग होने का खतरा हो सकता है।

अष्टम शनि

23/02/2028 – 08/08/2029

गोचर राशि – मेष

समयावधि :

1.0 y.5.0 m.14 d.

इस चरण का फल आपके लिए अधिक अशुभ नहीं हो सकता है। यदि आपकी कुण्डली में शनि किसी शुभ भाव में बैठा है, तो आपको शुभ फल अधिक प्राप्त हो सकता है। आपको काफी शारीरिक कष्ट हो सकते हैं, जो कि मृत्युतुल्य हो सकते हैं। आपके भाई–बहनों को भी कष्ट हो सकता है। आप भी रोग ग्रस्त हो सकते हैं। अर्श, भगंदर आदि होने की अधिक संभावना है। आप निम्न तबके की महिलाओं के सम्पक्र में आ सकते हैं, जिससे आप समाज में अपमानित हो सकते हैं। आपको अपना चरित्र एवं व्यवहार साफ रखना चाहिए। आपका अवैध संबंध बहुत जल्द लोगों के सामने आ सकता है और आपके परिवार में क्लेश हो सकता है।

यदि आप विद्यार्थी हैं, तो आपको अपने समाज पर ध्यान देना चाहिए, क्योंकि इस चरण के दौरान आपके भटकने की काफी संभावना है। अध्ययन के क्षेत्र में आपको सफलता प्राप्त हो सकती है। आपको अपने खर्चे पर नियंत्रण रखना चाहिए और जितना पैसा घर से मिलता है, उतने में ही काम चलायें। अधिक सपने ना देंखें। आप नित्य कई गलतियां कर सकते हैं बाद में आपको पछतावा भी होगा, लेकिन ग्रहों के प्रभाव से पुनः वहीं गलतियां दोहराते रहेंगे। आप अपने कार्यों से ही अपने लोगों में हंसी के पात्र बन सकते हैं। आप अपने कार्यों को कार्यान्वित करने के लिए फरेब का सहारा भी ले सकते हैं। लोग आपकी बातों पर विश्वास नहीं कर सकते हैं। आपके अपने लोग भी आपका साथ छोड़ सकते हैं। आपके व्यवहार में आए परिवर्तन से आपके दोस्त भी दुश्मन बन सकते हैं। आपके पुराने शत्रु आपके कामों में बाधा पहुंचा सकते हैं। आपका कोई शत्रु आपसे मित्रता कर आपसे गलत कार्य करवा सकता है, सचेत रहें।

यदि आप व्यवसाय करते हैं, तो आपके कपटपूर्ण वयवहार के कारण कई लोग आपके साथ व्यापार बंद कर सकते हैं। आपका मन अपने कारोबार में नहीं लग सकता है। आप आलसी हो सकते हैं, जिसकी वजह से आप व्यवसाय में पिछड़ सकते हैं तथा आपके कर्मचारी इसका लाभ उठा सकते हैं। व्यापार में आर्थिक संकट आ सकता है और आप कर्जदारों से मुंह छिपा सकते हैं। यदि आप नौकरी करते हैं, तो शारीरिक अक्षमता के कारण आपका मन अपने काम में नहीं लग सकता है। आप समय पर अपना काम पूरा नहीं कर पाएंगे, जिससे आपके

वरिष्ठ अधिकारी आपसे नाराज हो सकते हैं और आपका स्थानान्तरण भी हो सकता है। आपको कोई दण्ड भी मिल सकता है। इस समय आप सिर्फ अपना स्वार्थ देख सकते हैं। आप सिर्फ धनोपार्जन के बारे में सोच सकते हैं। आप रिश्वत आदि भी लेना शुरू कर सकते हैं, लेकिन यह सबके सामने आ जाएगा। आपके सहयोगी ही आपको रंगे हाथ पकड़वा सकते हैं।

यदि आपकी आयु 34 से 46 वर्ष के मध्य है, तो आपको अधिक कष्ट हो सकता है। इस चरण के दौरान आप अधिकांश समय अस्वस्थ ही रहेंगे, लेकिन आप जब स्वस्थ होंगे, तो आप पर काम–वासना हावी रहेगा। आप अप्राकृतिक संबंध भी बना सकते हैं, जिससे आपको गुप्त यौन रोग होने का खतरा हो सकता है।

अष्टम शनि

05/10/2029 – 17/04/2030

गोचर राशि – मेष

समयावधि :

0.0 y.6.0 m.12 d.

इस चरण का फल आपके लिए अधिक अशुभ नहीं हो सकता है। यदि आपकी कुण्डली में शनि किसी शुभ भाव में बैठा है, तो आपको शुभ फल अधिक प्राप्त हो सकता है। आपको काफी शारीरिक कष्ट हो सकते हैं, जो कि मृत्युतुल्य हो सकते हैं। आपके भाई–बहनों को भी कष्ट हो सकता है। आप भी रोग ग्रस्त हो सकते हैं। अर्श, भगंदर आदि होने की अधिक संभावना है। आप निम्न तबके की महिलाओं के सम्पक्र में आ सकते हैं, जिससे आप समाज में अपमानित हो सकते हैं। आपको अपना चरित्र एवं व्यवहार साफ रखना चाहिए। आपका अवैध संबंध बहुत जल्द लोगों के सामने आ सकता है और आपके परिवार में क्लेश हो सकता है।

यदि आप विद्यार्थी हैं, तो आपको अपने समाज पर ध्यान देना चाहिए, क्योंकि इस चरण के दौरान आपके भटकने की काफी संभावना है। अध्ययन के क्षेत्र में आपको सफलता प्राप्त हो सकती है। आपको अपने खर्चे पर नियंत्रण रखना चाहिए और जितना पैसा घर से मिलता है, उतने में ही काम चलायें। अधिक सपने ना देंखें। आप नित्य कई गलतियां कर सकते हैं बाद में आपको पछतावा भी होगा, लेकिन ग्रहों के प्रभाव से पुनः वहीं गलतियां दोहराते रहेंगे। आप अपने कार्यों से ही अपने लोगों में हंसी के पात्र बन सकते हैं। आप अपने कार्यों को कार्यान्वित करने के लिए फरेब का सहारा भी ले सकते हैं। लोग आपकी बातों पर विश्वास नहीं कर सकते हैं। आपके अपने लोग भी आपका साथ छोड़ सकते हैं। आपके व्यवहार में आए परिवर्तन से आपके दोस्त भी दुश्मन बन सकते हैं। आपके पुराने शत्रु आपके कामों में बाधा पहुंचा सकते हैं। आपका कोई शत्रु आपसे मित्रता कर आपसे गलत कार्य करवा सकता है, सचेत रहें।

यदि आप व्यवसाय करते हैं, तो आपके कपटपूर्ण वयवहार के कारण कई लोग आपके साथ व्यापार बंद कर सकते हैं। आपका मन अपने कारोबार में नहीं लग सकता है। आप आलसी हो सकते हैं, जिसकी वजह से आप व्यवसाय में पिछड़ सकते हैं तथा आपके कर्मचारी इसका लाभ उठा सकते हैं। व्यापार में आर्थिक संकट आ

सकता है और आप कर्जदारों से मुंह छिपा सकते हैं। यदि आप नौकरी करते हैं, तो शारीरिक अक्षमता के कारण आपका मन अपने काम में नहीं लग सकता है। आप समय पर अपना काम पूरा नहीं कर पाएंगे, जिससे आपके वरिष्ठ अधिकारी आपसे नाराज हो सकते हैं और आपका स्थानान्तरण भी हो सकता है। आपको कोई दण्ड भी मिल सकता है। इस समय आप सिर्फ अपना स्वार्थ देख सकते हैं। आप सिर्फ धनोपार्जन के बारे में सोच सकते हैं। आप रिश्वत आदि भी लेना शुरू कर सकते हैं, लेकिन यह सबके सामने आ जाएगा। आपके सहयोगी ही आपको रंगे हाथ पकड़वा सकते हैं।

यदि आपकी आयु 34 से 46 वर्ष के मध्य है, तो आपको अधिक कष्ट हो सकता है। इस चरण के दौरान आप अधिकांश समय अस्वस्थ ही रहेंगे, लेकिन आप जब स्वस्थ होंगे, तो आप पर काम–वासना हावी रहेगा। आप अप्राकृतिक संबंध भी बना सकते हैं, जिससे आपको गुप्त यौन रोग होने का खतरा हो सकता है।

तृतिय चक्र

प्रथम ढ़ैय्या

27/08/2036 – 22/10/2038

गोचर राशि – सिहं

समयावधि :

2.0 y.1.0 m.25 d.

आपके लिए यह चरण घातक हो सकता है। इस चरण के आरम्भ से ही आपको मानसिक तनाव रह सकता है। तनाव का कारण आपका संतान पक्ष हो सकता है। आपकी संतान आपके हर काम का विरोध करेगी। आपके लिए नित्य नई समस्यायें पैदा करेंगी। आप अपनी संतान की बीमारी पर भी काफी पैसा खर्च कर सकते हैं। आप अपने कार्यों से अपनी संतान के कार्यों में बाधायें उत्पन्न कर सकते हैं। आपकी संतान आपके विचारों से सहमत नहीं हो सकती है। अपनी संतान के कारण आपको कष्ट हो सकता है। आपको अपनी संतान पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

इस समय आपके शत्रु काफी सक्रिय होंगे एवं आपको हानि पहुंचाने की प्रयास करेंगे एवं अपने प्रयासों में वे सफल भी होंगे। आप कई अप्रत्याशित खर्चे कर सकते हैं, जिसकी आपको उम्मीद भी नहीं होगी। आप कई लम्बी यात्राएं कर सकते हैं, जिनसे कोई लाभ होने की संभावना नहीं है। नित्य नई आने वाली परेशानियों के कारण धर्म एवं ईश्वर पर से आपका विश्वास उठ सकता है। इस समय आप ना किसी को उधार दें और ना उधार लें, इससे कई समस्याओं से बच सकते हैं। आप उदर कष्ट एवं त्वचा संबंधित ऐसे रोगों से पीड़ित हो सकते हैं, जो लम्बे समय तक चल सकते हैं। भाग्य आपका साथ नहीं दे सकता है।

आपको मानसिक रूप से मजबूत बनना चाहिए। भावना में बहकर कोई ऐसा काम ना करें, जिससे आपको अपमानित होना पड़े। आपके मामा–मौसी को भी कई समस्यओं का सामना करना पड़ सकता है। आपके कार्यों में

काफी बाधायें आ सकती हैं। आप आर्थिक रूप से इतने परेशान हो सकते हैं, कि धनोपार्जन के लिए किसी दूसरे शहर में जा सकते हैं, लेकिन वहां भी आपको सफलता प्राप्त नहीं हो सकती है। आप भोग–विलास एवं परिधान पर काफी खर्च कर सकते हैं। यदि आपकी आयु 30 से 46 के मध्य है, तो आपको पुत्र की प्राप्ति हो सकती है। मानसिक रूप से परेशान रहने के कारण आपका मस्तिष्क सही दिशा में कार्य नहीं कर सकता है। खुद को सफल करने के लिए आप फालतू के कार्यों पर अत्यधिक खर्चे कर सकते हैं, जिसका आपको बाद में पछतावा हो सकता है।

इस चरण के मध्य में आपको कुछ आराम मिल सकता है। आप अपनी मनोशक्ति के बल पर कुछ सफलताएं प्राप्त कर सकते हैं। कुछ समय के लिए आपकी आर्थिक स्थिति भी सुधर सकती है और आपके कुछ बिगड़े काम बन सकते हैं। लेकिन यह समय थोड़ी देर के लिए ही आएगा। इसके बाद आपके शत्रु पहले की तुलना में अधिक सक्रिय होंगे और आपको हानि पहुंचाने का प्रयास करेंगे, लेकिन वे सफल नहीं हो सकते हैं। यदि आप नौकरी करते हैं, तो आपके अधिकारी आपसे नाराज रह सकते हैं और आपको कष्ट पहुंचने का प्रयास कर सकते हैं। अपको सतक्र रहना चाहिए और अतिविश्वास में नहीं आना चाहिए। अतिविश्वास के कारण आप चोरी के शिकार हो सकते हैं, विशेषकर यात्रा के दौरान। इस समय आपको अपने ही कामों से अधिक हानि हो सकती है। अपने भाइयों से बंटवारा भी हो सकता है। यदि आपकी कुण्डली में किसी शुभ ग्रह की दशा चल रही है, तो अशुभ फलों में कुछ कमी हो सकती है। चरण के अन्त समय में लाभ के मौके प्राप्त होंगे, उनका पूरा फायदा उठायें।

प्रथम ढ़ैय्या
05/04/2039 – 13/07/2039
गोचर राशि – सिहं
समयावधि :
0.0 y.3.0 m.8 d.

आपके लिए यह चरण घातक हो सकता है। इस चरण के आरम्भ से ही आपको मानसिक तनाव रह सकता है। तनाव का कारण आपका संतान पक्ष हो सकता है। आपकी संतान आपके हर काम का विरोध करेगी। आपके लिए नित्य नई समस्यायें पैदा करेंगी। आप अपनी संतान की बीमारी पर भी काफी पैसा खर्च कर सकते हैं। आप अपने कार्यों से अपनी संतान के कार्यों में बाधायें उत्पन्न कर सकते हैं। आपकी संतान आपके विचारों से सहमत नहीं हो सकती है। अपनी संतान के कारण आपको कष्ट हो सकता है। आपको अपनी संतान पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

इस समय आपके शत्रु काफी सक्रिय होंगे एवं आपको हानि पहुंचाने की प्रयास करेंगे एवं अपने प्रयासों में वे सफल भी होंगे। आप कई अप्रत्याशित खर्चे कर सकते हैं, जिसकी आपको उम्मीद भी नहीं होगी। आप कई लम्बी यात्राएं कर सकते हैं, जिनसे कोई लाभ होने की संभावना नहीं है। नित्य नई आने वाली परेशानियों के कारण धर्म एवं ईश्वर पर से आपका विश्वास उठ सकता है। इस समय आप ना किसी को उधार दें और ना उधार लें, इससे

कई समस्याओं से बच सकते हैं। आप उदर कष्ट एवं त्वचा संबंधित ऐसे रोगों से पीड़ित हो सकते हैं, जो लम्बे समय तक चल सकते हैं। भाग्य आपका साथ नहीं दे सकता है।

आपको मानसिक रूप से मजबूत बनना चाहिए। भावना में बहकर कोई ऐसा काम ना करें, जिससे आपको अपमानित होना पड़े। आपके मामा–मौसी को भी कई समस्यओं का सामना करना पड़ सकता है। आपके कार्यों में काफी बाधायें आ सकती हैं। आप आर्थिक रूप से इतने परेशान हो सकते हैं, कि धनोपार्जन के लिए किसी दूसरे शहर में जा सकते हैं, लेकिन वहां भी आपको सफलता प्राप्त नहीं हो सकती है। आप भोग–विलास एवं परिधान पर काफी खर्च कर सकते हैं। यदि आपकी आयु 30 से 46 के मध्य है, तो आपको पुत्र की प्राप्ति हो सकती है। मानसिक रूप से परेशान रहने के कारण आपका मस्तिष्क सही दिशा में कार्य नहीं कर सकता है। खुद को सफल करने के लिए आप फालतू के कार्यों पर अत्यधिक खर्चे कर सकते हैं, जिसका आपको बाद में पछतावा हो सकता है।

इस चरण के मध्य में आपको कुछ आराम मिल सकता है। आप अपनी मनोशक्ति के बल पर कुछ सफलताएं प्राप्त कर सकते हैं। कुछ समय के लिए आपकी आर्थिक स्थिति भी सुधर सकती है और आपके कुछ बिगड़े काम बन सकते हैं। लेकिन यह समय थोड़ी देर के लिए ही आएगा। इसके बाद आपके शत्रु पहले की तुलना में अधिक सक्रिय होंगे और आपको हानि पहुंचाने का प्रयास करेंगे, लेकिन वे सफल नहीं हो सकते हैं। यदि आप नौकरी करते हैं, तो आपके अधिकारी आपसे नाराज रह सकते हैं और आपको कष्ट पहुंचने का प्रयास कर सकते हैं। अपको सतक्र रहना चाहिए और अतिविश्वास में नहीं आना चाहिए। अतिविश्वास के कारण आप चोरी के शिकार हो सकते हैं, विशेषकर यात्रा के दौरान। इस समय आपको अपने ही कामों से अधिक हानि हो सकती है। अपने भाइयों से बंटवारा भी हो सकता है। यदि आपकी कुण्डली में किसी शुभ ग्रह की दशा चल रही है, तो अशुभ फलों में कुछ कमी हो सकती है। चरण के अन्त समय में लाभ के मौके प्राप्त होंगे, उनका पूरा फायदा उठायें।

द्वितिय ढ़ैय्या

22/10/2038 – 05/04/2039

गोचर राशि – कन्या

समयावधि :

0.0 y.5.0 m.13 d.

यह चरण आपके लिए घातक हो सकता है। यदि आपकी कुण्डली में किसी शुभ ग्रह की दशा चल रही है, तभी आपको कुछ शुभ फल प्राप्त हो सकता है। इस चरण की शुरूआत से ही आपको अशुभ संकेत मिलने लगेंगे। आप मानसिक रोग, उन्माद, चर्मरोग, वात आदि से पीड़ित रह सकते हैं। यदि बचपन में ही यह चरण आता है, तो आपको बालारिष्ठ हो सकता है। आपकी चिन्ता खत्म भी नहीं होगी, कि दूसरी नई चिन्ता आपके सामने होगी। आप मानसिक रूप से व्यथित हो सकते हैं एवं भले–बूरे की पहचान खो सकते हैं। काम–वासना आप पर हावी रहेगा। इसके लिए आप किसी भी हद तक जा सकते हैं और समाज में अपमानित हो सकते हैं। आप काफी

स्वार्थी हो सकते हैं और हर काम में पहले अपना स्वार्थ देखेंगे।

यदि इस समय आपकी आयु 34 से 47 वर्ष के मध्य है, तो आपको अधिक कष्ट प्राप्त हो सकते हैं। यदि आप नौकरी करते हैं, तो आप नित्य नई समस्याओं का सामना कर सकते हैं। आपके सहयोगी आपके खिलाफ हो सकते हैं और आपकी शिकायत वरिष्ठ अधिकारियों से कर सकते हैं। इससे आपके वरिष्ठ अधिकारी भी आपसे नाराज हो सकते हैं और आप पर कोई कार्यवाई कर सकते हैं। परेशानी में आप कोई गलत काम कर सकते हैं और आपको स्थानान्तरित या निष्कासित किया जा सकता है। आपको हर काम सोच–विचार कर ही करना चाहिए, अन्यथा समस्या से घिर सकते हैं। आपके कई कार्य बनते–बनते बिगड़ सकते हैं। आपको अपनी वाणी पर संयम एवं क्रोध पर नियंत्रण रखना चाहिए।

आपको पूजा–पाठ की तरफ अपना मन लगाना चाहिए। यदि आप व्यवसाय करते हैं, तो आग या चोरी के माध्यम से आपको हानि होने की संभावना है। आपका पैसा व्यापार में फँस सकता है। पैसा मांगने पर लोग टाल–मटोल कर सकते हैं। धीरे–धीरे व्यापार में हानि बढ़ती जाएगी और आपका मन व्यापार से हट सकता है। आपके कुछ सहयोगी भी शत्रुता निभाने की ताक में हो सकते हैं, इसलिए आप सावधान रहें। ईश्वर की आराधना करें। इस समय आपके व्यवसाय पर कोई सरकारी छापा पड़ सकता है और आप पर आर्थिक दण्ड लग सकता है। यदि आप साझेदारी में व्यवसाय कर रहे हैं, तो आपके साझेदार आपको धोखा दे सकते हैं। मानसिक परेशानियों के कारण आप अपने व्यवसाय पर ठीक से ध्यान नहीं दे पायेंगे, जिसका फायदा आपके कर्मचारी चोरी आदि कर के उठा सकते हैं।

आपके पिता कुछ अस्वस्थ हो सकते हैं, और उनकी शल्य क्रिया होने की भी कुछ संभावना है। आपको संचार के माध्यम से कुछ अशुभ समाचार प्राप्त हो सकता है, जिससे आप अधिक परेशान हो सकते हैं। अपने किसी मित्र से लिया कोई पुराना कर्ज आप चुकाने की कोशिश कर सकते हैं, लेकिन आर्थिक स्थिति खराब होने के कारण आप इसमे सफल नहीं हो सकते हैं। इतना होने के बावजूद आपमें आत्मबल की कमी नहीं होगी। आपके शत्रु आपके लिए बाधायें उत्पन्न कर सकते हैं, लेकिन आप उनकी परवाह ना करते हुए काम में लगे रहें, आपको निश्चित रूप से सफलता प्राप्त होगी।

यदि आप पत्रकारिता, लेखन, समीक्षा या संपादन से संबंधित कार्य करते हैं, तो काफी सफलता प्राप्त कर सकते हैं। आपको दूसरे व्यक्तियों की सोच की चिंता नहीं हो सकती है। यदि आप चिकित्सा या केमिस्ट के क्षेत्र में हैं, तो इस समय आपको हानि हो सकती है। आपकी दी हुई दवा किसी को विपरित प्रतिक्रिया/रियेक्शन कर सकती है। विशेष सावधानी बरतें। यदि आप समाज सेवा या परोपकार में लिप्त हैं, तो आपको काफी उत्तम फल प्राप्त हो सकता है। आपको इस चरण के दौरान मानसिक स्थिरता बनाये रखनी चाहिए।

द्वितिय ढ़ैय्या

13/07/2039 – 28/01/2041

गोचर राशि – कन्या

समयावधि :

1.0 y.6.0 m.17 d.

यह चरण आपके लिए घातक हो सकता है। यदि आपकी कुण्डली में किसी शुभ ग्रह की दशा चल रही है, तभी आपको कुछ शुभ फल प्राप्त हो सकता है। इस चरण की शुरूआत से ही आपको अशुभ संकेत मिलने लगेंगे। आप मानसिक रोग, उन्माद, चर्मरोग, वात आदि से पीड़ित रह सकते हैं। यदि बचपन में ही यह चरण आता है, तो आपको बालारिष्ठ हो सकता है। आपकी चिन्ता खत्म भी नहीं होगी, कि दूसरी नई चिन्ता आपके सामने होगी। आप मानसिक रूप से व्यथित हो सकते हैं एवं भले–बूरे की पहचान खो सकते हैं। काम–वासना आप पर हावी रहेगा। इसके लिए आप किसी भी हद तक जा सकते हैं और समाज में अपमानित हो सकते हैं। आप काफी स्वार्थी हो सकते हैं और हर काम में पहले अपना स्वार्थ देखेंगे।

यदि इस समय आपकी आयु 34 से 47 वर्ष के मध्य है, तो आपको अधिक कष्ट प्राप्त हो सकते हैं। यदि आप नौकरी करते हैं, तो आप नित्य नई समस्याओं का सामना कर सकते हैं। आपके सहयोगी आपके खिलाफ हो सकते हैं और आपकी शिकायत वरिष्ठ अधिकारियों से कर सकते हैं। इससे आपके वरिष्ठ अधिकारी भी आपसे नाराज हो सकते हैं और आप पर कोई कार्यवाई कर सकते हैं। परेशानी में आप कोई गलत काम कर सकते हैं और आपको स्थानान्तरित या निष्कासित किया जा सकता है। आपको हर काम सोच–विचार कर ही करना चाहिए, अन्यथा समस्या से घिर सकते हैं। आपके कई कार्य बनते–बनते बिगड़ सकते हैं। आपको अपनी वाणी पर संयम एवं क्रोध पर नियंत्रण रखना चाहिए।

आपको पूजा–पाठ की तरफ अपना मन लगाना चाहिए। यदि आप व्यवसाय करते हैं, तो आग या चोरी के माध्यम से आपको हानि होने की संभावना है। आपका पैसा व्यापार में फँस सकता है। पैसा मांगने पर लोग टाल–मटोल कर सकते हैं। धीरे–धीरे व्यापार में हानि बढ़ती जाएगी और आपका मन व्यापार से हट सकता है। आपके कुछ सहयोगी भी शत्रुता निभाने की ताक में हो सकते हैं, इसलिए आप सावधान रहें। ईश्वर की आराधना करें। इस समय आपके व्यवसाय पर कोई सरकारी छापा पड़ सकता है और आप पर आर्थिक दण्ड लग सकता है। यदि आप साझेदारी में व्यवसाय कर रहे हैं, तो आपके साझेदार आपको धोखा दे सकते हैं। मानसिक परेशानियों के कारण आप अपने व्यवसाय पर ठीक से ध्यान नहीं दे पायेंगे, जिसका फायदा आपके कर्मचारी चोरी आदि कर के उठा सकते हैं।

आपके पिता कुछ अस्वस्थ हो सकते हैं, और उनकी शल्य क्रिया होने की भी कुछ संभावना है। आपको संचार के माध्यम से कुछ अशुभ समाचार प्राप्त हो सकता है, जिससे आप अधिक परेशान हो सकते हैं। अपने किसी मित्र से लिया कोई पुराना कर्ज आप चुकाने की कोशिश कर सकते हैं, लेकिन आर्थिक स्थिति खराब होने के कारण आप इसमे सफल नहीं हो सकते हैं। इतना होने के बावजूद आपमें आत्मबल की कमी नहीं होगी। आपके शत्रु आपके लिए बाधायें उत्पन्न कर सकते हैं, लेकिन आप उनकी परवाह ना करते हुए काम में लगे रहें, आपको निश्चित

रूप से सफलता प्राप्त होगी।

यदि आप पत्रकारिता, लेखन, समीक्षा या संपादन से संबंधित कार्य करते हैं, तो काफी सफलता प्राप्त कर सकते हैं। आपको दूसरे व्यक्तियों की सोच की चिंता नहीं हो सकती है। यदि आप चिकित्सा या केमिस्ट के क्षेत्र में हैं, तो इस समय आपको हानि हो सकती है। आपकी दी हुई दवा किसी को विपरित प्रतिक्रिया/रियेक्शन कर सकती है। विशेष सावधानी बरतें। यदि आप समाज सेवा या परोपकार में लिप्त हैं, तो आपको काफी उत्तम फल प्राप्त हो सकता है। आपको इस चरण के दौरान मानसिक स्थिरता बनाये रखनी चाहिए।

द्वितिय ढ़ैय्या

06/02/2041 – 26/09/2041

गोचर राशि – कन्या

समयावधि :

0.0 y.7.0 m.19 d.

यह चरण आपके लिए घातक हो सकता है। यदि आपकी कुण्डली में किसी शुभ ग्रह की दशा चल रही है, तभी आपको कुछ शुभ फल प्राप्त हो सकता है। इस चरण की शुरूआत से ही आपको अशुभ संकेत मिलने लगेंगे। आप मानसिक रोग, उन्माद, चर्मरोग, वात आदि से पीड़ित रह सकते हैं। यदि बचपन में ही यह चरण आता है, तो आपको बालारिष्ठ हो सकता है। आपकी चिन्ता खत्म भी नहीं होगी, कि दूसरी नई चिन्ता आपके सामने होगी। आप मानसिक रूप से व्यथित हो सकते हैं एवं भले–बूरे की पहचान खो सकते हैं। काम–वासना आप पर हावी रहेगा। इसके लिए आप किसी भी हद तक जा सकते हैं और समाज में अपमानित हो सकते हैं। आप काफी स्वार्थी हो सकते हैं और हर काम में पहले अपना स्वार्थ देखेंगे।

यदि इस समय आपकी आयु 34 से 47 वर्ष के मध्य है, तो आपको अधिक कष्ट प्राप्त हो सकते हैं। यदि आप नौकरी करते हैं, तो आप नित्य नई समस्याओं का सामना कर सकते हैं। आपके सहयोगी आपके खिलाफ हो सकते हैं और आपकी शिकायत वरिष्ठ अधिकारियों से कर सकते हैं। इससे आपके वरिष्ठ अधिकारी भी आपसे नाराज हो सकते हैं और आप पर कोई कार्यवाई कर सकते हैं। परेशानी में आप कोई गलत काम कर सकते हैं और आपको स्थानान्तरित या निष्कासित किया जा सकता है। आपको हर काम सोच–विचार कर ही करना चाहिए, अन्यथा समस्या से घिर सकते हैं। आपके कई कार्य बनते–बनते बिगड़ सकते हैं। आपको अपनी वाणी पर संयम एवं क्रोध पर नियंत्रण रखना चाहिए।

आपको पूजा–पाठ की तरफ अपना मन लगाना चाहिए। यदि आप व्यवसाय करते हैं, तो आग या चोरी के माध्यम से आपको हानि होने की संभावना है। आपका पैसा व्यापार में फँस सकता है। पैसा मांगने पर लोग टाल–मटोल कर सकते हैं। धीरे–धीरे व्यापार में हानि बढ़ती जाएगी और आपका मन व्यापार से हट सकता है। आपके कुछ सहयोगी भी शत्रुता निभाने की ताक में हो सकते हैं, इसलिए आप सावधान रहें। ईश्वर की आराधना करें। इस समय आपके व्यवसाय पर कोई सरकारी छापा पड़ सकता है और आप पर आर्थिक दण्ड लग सकता है। यदि

आप साझेदारी में व्यवसाय कर रहे हैं, तो आपके साझेदार आपको धोखा दे सकते हैं। मानसिक परेशानियों के कारण आप अपने व्यवसाय पर ठीक से ध्यान नहीं दे पायेंगे, जिसका फायदा आपके कर्मचारी चोरी आदि कर के उठा सकते हैं।

आपके पिता कुछ अस्वस्थ हो सकते हैं, और उनकी शल्य क्रिया होने की भी कुछ संभावना है। आपको संचार के माध्यम से कुछ अशुभ समाचार प्राप्त हो सकता है, जिससे आप अधिक परेशान हो सकते हैं। अपने किसी मित्र से लिया कोई पुराना कर्ज आप चुकाने की कोशिश कर सकते हैं, लेकिन आर्थिक स्थिति खराब होने के कारण आप इसमे सफल नहीं हो सकते हैं। इतना होने के बावजूद आपमें आत्मबल की कमी नहीं होगी। आपके शत्रु आपके लिए बाधायें उत्पन्न कर सकते हैं, लेकिन आप उनकी परवाह ना करते हुए काम में लगे रहें, आपको निश्चित रूप से सफलता प्राप्त होगी।

यदि आप पत्रकारिता, लेखन, समीक्षा या संपादन से संबंधित कार्य करते हैं, तो काफी सफलता प्राप्त कर सकते हैं। आपको दूसरे व्यक्तियों की सोच की चिंता नहीं हो सकती है। यदि आप चिकित्सा या केमिस्ट के क्षेत्र में हैं, तो इस समय आपको हानि हो सकती है। आपकी दी हुई दवा किसी को विपरित प्रतिक्रिया/रियेक्शन कर सकती है। विशेष सावधानी बरतें। यदि आप समाज सेवा या परोपकार में लिप्त हैं, तो आपको काफी उत्तम फल प्राप्त हो सकता है। आपको इस चरण के दौरान मानसिक स्थिरता बनाये रखनी चाहिए।

तृतिय ढ़ैय्या
28/01/2041 – 06/02/2041
गोचर राशि – तुला
समयावधि :
0.0 y.0.0 m.9 d.

आपको इस चरण में मिश्रित फल प्राप्त होगा। फल का स्वभाव आपकी कुण्डली में चल रही महादशा पर अधिक निर्भर करेगा। शुरू में आपको अशुभ फल प्राप्त हो सकते हैं, लेकिन बाद में शुभ फल प्राप्त होने लगेंगे। आप कोई भी काम काफी सोच–विचार के बाद ही करें। अपनी वाणी पर नियंत्रण रखें एवं कोई भी काम जल्दबाजी में ना करें, हानि हो सकती है। आप पर काम का बोझ बढ़ सकता है, लेकिन यह भविष्य के लिए फायदेमंद होगा। इस समय आपको धन लाभ हो सकता है। यदि आप पर कोई कर्ज है, तो आप उसे चुकाने में सक्षम होंगे। आप भूमि, भवन या वाहन खरीद सकते हैं। अपनी माता से कोई उपहार प्राप्त हो सकता है। अपने विरोधियों से सावधान रहें।

यदि आप व्यवसाय करते हैं, तो अपनी मेहनत एवं दिमाग से तरक्की करेंगे। आपको अपने व्यवसाय में चोरी होने की काफी संभावना है। अपने कर्मचारियों से सावधान रहें। अधिक कार्यभार होने के कारण आप अपने परिवार पर पर्याप्त समय नहीं दे सकते हैं, जिसकी वजह से आपके परिवार वाले आपसे नाराज हो सकते हैं। यदि आप नौकरी करते हैं, तो मनचाहे स्थान पर अपना स्थानान्तरण करवा सकते हैं। आपके अधिकारी आपसे खुश रह

सकते हैं, लेकिन आपके सहयोगी उन्हें भड़का सकते हैं। किसी भी कागज पर बिना पढ़े हस्ताक्षर ना करें। यदि आप आर्थिक लेन–देन के क्षेत्र में हैं, तो आपको काफी सावधान रहना चाहिए, आप पर रिश्वत का आरोप लग सकता है। नेताओं से दूर रहें, उन्हें किसी भी तरह से नाराज ना करें।

आप परोपकार एवं धार्मिक कार्यों में बढ़–चढ़ कर हिस्सा लेंगे, जिससे आपको समाज में सम्मान मिलेगा। आपको धार्मिक साहित्य के अध्ययन में रूचि हो सकती है। आप धार्मिक स्थल की यात्रा भी कर सकते हैं। यदि आप अभी विद्यार्थी हैं, तो खूब मेहनत करें, अन्यथा परीक्षा में असफल हो सकते हैं। चरण के मध्य काल में आपकी माता अस्वस्थ रह सकती हैं, जिसकी वजह से आप काम पर ध्यान नहीं दे पाएंगे। इससे आपको आर्थिक हानि हो सकती है। कुछ समय बाद आपकी माता स्वस्थ हो जाएंगी और आप अपने काम पर पुनः ध्यान देने लगेंगे। अधिक कार्य होने के कारण आप घर पर समय नहीं दे पाएंगे, जिसकी वजह से आपके जीवनसाथी नाराज हो सकते हैं। अतः परिवार पर भी पर्याप्त समय दें। इस समय आपकी आर्थिक उन्नति होगी। अपने मित्रों एवं रिश्तेदारों से मधुर संबंध बनाकर रखें। वाणी पर संयम बहुत जरूरी है। आपके शत्रु आपको हानि पहुंचाने का प्रयास करेंगे, लेकिन वे सफल नहीं हो पाएंगे। आप उनकी परवाह ना करते हुए अपना काम करते रहें।

इस समय आप पैरों में दर्द से पीड़ित रह सकते हैं। अधिक मेहनत एवं भाग–दौड़ के कारण आपका शरीर कमजोर हो सकता है। वैसे तो आपको पैसे की कमी नहीं होगी, लेकिन आप हमेशा अधिक धन कमाने के बारे में सोचते रह सकते हैं। आप सुख की प्राप्ति के लिए इधर–उधर भटक सकते हैं और अपने घर पर ध्यान नहीं दे सकते हैं। आप लोगों पर वर्चस्व पाने की कोशिश में लगे रहेंगे। धन कमाने के लिए आप किसी दूरस्थ स्थान या विदेश भी जा सकते हैं। आपको उंचाई से गिरने, वाहन से चोट, आग, बिजली या किसी जानवर से चोट का खतरा हो सकता है। आपको काफी सावधानी से काम करना चाहिए और ईश्वार का ध्यान करते हुए आगे बढ़ते रहना चाहिए।

तृतिय ढ़ैय्या
26/09/2041 – 11/12/2043
गोचर राशि – तुला
समयावधि :
2.0 y.2.0 m.15 d.

आपको इस चरण में मिश्रित फल प्राप्त होगा। फल का स्वभाव आपकी कुण्डली में चल रही महादशा पर अधिक निर्भर करेगा। शुरू में आपको अशुभ फल प्राप्त हो सकते हैं, लेकिन बाद में शुभ फल प्राप्त होने लगेंगे। आप कोई भी काम काफी सोच–विचार के बाद ही करें। अपनी वाणी पर नियंत्रण रखें एवं कोई भी काम जल्दबाजी में ना करें, हानि हो सकती है। आप पर काम का बोझ बढ़ सकता है, लेकिन यह भविष्य के लिए फायदेमंद होगा। इस समय आपको धन लाभ हो सकता है। यदि आप पर कोई कर्ज है, तो आप उसे चुकाने में सक्षम होंगे। आप भूमि, भवन या वाहन खरीद सकते हैं। अपनी माता से कोई उपहार प्राप्त हो सकता है। अपने विरोधियों से सावधान रहें।

यदि आप व्यवसाय करते हैं, तो अपनी मेहनत एवं दिमाग से तरक्की करेंगे। आपको अपने व्यवसाय में चोरी होने की काफी संभावना है। अपने कर्मचारियों से सावधान रहें। अधिक कार्यभार होने के कारण आप अपने परिवार पर पर्याप्त समय नहीं दे सकते हैं, जिसकी वजह से आपके परिवार वाले आपसे नाराज हो सकते हैं। यदि आप नौकरी करते हैं, तो मनचाहे स्थान पर अपना स्थानान्तरण करवा सकते हैं। आपके अधिकारी आपसे खुश रह सकते हैं, लेकिन आपके सहयोगी उन्हें भड़का सकते हैं। किसी भी कागज पर बिना पढ़े हस्ताक्षर ना करें। यदि आप आर्थिक लेन–देन के क्षेत्र में हैं, तो आपको काफी सावधान रहना चाहिए, आप पर रिश्वत का आरोप लग सकता है। नेताओं से दूर रहें, उन्हें किसी भी तरह से नाराज ना करें।

आप परोपकार एवं धार्मिक कार्यों में बढ़–चढ़ कर हिस्सा लेंगे, जिससे आपको समाज में सम्मान मिलेगा। आपको धार्मिक साहित्य के अध्ययन में रूचि हो सकती है। आप धार्मिक स्थल की यात्रा भी कर सकते हैं। यदि आप अभी विद्यार्थी हैं, तो खूब मेहनत करें, अन्यथा परीक्षा में असफल हो सकते हैं। चरण के मध्य काल में आपकी माता अस्वस्थ रह सकती हैं, जिसकी वजह से आप काम पर ध्यान नहीं दे पाएंगे। इससे आपको आर्थिक हानि हो सकती है। कुछ समय बाद आपकी माता स्वस्थ हो जाएंगी और आप अपने काम पर पुनः ध्यान देने लगेंगे। अधिक कार्य होने के कारण आप घर पर समय नहीं दे पाएंगे, जिसकी वजह से आपके जीवनसाथी नाराज हो सकते हैं। अतः परिवार पर भी पर्याप्त समय दें। इस समय आपकी आर्थिक उन्नति होगी। अपने मित्रों एवं रिश्तेदारों से मधुर संबंध बनाकर रखें। वाणी पर संयम बहुत जरूरी है। आपके शत्रु आपको हानि पहुंचाने का प्रयास करेंगे, लेकिन वे सफल नहीं हो पाएंगे। आप उनकी परवाह ना करते हुए अपना काम करते रहें।

इस समय आप पैरों में दर्द से पीड़ित रह सकते हैं। अधिक मेहनत एवं भाग–दौड़ के कारण आपका शरीर कमजोर हो सकता है। वैसे तो आपको पैसे की कमी नहीं होगी, लेकिन आप हमेशा अधिक धन कमाने के बारे में सोचते रह सकते हैं। आप सुख की प्राप्ति के लिए इधर–उधर भटक सकते हैं और अपने घर पर ध्यान नहीं दे सकते हैं। आप लोगों पर वर्चस्व पाने की कोशिश में लगे रहेंगे। धन कमाने के लिए आप किसी दूरस्थ स्थान या विदेश भी जा सकते हैं। आपको उंचाई से गिरने, वाहन से चोट, आग, बिजली या किसी जानवर से चोट का खतरा हो सकता है। आपको काफी सावधानी से काम करना चाहिए और ईश्वार का ध्यान करते हुए आगे बढ़ते रहना चाहिए।

तृतिय ढ़ैय्या

23/06/2044 – 30/08/2044

गोचर राशि – तुला

समयावधि :

0.0 y.2.0 m.7 d.

आपको इस चरण में मिश्रित फल प्राप्त होगा। फल का स्वभाव आपकी कुण्डली में चल रही महादशा पर अधिक निर्भर करेगा। शुरू में आपको अशुभ फल प्राप्त हो सकते हैं, लेकिन बाद में शुभ फल प्राप्त होने लगेंगे। आप

कोई भी काम काफी सोच–विचार के बाद ही करें। अपनी वाणी पर नियंत्रण रखें एवं कोई भी काम जल्दबाजी में ना करें, हानि हो सकती है। आप पर काम का बोझ बढ़ सकता है, लेकिन यह भविष्य के लिए फायदेमंद होगा। इस समय आपको धन लाभ हो सकता है। यदि आप पर कोई कर्ज है, तो आप उसे चुकाने में सक्षम होंगे। आप भूमि, भवन या वाहन खरीद सकते हैं। अपनी माता से कोई उपहार प्राप्त हो सकता है। अपने विरोधियों से सावधान रहें।

यदि आप व्यवसाय करते हैं, तो अपनी मेहनत एवं दिमाग से तरक्की करेंगे। आपको अपने व्यवसाय में चोरी होने की काफी संभावना है। अपने कर्मचारियों से सावधान रहें। अधिक कार्यभार होने के कारण आप अपने परिवार पर पर्याप्त समय नहीं दे सकते हैं, जिसकी वजह से आपके परिवार वाले आपसे नाराज हो सकते हैं। यदि आप नौकरी करते हैं, तो मनचाहे स्थान पर अपना स्थानान्तरण करवा सकते हैं। आपके अधिकारी आपसे खुश रह सकते हैं, लेकिन आपके सहयोगी उन्हें भड़का सकते हैं। किसी भी कागज पर बिना पढ़े हस्ताक्षर ना करें। यदि आप आर्थिक लेन–देन के क्षेत्र में हैं, तो आपको काफी सावधान रहना चाहिए, आप पर रिश्वत का आरोप लग सकता है। नेताओं से दूर रहें, उन्हें किसी भी तरह से नाराज ना करें।

आप परोपकार एवं धार्मिक कार्यों में बढ़–चढ़ कर हिस्सा लेंगे, जिससे आपको समाज में सम्मान मिलेगा। आपको धार्मिक साहित्य के अध्ययन में रूचि हो सकती है। आप धार्मिक स्थल की यात्रा भी कर सकते हैं। यदि आप अभी विद्यार्थी हैं, तो खूब मेहनत करें, अन्यथा परीक्षा में असफल हो सकते हैं। चरण के मध्य काल में आपकी माता अस्वस्थ रह सकती हैं, जिसकी वजह से आप काम पर ध्यान नहीं दे पाएंगे। इससे आपको आर्थिक हानि हो सकती है। कुछ समय बाद आपकी माता स्वस्थ हो जाएंगी और आप अपने काम पर पुनः ध्यान देने लगेंगे। अधिक कार्य होने के कारण आप घर पर समय नहीं दे पाएंगे, जिसकी वजह से आपके जीवनसाथी नाराज हो सकते हैं। अतः परिवार पर भी पर्याप्त समय दें। इस समय आपकी आर्थिक उन्नति होगी। अपने मित्रों एवं रिश्तेदारों से मधुर संबंध बनाकर रखें। वाणी पर संयम बहुत जरूरी है। आपके शत्रु आपको हानि पहुंचाने का प्रयास करेंगे, लेकिन वे सफल नहीं हो पाएंगे। आप उनकी परवाह ना करते हुए अपना काम करते रहें।

इस समय आप पैरों में दर्द से पीड़ित रह सकते हैं। अधिक मेहनत एवं भाग–दौड़ के कारण आपका शरीर कमजोर हो सकता है। वैसे तो आपको पैसे की कमी नहीं होगी, लेकिन आप हमेशा अधिक धन कमाने के बारे में सोचते रह सकते हैं। आप सुख की प्राप्ति के लिए इधर–उधर भटक सकते हैं और अपने घर पर ध्यान नहीं दे सकते हैं। आप लोगों पर वर्चस्व पाने की कोशिश में लगे रहेंगे। धन कमाने के लिए आप किसी दूरस्थ स्थान या विदेश भी जा सकते हैं। आपको उंचाई से गिरने, वाहन से चोट, आग, बिजली या किसी जानवर से चोट का खतरा हो सकता है। आपको काफी सावधानी से काम करना चाहिए और ईश्वार का ध्यान करते हुए आगे बढ़ते रहना चाहिए।

कंटक शनि

08/12/2046 – 06/03/2049

गोचर राशि – धनु

समयावधि :

2.0 y.2.0 m.27 d.

इस चरण का फल आपके लिए काफी अशुभ हो सकता है। आपको एक साथ कई रोग हो सकते हैं। इन रोगों के कारण आप काफी निराश हो सकते हैं। आपके पिता को भी कष्ट हो सकता है, जिससे आप परेशान हो सकते हैं। यदि किसी क्रूर/अशुभ ग्रह की दशा भी चल रही है, तो आप किसी नजदीकी का वियोग भी सह सकते हैं। संचार के माध्यम से कोई अशुभ समाचार प्राप्त हो सकता है। यदि आप नौकरी करते हैं, तो आपके सहकर्मी आपके साथ शत्रुतापूर्ण व्यवहार कर सकते हैं। आप पर नित्य नए आरोप लग सकते हैं, जिसकी वजह से आप मानसिक रूप से काफी परेशान हो सकते हैं और अस्पताल में भी भर्ती हो सकते हैं। आपकी नौकरी भी छूट सकती है।

आपका कोई पुराना शत्रु अचानक आपके सामने आ सकता है, जिसकी वजह से आप परेशन रह सकते हैं। इस समय कोई भी आपकी मदद को नहीं आएगा। आप कई प्रकार से हानि उठा सकते हैं और आर्थिक हानि हो सकती है। यदि आप कोई व्यवसाय करते हैं, तो आपका व्यवसाय बंद होने के कगार पर हो सकता है। यदि किसी शुभ ग्रह के प्रभाव से आपका व्यवसाय बच जाता है, तो भी हानि तो होनी ही है। शत्रु आपके व्यवसाय की बदनामी फैला सकते हैं। आपके किसी कर्मचारी को लालच देकर आपकी गुप्त सूचनाएं एकत्र कर सकते हैं और छापा पड़वाने में मुख्य भूमिका निभा सकते हैं। आपको सत्तापक्ष से भी हानि हो सकती है। आपका कोई भुगतान रूक सकता है। आप जो भी काम करें, सोच–समझ कर ही करें। अनुकूल समय का इंतजार करें एवं बुरे समय को ईश्वर का ध्यान करते हुए निकाल दें।

वाहन चलाते समय काफी सावधानी बरतें, दुर्घटना की संभावना हो सकती है। सिर में गंभीर चोट लगने की अधिक संभावना है। आपके मामा या मौसी की ओर से आप पर कोई गंभीर आरोप लग सकता है, जिसकी वजह से आपकी माता को कष्ट हो सकता है। उनका स्वास्थ्य खराब हो सकता है। आपके जीवनसाथी का व्यवहार भी आपके प्रति परिवर्तित हो सकता है, जिसकी वजह से आप मानसिक रूप से परेशान हो सकते हैं। आप गलत कार्यों की तरफ आकृष्ट हो सकते हैं। सत्तापक्ष से भी दण्ड मिल सकता है। इस चरण में आपके धनोपार्जन के सारे प्रयास विफल हो सकते हैं, और जो कुछ भी आप कमायेंगे वो सब भोग–विलास में गवां सकते हैं।

यदि आपकी आयु 34 से 47 वर्ष के मध्य है और राहु भी अशुभ है, तो आपको कारावास भी हो सकता है। यदि मंगल अशुभ है, तो किसी दुर्घटना में अपना कोई अंग भी गंवा सकते हैं। इस दौरान आप अपने भाइयों से अलग हो सकते हैं और जो कुछ धन बंटवारे से मिलेगा वो फालतू के कार्यों में खर्च कर सकते हैं। आप उचित निर्णय लेने में अक्षम हो सकते हैं। लोगों के प्रति आपका व्यवहार भी बदल सकता है, जिसकी वजह से आपके अपने लो भी आपसे बात करना पसंद नहीं कर सकते हैं। आपमें धर्म के प्रति आस्था कम हो सकती है। आपको धार्मिक कार्यों में मन लगाना चाहिए।

कंटक शनि

10/07/2049 – 04/12/2049

गोचर राशि – धनु

समयावधि :

0.0 y.4.0 m.25 d.

इस चरण का फल आपके लिए काफी अशुभ हो सकता है। आपको एक साथ कई रोग हो सकते हैं। इन रोगों के कारण आप काफी निराश हो सकते हैं। आपके पिता को भी कष्ट हो सकता है, जिससे आप परेशान हो सकते हैं। यदि किसी क्रूर/अशुभ ग्रह की दशा भी चल रही है, तो आप किसी नजदीकी का वियोग भी सह सकते हैं। संचार के माध्यम से कोई अशुभ समाचार प्राप्त हो सकता है। यदि आप नौकरी करते हैं, तो आपके सहकर्मी आपके साथ शत्रुतापूर्ण व्यवहार कर सकते हैं। आप पर नित्य नए आरोप लग सकते हैं, जिसकी वजह से आप मानसिक रूप से काफी परेशान हो सकते हैं और अस्पताल में भी भर्ती हो सकते हैं। आपकी नौकरी भी छूट सकती है।

आपका कोई पुराना शत्रु अचानक आपके सामने आ सकता है, जिसकी वजह से आप परेशन रह सकते हैं। इस समय कोई भी आपकी मदद को नहीं आएगा। आप कई प्रकार से हानि उठा सकते हैं और आर्थिक हानि हो सकती है। यदि आप कोई व्यवसाय करते हैं, तो आपका व्यवसाय बंद होने के कगार पर हो सकता है। यदि किसी शुभ ग्रह के प्रभाव से आपका व्यवसाय बच जाता है, तो भी हानि तो होनी ही है। शत्रु आपके व्यवसाय की बदनामी फैला सकते हैं। आपके किसी कर्मचारी को लालच देकर आपकी गुप्त सूचनाएं एकत्र कर सकते हैं और छापा पड़वाने में मुख्य भूमिका निभा सकते हैं। आपको सत्तापक्ष से भी हानि हो सकती है। आपका कोई भुगतान रूक सकता है। आप जो भी काम करें, सोच–समझ कर ही करें। अनुकूल समय का इंतजार करें एवं बुरे समय को ईश्वर का ध्यान करते हुए निकाल दें।

वाहन चलाते समय काफी सावधानी बरतें, दुर्घटना की संभावना हो सकती है। सिर में गंभीर चोट लगने की अधिक संभावना है। आपके मामा या मौसी की ओर से आप पर कोई गंभीर आरोप लग सकता है, जिसकी वजह से आपकी माता को कष्ट हो सकता है। उनका स्वास्थ्य खराब हो सकता है। आपके जीवनसाथी का व्यवहार भी आपके प्रति परिवर्तित हो सकता है, जिसकी वजह से आप मानसिक रूप से परेशान हो सकते हैं। आप गलत कार्यों की तरफ आकृष्ट हो सकते हैं। सत्तापक्ष से भी दण्ड मिल सकता है। इस चरण में आपके धनोपार्जन के सारे प्रयास विफल हो सकते हैं, और जो कुछ भी आप कमायेंगे वो सब भोग–विलास में गवां सकते हैं।

यदि आपकी आयु 34 से 47 वर्ष के मध्य है और राहु भी अशुभ है, तो आपको कारावास भी हो सकता है। यदि मंगल अशुभ है, तो किसी दुर्घटना में अपना कोई अंग भी गंवा सकते हैं। इस दौरान आप अपने भाइयों से अलग हो सकते हैं और जो कुछ धन बंटवारे से मिलेगा वो फालतू के कार्यों में खर्च कर सकते हैं। आप उचित निर्णय लेने में अक्षम हो सकते हैं। लोगों के प्रति आपका व्यवहार भी बदल सकता है, जिसकी वजह से आपके अपने लो

भी आपसे बात करना पसंद नहीं कर सकते हैं। आपमें धर्म के प्रति आस्था कम हो सकती है। आपको धार्मिक कार्यों में मन लगाना चाहिए।

अष्टम शनि

07/04/2057 – 27/05/2059

गोचर राशि – मेष

समयावधि :

2.0 y.1.0 m.20 d.

इस चरण का फल आपके लिए अधिक अशुभ नहीं हो सकता है। यदि आपकी कुण्डली में शनि किसी शुभ भाव में बैठा है, तो आपको शुभ फल अधिक प्राप्त हो सकता है। आपको काफी शारीरिक कष्ट हो सकते हैं, जो कि मृत्युतुल्य हो सकते हैं। आपके भाई–बहनों को भी कष्ट हो सकता है। आप भी रोग ग्रस्त हो सकते हैं। अर्श, भगंदर आदि होने की अधिक संभावना है। आप निम्न तबके की महिलाओं के सम्पक्र में आ सकते हैं, जिससे आप समाज में अपमानित हो सकते हैं। आपको अपना चरित्र एवं व्यवहार साफ रखना चाहिए। आपका अवैध संबंध बहुत जल्द लोगों के सामने आ सकता है और आपके परिवार में क्लेश हो सकता है।

यदि आप विद्यार्थी हैं, तो आपको अपने समाज पर ध्यान देना चाहिए, क्योंकि इस चरण के दौरान आपके भटकने की काफी संभावना है। अध्ययन के क्षेत्र में आपको सफलता प्राप्त हो सकती है। आपको अपने खर्चे पर नियंत्रण रखना चाहिए और जितना पैसा घर से मिलता है, उतने में ही काम चलायें। अधिक सपने ना देंखें। आप नित्य कई गलतियां कर सकते हैं बाद में आपको पछतावा भी होगा, लेकिन ग्रहों के प्रभाव से पुनः वहीं गलतियां दोहराते रहेंगे। आप अपने कार्यों से ही अपने लोगों में हंसी के पात्र बन सकते हैं। आप अपने कार्यों को कार्यान्वित करने के लिए फरेब का सहारा भी ले सकते हैं। लोग आपकी बातों पर विश्वास नहीं कर सकते हैं। आपके अपने लोग भी आपका साथ छोड़ सकते हैं। आपके व्यवहार में आए परिवर्तन से आपके दोस्त भी दुश्मन बन सकते हैं। आपके पुराने शत्रु आपके कामों में बाधा पहुंचा सकते हैं। आपका कोई शत्रु आपसे मित्रता कर आपसे गलत कार्य करवा सकता है, सचेत रहें।

यदि आप व्यवसाय करते हैं, तो आपके कपटपूर्ण वयवहार के कारण कई लोग आपके साथ व्यापार बंद कर सकते हैं। आपका मन अपने कारोबार में नहीं लग सकता है। आप आलसी हो सकते हैं, जिसकी वजह से आप व्यवसाय में पिछड़ सकते हैं तथा आपके कर्मचारी इसका लाभ उठा सकते हैं। व्यापार में आर्थिक संकट आ सकता है और आप कर्जदारों से मुंह छिपा सकते हैं। यदि आप नौकरी करते हैं, तो शारीरिक अक्षमता के कारण आपका मन अपने काम में नहीं लग सकता है। आप समय पर अपना काम पूरा नहीं कर पाएंगे, जिससे आपके वरिष्ठ अधिकारी आपसे नाराज हो सकते हैं और आपका स्थानान्तरण भी हो सकता है। आपको कोई दण्ड भी मिल सकता है। इस समय आप सिर्फ अपना स्वार्थ देख सकते हैं। आप सिर्फ धनोपार्जन के बारे में सोच सकते हैं। आप रिश्वत आदि भी लेना शुरू कर सकते हैं, लेकिन यह सबके सामने आ जाएगा। आपके सहयोगी ही आपको रंगे हाथ पकड़वा सकते हैं।

यदि आपकी आयु 34 से 46 वर्ष के मध्य है, तो आपको अधिक कष्ट हो सकता है। इस चरण के दौरान आप अधिकांश समय अस्वस्थ ही रहेंगे, लेकिन आप जब स्वस्थ होंगे, तो आप पर काम–वासना हावी रहेगा। आप अप्राकृतिक संबंध भी बना सकते हैं, जिससे आपको गुप्त यौन रोग होने का खतरा हो सकता है।

शनि की सा–साढ़ेसाती या –ढ़ैय्या के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिए नीचे लिखे उपायों को करें–

मंत्र–

1– महामृत्युंजय मंत्र का सवा लाख जाप (रोज 10 माल, 125 दिन) करें।

ऊँ त्रयम्बकम् यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनं।
उर्वारूकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।

2– शनि के निम्नदत्त मंत्र का 21 दिन में 23 हजार जाप करें–

ऊँ शन्नोदेवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये।
शंयोरभिस्रवन्तु नः। ऊँ शं शनैश्चराय नमः।।

3– पौराणिक शनि मंत्र–

ऊँ नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।

स्तोत्र

नीचे लिखे शनि स्तोत्र का 11 बार पाठ करें या दशरथ कृत शनि स्तोत्र का पाठ करें।

कोणस्थः पिंगलो बभ्रुः कृष्णो रौद्रोऽन्तको यमः।
सौरिः शनैश्चरो मन्दः पिप्पलादेन संस्तुतः।।
तानि शनि–नामामि जपेदश्वत्थसन्निधौ।
शनैश्चरकृता पीड़ा न कदाचिद् भविष्यति।।

साढ़ेसाती पीड़ानाशक स्तोत्र– पिप्पलाद के अनुसार–

नमस्ते कोणसंस्थय पिंड्गलाय नमोस्तुते।
नमस्ते बभ्रु रूपाय कृष्णाय च नमोस्तु ते।।
नमस्ते रौद्रदेहाय नमस्ते चान्तकाय च।नमस्ते यमसंज्ञाय नमस्ते सौरये विभो।।नमस्ते यमदसंज्ञाय शनैश्वर नमोस्तु ते।प्रसादं कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य च।।

रत्न –

शनिवार के दिन काले घोड़े की नाल या नाव के तली की कील का छल्ला बनाकर मध्यमा उंगली में धारण करना चाहिए।

व्रत –

शनि वार का व्रत रखना चाहिए एवं शनि देव की पूजा करनी चाहिए। शनिवार व्रतकथा पढ़ने से भी लाभ प्राप्त

होता है। व्रत के दौरान दिन में फलाहार करें, एवं सायंकाल हनुमान जी या भौरव जी का दर्शन करना चाहिए। रात्रि में काले उड़द की खिचड़ी (काला नमक मिला सकते हैं) या उड़द की दाल का मीठा हलवा ग्रहण कर सकते हैं।

दान –

शनिदेव को प्रसन्न करने के लिए उड़द, तेल, नीलम, तिल, भैंस, लोहा एवं काला कपड़ा दान करना चाहिए।

औषधि –

हर शनिवार को सुरमा, काले तिल, सौंफ और नागरमोथा मिले हुए जल से स्नान करना चाहिए।

राशि वालों के लिए शनि की साढ़ेसाती एवं –ढ़ैय्या के सामान्य उपाय–

1– शनि यंत्र को पूजास्थल में रखकर नित्य उसके सामने चालीसा का पाठ करें।

2– प्रत्येक बुधवार को विष्णु सहस्त्रनाम का पाठ करें।

3– बुधवार को हिजड़ों को कुछ पैसा देकर उनका आशीष लें।

4– शनिवार को अंधेरा होने पर पीपल के पास जाकर आटे में हरी मसूर का आटा मिलाकर दीपक बनायें। सरसों के तेल में एक कील रखें तथा 11 साबूत हरी मसूर के दाने मिलाकर रूई की ऐसी दो समानान्तर बत्ती बनायें जो जलने पर एक ही लौ दे, पीपल को अर्पित करें तथा मीठा जल भी अर्पित करें।

5– अधिक कष्ट होने पर श्री दुर्गा सप्तशती में से कोई मंत्र चुनकर नियमित जाप करें।

6– शयनकक्ष के पलंग के चारों पायों में लोहे की चार कील ठुकवायें।

7– किसी भी शुक्लपक्ष में नौ वर्ष से कम आयु की 8 कन्याओं को भोजन करवाकर हरे एवं लाल वस्त्र उपहार में दें। ऐसा लगातार पांच मास करें।

8– प्रत्येक शनिवार को छायादान करें।

शनि की साढ़ेसाती एवं –ढ़ैय्या के विशेष उपाय –

यदि आपकी कुण्डली में शनि शुभ है, तो भैरोंजी एवं शनिदेव की पूजा–अर्चना कर शनि को और बल देकर लाभ प्राप्त किया जा सकता है। यदि शनि अशुभ या दूषित है, तो शनि के उपाय कर अशुभ फल को खत्म एवं लाभ प्राप्त किया जा सकता है। यदि आपकी कुण्डली में साढ़ेसाती चल रही है या आप शनिकृत कष्ट भोग रहें हैं, तो नीचे लिखे उपायों को करने से आप लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

1– शनि का छाया दान करें एवं नीलम या इसका उपरत्न धारण करें।

2– शनिवार को काली गाय की सेवा करें। तिलक–बिन्दी कर उसके सींग पर कलावा बांध कर बूंदी के आठ लड्डू खिलायें एवं चरण स्पर्श करें।

3– काले कुत्ते को नियमित रूप से मीठी रोटी खिलायें।

4– यदि आपकी कुण्डली में शनि लग्न में बैठा है, तो जमीन में सुरमा गाड़ें।

5– शनिवार का व्रत रखें तथा पीपल की सेवा करें एवं मीठा जल अर्पित करें।

6– मद्यपान ना करें।

7– शनिवार को अंधेरा होने पर पीपल के वृक्ष पर हनुमान जी का स्मरण कर तिल के तेल के दीपक में सिंदूर डालकर लाल पुष्प अर्पित करें।

8– भोजन में काली मिर्च एवं काला नमक का प्रयोग अवश्य करें।

9– शनिवार को काले घोड़े के पैर की मिट्टी काले कपड़े में बांधकर ताबीज के रूप में धारण करें।

10– शनिवार को आप एक माप की आठ बोतलें लें, और हर बोतल में एक ही माप का सरसों तेल भरें। प्रत्येक में आठ साबुत उड़द के दाने एवं एक कील डालें। फिर आठों बोतलों को अपने उपर से आठ बार उसार कर बहते जल में प्रवाहित करें। यह क्रिया लगातार आठ शनिवार करें।

11– नियमित रूप से शनि चालीसा एवं उनके 108 नामों का उच्चारण करें।

12– प्रातः उठते ही बासी मुख से शनिदेव के दस नामों का उच्चारण तथा द्वाद्वशज्योतिर्लिंग के नामों का उच्चारण करें।

13– प्रत्येक शनिवार को काले कुत्ते को रोटी पर सरसों का तेल चुपड़ कर गुड़ रख कर खिलायें एवं बन्दरों को चने खिलायें।

14– शुक्रवार को लोहे के बर्तन में आठ किलो चने भिगों दें। शनिवार को काले कपड़े में सारे चने रखें। साथ में 800 ग्राम काली उड़द और इतने ही काले तिल के साथ इतने ही जौ एवं एक लोहे की पत्ती रखें। इसकी पोटली बनाकर ऐसे स्थान पर डालें जहां मछलियां हों। यह क्रिया लगातार आठ माह करें। शुरू में आठ माह करें, इसके बाद वर्ष में सिर्फ एक बार पर्याप्त होगा।

15– अंधेरा होने के बाद आटा मिश्रित उड़द का दीपक बनाकर उसमें दो बत्ती जो जलने पर एक ही लौ दे, सरसों के तेल में जलायें। एक दीपक पीपल एवं एक दीपक वट वृक्ष पर अर्पित करें। साथ ही गुग्गुल की धूप एवं चंदन की अगरबत्ती भी अर्पित करें। यह उपाय पहले शनिवार से शुरू करें।

16– प्रथम शनिवार को आठ मीटर काले कपड़े में 800 ग्राम की मात्रा में काली उड़द, चावल, गुड़, काली सरसों, काले तिल, जौ, आठ बड़ी कीलें तथा एक–एक सुरमा एवं इत्र की शीशी को कपड़े में बांधकर पोटली का रूप दे दें। अलग से 10 छिलके वाले बादाम लेकर किसी भी हनुमान मंदिर में जायें और पोटली एवं बादाम मंदिर में हीं कहीं रख दें। फिर स्टील की कटोरी में सिंदूर को चमेली के तेल से गीला कर प्रसाद एवं पीले फूलों के साथ प्रभु को अर्पित करें। बैठकर हनुमान चालीसा का पाठ करें, और सात बार परिक्रमा करें। तत्पश्चात पोटली मंदिर में ही छोड़ दें। दस बादाम में से आधे बादाम भी मंदिर में ही छोड़ दें और बाकी के बादाम लाकर किसी नये लाल कपड़े में बांधकर अपने धन रखने के स्थान पर रख दें। कष्टमुक्ति के साथ लाभ प्राप्त होगा।

17– आठ शनिवार लगातार किसी ब्राह्मण को उड़द की दाल की खिचड़ी खिलायें। दान में काले कपड़े में उड़द की दाल की ही खिचड़ी बांधकर आठ सिक्के के रूप में दक्षिणा दें।

18– पहले शनिवार को अपने से 19गुना अधिक काला धागा लेकर उसे एक माला का रूप दें, जो गले में पहनी जा सके। किसी भी शनि मंत्र से अभिमंत्रित कर धूप दिखायें। फिर उस माला को गले में धारण करें। तुरंत लाभ मिलेगा।

19– शनिवार को घर में पूजास्थल में बैठकर यह क्रिया करें। इस क्रिया में आठ उड़द मिश्रित दीपक बनाकर उसमें सरसों का तेल भरें। दीपक में दो बत्तियां बनाकर उन्हें एक साथ जलायें, ताकि जलने पर एक ही लौ दे। दीपक में थोड़ा सा सिन्दूर के साथ काले घोड़े की नाल का छल्ला एवं एक कील डालें। काले हकीक की माला से किसी भी शनि मंत्र का 11 माला जाप करें और प्रणाम कर उठ जायें। अगले दिन छल्ला निकालकर दायें हाथ की मध्यमा में धारण करें और दीपक किसी पीपल पर अर्पित कर दें।

20– प्रत्येक शनिवार को आप चोकर सहित तीन मोटी रोटियां अपने ही हाथ से बनायें। एक रोटी के एक ओर सरसों एवं दूसरी ओर शुद्ध घी लगायें। अन्य दो रोटियों में से एक पर घी और एक पर सरसों का तेल चुपड़कर उस पर गुड़ रखें। दोनों ओर चुपड़ी रोटी काली गाय को, सरसों के तेल वाली रोटी कुत्ते को एवं घी चुपड़ी रोटी किसी गरीब मजदूर को दे दें।

21– शमी वृक्ष या बिछुआ की जड़ को शनिपुष्य या शनिवार के श्रवण नक्षत्र में लाकर काले कपड़े में बांध कर अपनी दायीं भुजा पर बांधें। तुरन्त लाभ होगा।

22– किसी भी पहले शनिवार को आप आठ मीटर काला कपड़ा, एक जटा नारियल, काले तिल, काली उड़द, गुड़, जौ, काली सरसों, काला नमक प्रत्येक सामग्री 800 ग्राम, हवन सामग्री, आठ बड़ी टोपीदार कील, इतने ही सिक्के तथा बोतल में 800 ग्राम सरसों एवं चमेली का तेल, दो शीशी काजल तथा दो शीशी काले सुरमे लेकर कपड़े की पोटली बना दें। अपने सिर से सात बार उसार कर किसी डाकौत को दान कर दें। यह उपाय लगातार आठ माह करें। फिर वर्ष में दो बार कर सकते हैं।

23– मांस–मदिरा से दूर रहें।

24– किसी के सामने अपनी समस्याओं या कष्टों के बारे में बात ना करें।

25– घर के मुख्य द्वार की देहरी पर चाँदी का पत्तर दबायें।

26– काले वस्त्र धारण करें।

27– घर के किसी अंधेरे भाग में किसी लोहे के पात्र में सरसों का तेल भरकर उसमें ताँबे के सिक्के डालकर रखें।

28– शनिदेव की कोई भी वस्तु बिना पैसे दिये किसी से भी ना लें।

29– काले घोड़े की नाल लाकर घर के मुख्य द्वार के नीचे दबायें।

30– शनिवार को काले घोड़े की पूंछ के आठ बाल लेकर उन्हें किसी लकड़ी की डिब्बी में रखकर 43 दिन तक अपने शयनकक्ष में रखें। अंतिम दिन बाल को जलाकर उसकी राख को सरसों के तेल में मिलाकर बहते जल में प्रवाहित कर दें।

31– शुक्रवार को 800 ग्राम काले तिल पानी में भिगों दें। अगले दिन उन्हें पीस कर गुड़ के साथ मिलाकर लड्डू

बनायें और काले घोड़े को खिलायें। यह उपाय आठ शनिवार करें।

32– सा–साढ़ेसाती के दौरान अपनी पैतृक संपत्ति ना बेचें। अधिक कष्ट में पड़ सकते हैं।

33– रात्रि के समय सिर्फ शनि का दान करें, किसी को शनि की वस्तु ना दें।

34– नियमित रूप से महामृत्युंजय मंत्र का जाप करें, कष्टों में कमी आयेगी।

35– शनिवार को श्री भैरों मंदिर में शराब अर्पित करें, कष्टों में कमी आयेगी।

36– किसी शनिवार को वीराने स्थान में आठ शीशी सुरमें दबायें।

37– शिवलिंग पर दूध से अभिषेक करें।

38– प्रत्येक शनिवार को किसी सिद्ध हनुमान मंदिर में नारियल अर्पित करें।

39– अपने शयनकक्ष के पलंग के चारों पायों में लोहे की कील ठुकवायें।

40– अपने घर के दक्षिण एवं पश्चिम में कोई पत्थर की शिला रखें।

सूर्य ग्रह से संबंधित मंत्र, यंत्र और उपाय

ॐ आदित्याय विद्महे दिवाकराय धीमहि तन्नः सूर्यः प्रचोदयात् ।

भास्वान्काश्यपगोत्रजोऽरुणरुचिर्यः सिंहराशीश्वरः
षट्त्रिस्थो दश शोभनो गुरुशशीभौमेषु मित्र सदा।
शुक्रो मंदरिपुकलिङ्गजनितश्चाऽग्नीश्वरो देवता
मध्येवर्तुल पूर्वादिग् दिनकरः कुर्यात् सदा मंगलम्।।

सूर्य ग्रह के लिए रत्न

भावगत/राशिगत सूर्य का फल

आपकी कुण्डली में सूर्य धनु राशि में स्थित है। जैसाकि सूर्य मित्र राशि में सुव्यवस्थित है, आप कई मामलों में भाग्यशाली होंगे। आप चौड़े गठन की भव्य और प्रभावी शारीरिक संरचना से पूर्ण होंगे। आप बहुत उत्साही, उर्जावान और सदा आशावादी होंगे। आप एक विद्वान, बुद्धिमान और विवेकी व्यक्ति होंगे, लोग आपके विचारों और मतों को मान तथा महत्व देंगे और आपको बहुत सम्मान देंगे। आप बड़ों एवं सदाचारी लोगों का आदर करेंगे तथा धर्म व ईश्वर में आस्था रखेंगे। यद्यपि आप अन्दर से शांतिप्रिय होंगे, फिर भी सुरक्षा के उद्देश्य से आपकी मार्शल आर्ट में महारत हासिल करने में बहुत रूचि हो सकती है, आप अपनी विद्वता की कुशलता से उपयोग ईमानदार योग्य लोगों को उचित प्रशिक्षण देने में कर सकते हैं। आपको अपने कार्य क्षेत्र में विशिष्टता प्राप्त होगी और आप कई अनुयायियों की प्रेरणा का स्रोत होंगे।

आपकी कुण्डली में सूर्य चौथे भाव में स्थित है। जैसाकि आपका लग्न कन्या है, द्वादशेश सूर्य की चौथे भाव में

स्थिति कुछ मामलों में एक अनुकूल योग नहीं है। आपकी माता का स्वास्थ्य उत्तम नहीं हो सकता है और आपका घरेलू जीवन शांतिपूर्ण या खुशहाल नहीं हो सकता है। इसके अलावा परिवार के सदस्यों में विशेष मतभेद के कारण सम्पत्ति का बंटवारा या नुकसान हो सकता है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव नहीं हैं, तो आपका परिवार अपना सम्मान खो सकता है– संभवतः आपके कुछ अविवेकपूर्ण कार्यों के कारण। आपकी शिक्षा बाधित हो सकती है और आपको अपना घर तथा पैतृक स्थान अचानक पारिस्थितिक बाधाओं के कारण छोड़ना पड़ सकता है।

सूर्य ग्रह से संबंधित दोष और उनके उपाय

अमावस्या तिथि का जन्म

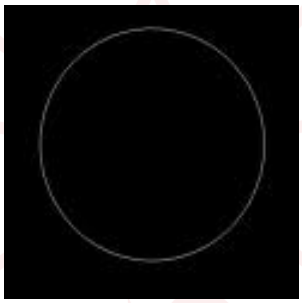

यदि आपका जन्म अमावस्या के दिन हुआ है, तो इस दिन जन्म होने के कारण आपके पारिवारिक और मानसिक सुख में कमी, संतान सुख में बाधा और यथोचित मान–सम्मान में कमी आ सकती है। आपको सफलता के लिए कड़ा संघर्ष करना पड़ सकता है और योग्यता होते हुए भी आपको मान्यता नहीं मिल सकती है।

आपका जन्म अमावस्या के दिन नही हुआ है।

कार्तिक मास का जन्म

सूर्य का अपनी नीच राशि तुला में रहने के दौरान जन्म लेने वाले जातक पर कार्तिक जन्म का दोष लागू होता है। अपने सबसे नीच बिन्दु के आस–पास कार्तिक जन्म दोष का प्रभाव सबसे अधिक होता है।

आपका जन्म कार्तिक मास में नही हुआ है।

संक्रांति के दिन का जन्म

जिस दिन सूर्य अपनी अगली राशि में प्रवेश करता है, वह दिन संक्राति दिन कहलाता है। यदि आपका जन्म संक्रांति के दिन हुआ है, तो इस दिन जन्म लेने के कारण आपके वंश वृद्धि, आर्थिक स्थिति और स्वास्थ्य पर सूर्य का अशुभ प्रभाव पड़ सकता है।

आपका जन्म संक्रांति के दिन नही हुआ है।

सार्पशीर्ष में जन्म

यदि आपकी कुण्डली में सार्पशीर्ष दोष लागू हो रहा है, तो इस दोष के साथ जन्म लेने के कारण आपको

मृत्युतुल्य कष्ट हो सकता है तथा आप सब प्रकार के सुखों से हीन हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में सार्पशीर्ष दोष लागू नहीं हो रहा है।

क्रांतिसाम्य या महापात में जन्म

यदि आपका जन्म क्रांतिसाम्य या महापात में हुआ है, तो आपके स्वास्थ्य और शारीरिक सुखों में कमी आ सकती है। आप असहाय हो सकते हैं।

आपका जन्म क्रांतिसाम्य या महापात में नहीं हुआ है।

सपात सूर्य दोष

यदि आपकी जन्म कुण्डली में सूर्य राहु या केतु के साथ स्थित है, तो आपकी कुण्डली में सपात सूर्य दोष लागू हो रहा है। इस स्थिति के कारण आपकी निर्णय क्षमता प्रभावित हो सकती है और आकस्मिक दुर्घटना का भी योग बन सकता है।

आपकी कुण्डली में सपात सूर्य दोष लागू हो रहा है।

शांति के उपाय –

आपको त्र्यम्बक मंत्र का संपुट लगाकर रूद्रसूक्त का पाठ करना चाहिए। हर साल अपने जन्मदिवस के दिन प्रातः घी में दूब को डूबोकर त्र्यबकम मंत्र से 28 या 108 आहूतियां दें। उस दिन व्रत भी रखें।

सूर्य ग्रह के लिए व्रत

बहुत सारे लोगों के लिए सही तरीके से मंत्र का जप करना किसी भी कारण से थोड़ा मुश्किल हो सकता है। उनके लिए समस्याकारक ग्रह के शासित दिन व्रत रखना ग्रह शांति का एक सरल उपाय है। नीचे ग्रहों के शासित दिन दिए गये हैं।

सूर्य के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए सूर्य के गोचर, महादशा या अंतर्दशा के दौरान रविवार का व्रत (उपवास) रखना चाहिए। व्रत (उपवास) की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले रविवार से करना चाहिए। यह व्रत (उपवास) कम से कम 12 और अधिकतम 30 रविवार को रखना चाहिए। व्रत (उपवास) के दौरान खाने में गेहूँ के आटे की चपाती, गुड़, हलवा, घी का उपयोग करना चाहिए। नमक का प्रयोग बिल्कुल ना करें। खाना

सूर्यास्त से पहले खाना चाहिए। यदि आप लाल कपड़ा पहन कर एवं अपने ललाट पर लाल चंदन का लेप लगाकर सूर्य के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का 5 माला (540) जप करें तो व्रत (उपवास) का फल अधिक लाभदायक होगा। अंत में हवन के साथ पूर्णाहूति करें एवं ब्राह्मणों को यथाशक्ति अन्न, धन एवं भोजन का दान करें।

अपने माता–पिता एवं बड़े–बुजुर्गों का सम्मान करें। इससे आप दीर्घायु, खुशहाल एवं सुखी–सम्पन्न होंगे, क्योंकि माता–पिता के चरणों में ही स्वर्ग है। यदि आप अपने माता–पिता की सेवा करेंगे, उनकी उचित देखभाल करेंगे, तो आपको भी अपनी औलाद से सम्मान और सुख प्राप्त होगा।

जैसी करनी, वैसी भरनी कहावत के अनुसार, आपको हमेशा अपने कर्मों के अनुसार ही फल प्राप्त होगा। सत्कर्म से आपको मानसिक शांति, खुशी एवं अन्न–धन प्राप्त होंगे, तो बुरे कर्मों के कारण आप अपने जीवन में कई तरह की समस्याओं का सामना कर सकते हैं।

सूर्य ग्रह पीड़ा शांति हेतु जड़ियों का प्रयोग

ग्रह पीड़ा शांति की कई विधियां हैं, जैसे दान करना, मंत्र जप करना, रत्न धारण करना आदि। जड़ी धारण करना भी ग्रह शांति का एक आसान तरीका है और यह लाभदायक भी है।

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

सूर्य के लिए बेल की जड़ या बेंत की जड़ गुलाबी रंग के कपड़े में सिलकर रविवार या कृतिका, उत्तराफाल्गुनी अथवा उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में सूर्योदय के समय अपने गले, भुजा, जेब या कमर में सुविधानुसार धारण करें।

सूर्य ग्रह के अनिष्ट प्रभाव को शांत करने के लिए हवन में प्रयुक्त सामग्री

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ–साथ आस–पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में

कई तरह की जड़ी–बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री– खस, मधु, नागरमोथा, अमलतास, छोटी इलायची।
जड़ी– बेल मूल एवं कमल बेंत की जड़।

सूर्य को अर्घ्य देने की विधि एवं मंत्र

सूर्य को अर्घ्य देने से सभी प्रकार की कामनाओं की पूर्ति होती है। इससे बुद्धि का विकास होता है, एवं कई प्रकार के लाभ होते हैं।

सूर्योदय के दौरान ताँबे के लोटे में जल भरकर उसमें लाल चंदन, लाल फूल, अक्षत एवं दूध आदि डालकर सूर्याभिमूख होकर अर्घ्य देना चाहिए। सबसे पहले सूर्य का ध्यान करते हुए निम्न विनियोग का जाप करें –

ॐ तत्सवितुरित्यस्य विश्वामित्र ऋषिः सविता देवता, गायत्री छन्दः, सूर्यार्घ्यदाने विनियोगः।

फिर सूर्य का आह्वान करके निम्न श्लोक का जाप करते हुए अर्घ्य दें –

एहि सूर्य सहस्त्रांशो तेजोराशे जगत्पते।
रूणाकर मे देव गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तुते।।

ध्यान मंत्र –

रक्ताम्बुजासनमशेषगुणैकसिन्धुं भानुं समस्तजगतामधिपं भजामि।
पद्मद्वयाभयवरान् दधतः कराब्जैर्माणिक्यमौलिमरुणाङ्गरुचिं त्रिनेत्रम्।।

सूर्य नमस्कार

सूर्य नमस्कार मंत्र :

जपा कुसुम संकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
तमोऽरि सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।।

सूर्य नमस्कार से आत्मा की शुद्धि होती है, मानसिक उलझनों एवं विघ्नों से मुक्ति मिलती है तथा उत्तम स्वास्थ्य प्राप्त होता है।

सूर्य ग्रह के साधारण उपाय

प्रातः उठने के बाद मुँह धोकर गीले मुँह ही पूर्व दिशा की ओर मुँह करके गायत्री मंत्र का 10 या 28 बार जप करें। स्नान करने के बाद गणेश भगवान का द्वादशाक्षर स्तोत्र और सूर्य कवच का पाठ करके सूर्य को जल का अर्घ्य दें। सूर्य की ओर मुँह करके सूर्य का अष्टाक्षर मंत्र का 10 या 28 बार जप करें। रात को सोने से पहले गायत्री मंत्र का 10 या 28 बार जप करें।

1– सूर्य एवं चंद्रमा की ओर मुँह करके या बहते हुए जल, नदी या तालाब में मल–मूत्र का त्याग नहीं करना चाहिए।
2– माता–पिता का अनादर नहीं करना चाहिए।
3– मानसिक या शारीरिक हिंसा, राग–द्वेष से दूर रहें।
4– अकारण ही क्रोध करने से बचें।

सूर्य ग्रह के लिए स्नान और दान

आप रविवार के दिन सुबह में गेहूँ, साबुत मसूर, गुड़, तांबे की कोई वस्तु एवं लाल फूल का दान करें। आप अपने स्नान के जल में केसर या इलायची पीसकर या इसका इत्र डालें।

सूर्य ग्रह के लिए यंत्र

यंत्र भोजपत्र पर लाल चंदन या अष्टगन्ध या केसर मिले चंदन से तुलसी, अनार, सोने या चाँदी की कलम से अंकित करना चाहिए। यंत्र सोने, चाँदी या ताँबे पर भी अंकित हो सकते हैं, लेकिन ऐसे यंत्र स्थापित करके पूजे

जा सकते हैं। धारण करने के लिए भोजपत्र पर ही अंकित करना चाहिए। यंत्रों को हमेशा सोने, चाँदी या ताँबे के ताबीज में भरकर धारण करना चाहिए। यंत्रों का निर्माण जनेऊधारी व्यक्ति को करना चाहिए। इससे यंत्र अधिक जागृत होकर धारणकर्ता पर अपना प्रभाव डालते हैं।

6	1	8
7	5	3
2	9	4

तांत्रिक यंत्र

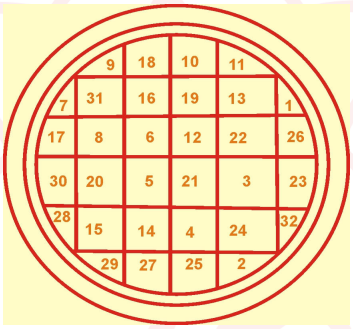

चन्द्रमा ग्रह से संबंधित मंत्र, यंत्र और उपाय

ॐ अत्रिपुत्राय विद्महे सागरोद्भवाय धीमहि तन्नश्चन्द्रः प्रचोदयात् ।

चन्द्रः कर्कटकप्रभुः सितनिभश्चात्रेय गोत्रोद्भव-
श्चाग्नेयश्चतुरस्र वारुणमुखश्चापोऽप्युमाधीश्वरः।
षट् सप्तानि दशैक शोभनफल शौरिः प्रियोऽर्कों गुरुः
स्वामी यामुनदेशजो हिमकरः कुर्यात् सदा मंगलम।।

चन्द्रमा ग्रह के लिए रत्न

भावगत/राशिगत चन्द्रमा का फल

आपकी कुण्डली में चंद्रमा कन्या राशि में स्थित है। इस कारण से आप कई संबंधों में भाग्यशाली होंगे। आप सुन्दर रूप, आकर्षक व्यक्तित्व, ओजपूर्ण व्यवहार, मनोहारी स्वभाव और उदार प्रकृति वाले व्यक्ति होंगे। आप मृदुभाषी और दूसरों के प्रति वास्तविक करूणा रखने वाले होंगे। जीवन में आप बहुत विख्यात होंगे और आपके मित्रों व परिचितों का दायरा बहुत बड़ा होगा। आप विपरीत लिंग के अनुकूल लोगों की संगति के बहुत शौकीन होंगे। आपका विवाह फलदायी होगा, आपकी पुत्रियां अधिक हो सकती हैं, आपका घरेलू जीवन बहुत खुशहाल और आनन्दमय होगा। आपका धार्मिक रूझान बहुत उत्कृष्ट होगा, आप परम्पराओं का नियमित रूप से निर्वाहन करेंगे, अपेक्षाकृत कम आयु से प्रवचन सुनेंगे और पवित्र तीर्थों की यात्रा करेंगे।

आपकी कुण्डली में चंद्रमा लग्न में स्थित है। इस कारण से आप एक सकारात्मक कल्पना और संवेदी प्रकृति वाले व्यक्ति होंगे। आपको अन्तर्ज्ञान का उपहार प्राप्त होगा। आपकी प्रकृति शर्मीली हो सकती है, लेकिन आप कुछ

हद तक अशांत और अस्थिर होंगे और आप कुछ बार अपना रोजगार तथा निवास स्थान बदल सकते हैं। यदि चंद्रमा कर्क राशि में स्थित है, तो आप अवश्य ही बहुत धनी होंगे, यदि चंद्रमा वृश्चिक राशि में है, तो आपको स्वास्थ्य की समस्यायें हो सकती हैं और आप बहुत सुस्त हो सकते हैं। हांलाकि, यदि चंद्रमा वृषभ राशि में स्थित है, तो आपके परिवार के धन में बढ़ोत्तरी होगी, लेकिन आपको कुछ एक बार वाहन दुर्घटना का भय हो सकता है।

चन्द्रमा ग्रह से संबंधित दोष और उनके उपाय

एक नक्षत्र जन्म दोष

यदि आपका जन्म आपके अपने भाई–बहनों अथवा अपने माता–पिता के नक्षत्र में हुआ है, तो एक नक्षत्र जन्मदोष लागू होता है। इस दोष की वजह से आपके पूरे परिवार की सुख–शांति में बाधा उत्पन्न हो सकती है। आपके स्वास्थ्य पर भी बुरा असर पड़ सकता है।

शांति के उपाय –

अपने घर में किसी साफ–सुथरे स्थान पर पूजा बेदी का निर्माण करें और उस पूजा स्थान से ईशान कोण में एक कलश स्थापना करें। उस कलश को नये वस्त्र से ढक दें। देवताओं की पूजा के पश्चात सारे नक्षत्रों की पूजा करें। उसके बाद कलश पर जन्म नक्षत्र के देवता की विशेष रूप से पूजा करें। जन्म नक्षत्र के मंत्र से 108 आहुतियां देकर हवन करें। अपनी सामर्थ्य अनुसार अन्न, वस्त्र आदि का दान करें। जब चंद्रमा बड़े बिम्ब वाला हो, शुभ लग्न हो तथा रिक्ता तिथि एवं भद्रा करण ना हो, तो चंद्रमा के अनुकूल गोचर में यह उपाय करें।

लग्नस्थ चन्द्र दोष

यदि आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा लग्न में स्थित है, तो आपकी विचारधारा इस तरह से दृढ़ हो सकती है कि आप समयानुसार अपने को बदल नहीं सकते हैं, जिसकी वजह से आप हठी और काफी हद तक अव्यवहारिक दृष्टिकोण वाले बन सकते हैं। आपकी मानसिक स्थिति के कारण आपके कार्य करने की क्षमता प्रभावित हो सकती है।

आपकी कुण्डली में लग्नस्थ चन्द्र दोष लागू हो रहा है।

शांति के उपाय –

आपको चंद्रमा के सरल उपाय करने के साथ–साथ रूद्रसूक्त का भी पाठ करना चाहिए।

क्षीण चंन्द्र दोष

यदि आपका जन्म कृष्णपष की अष्टमी से शुक्ल पक्ष की पंचमी के बीच में हुआ है, तो आपकी कुण्डली में क्षीण चंद्र दोष लागू होता है। आप तुनकमिजाज, काम में लापरवाही बरतने वाले एवं बिना किसी लक्ष्य के काम करने वाले हो सकते हैं। कभी–कभी अवसाद की स्थिति भी उत्पन्न हो सकती है।

आपकी कुण्डली में क्षीण चन्द्र दोष लागू हो रहा है।

शांति के उपाय –

इस दोष को दूर करने के लिए चंद्रमा शांति के सरल उपाय के साथ–साथ भगवान शंकर की पूजा करें। चंद्रमा जितना अधिक क्षीण हो, पूजा की मात्रा उतनी अधिक होनी चाहिए।

केमद्रुम योग दोष

यदि आपकी कुण्डली में चंद्रमा के आगे एवं पीछे के भावों में कोई ग्रह नहीं है, तो आपकी कुण्डली में केमद्रुम योग दोष लागू होता है। आपको जीवन पर्यन्त धन की कमी लगी रह सकती है, जिसके कारण पारिवारिक सुख और मानसिक शांति में कमी हो सकती है। यदि कुण्डली में चंद्रमा के साथ कोई ग्रह स्थित है या किसी ग्रह की दृष्टि पड़ रही है या चंद्रमा या लग्न से केन्द्र में कोई ग्रह स्थित है, तो केमद्रुम योग का प्रभाव कम हो जाता है।

आपकी कुण्डली में केमद्रुम योग दोष लागू हो रहा है।

शांति के उपाय –

इस दोष को दूर करने के लिए चंद्रमा शांति के सरल उपाय के साथ–साथ ऋषि वशिष्ठ के द्वारा लिखे हुए भगवान शंकर के दारिद्र्यदहन स्तोत्र का पाठ करें।

सपात (चंद्रमा राहु या केतु के साथ) चन्द्र दोष

यदि आपकी जन्म कुण्डली में चंद्रमा राहु या केतु के साथ स्थिति है, तो आपकी कुण्डली में सपात चंद्र दोष लागू हो रहा है। इस स्थिति के कारण आपकी निर्णय क्षमता प्रभावित हो सकती है और आकस्मिक दुर्घटना का भी योग बन सकता है।

आपकी कुण्डली में सपात चन्द्र दोष नहीं लागू हो रहा है।

नीच चंन्द्र दोष

यदि आपकी कुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ है। शास्त्रों के अनुसार, आपकी कुण्डली में नीच चंद्र दोष लागू हो रहा है। इस दोष के कारण आपकी मानसिक स्थिति पर बुरा असर पड़ सकता है।

आपकी कुण्डली में नीच चंन्द्र दोष नहीं लागू हो रहा है।

कृष्ण चतुर्दशी जन्म दोष

आपका जन्म कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी के दिन हुआ है। आपका संतान पक्ष कमजोर हो सकता है। आपके वैवाहिक जीवन में बाधा आ सकती है, परिवार में मान–सम्मान की कमी हो सकती है, धन की कमी हो सकती है तथा जीवनसाथी पर भी बुरा असर पड़ सकता है। आपके मन में आत्मघात की प्रवृति ज्यादा हो सकती है।

आपकी कुण्डली में कृष्ण चतुर्दशी जन्म दोष नहीं लागू हो रहा है।

गण्डमूल दोष

यदि आपका जन्म नक्षत्र रेवती, अश्विनी, ज्येष्ठा, मूल, श्लेषा या मघा है, तो आपकी कुण्डली में गण्डमूल दोष लागू होता है।

आपकी कुण्डली में गण्डमूल दोष नहीं लागू हो रहा है।

नक्षत्र गण्डांत दोष

यदि आपका जन्म चंद्रमा के रेवती, ज्येष्ठा या श्लेषा नक्षत्र के अंतिम बारह मिनट में या मूल, अश्विनी, मघा नक्षत्र के शुरूआती बारह मिनट में हुआ है, तो आपकी कुण्डली में नक्षत्र गण्डांत दोष लागू हो रहा है। इस दोष की वजह से जन्म, यात्रा या विवाह के समय आपको अशुभ फल प्राप्त हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में नक्षत्र गण्डांत दोष नहीं लागू हो रहा है।

लग्न गण्डांत दोष

यदि आपका जन्म लग्न के रेवती, ज्येष्ठा या श्लेषा नक्षत्र के अंतिम बारह मिनट में या मूल, अश्विनी, मघा नक्षत्र के शुरूआती बारह मिनट में हुआ है, तो आपकी कुण्डली में मूल गण्डांत दोष लागू हो रहा है। इस दोष की वजह से जन्म, यात्रा या विवाह के समय आपको अशुभ फल प्राप्त हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में नक्षत्र गण्डांत दोष नहीं लागू हो रहा है।

तिथि गण्डांत दोष

यदि आपका जन्म पूर्णा (5, 10, 15) तिथि के अंतिम 48 मिनट में या नन्दा (1, 6, 11) तिथि के शुरूआती 48 मिनट में हुआ है, तो आपकी कुण्डली में तिथि गण्डांत दोष लागू हो रहा है। इस दोष की वजह से जन्म, यात्रा या विवाह के समय आपको अशुभ फल प्राप्त हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में तिथि गण्डांत दोष नहीं लागू हो रहा है।[8]

चन्द्रमा ग्रह के साधारण उपाय

सबसे पहले सूर्य दर्शन कर गायत्री मंत्र जपें। फिर नहा–धोकर गणेश, शिवजी और पार्वती का मंत्र जाप करें। फिर ऊँ नमः शिवाय मंत्र का 108 बार जप करें। चंद्रमा कवच का पाठ करें और सूर्य को अर्घ्य दें। सोमवार के दिन मांस–मदिरा का सेवन ना करें।

1– सूर्य एवं चंद्रमा की ओर मुँह करके या बहते हुए जल, नदी या तालाब में मल–मूत्र का त्याग नहीं करना चाहिए।

2– माता–पिता का अनादर नहीं करना चाहिए।

3– मानसिक या शारीरिक हिंसा, राग–द्वेष से बचना चाहिए।

4– अकारण ही क्रोध करने से बचना चाहिए।

चन्द्रमा ग्रह के लिए व्रत

बहुत सारे लोगों के लिए सही तरीके से मंत्र का जप करना किसी भी कारण से थोड़ा मुश्किल हो सकता है। उनके लिए समस्याकारक ग्रह के शासित दिन व्रत रखना ग्रह शांति का एक सरल उपाय है। नीचे ग्रहों के शासित दिन दिए गये हैं।

चंद्रमा के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए सोमवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले सोमवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम 10 और अधिकतम 54 सोमवार को रखनी चाहिए। व्रत तोड़ने से पहले आपको सफेद कपड़े पहनना चाहिए एवं अपने ललाट पर सफेद चंदन का लेप लगाना चाहिए। चंद्रमा को सफेद फूल अर्पित करें और चंद्राम के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का 3 या 11 माला का जप करें। अपने खाने में नमक, दही, चावल, घी एवं गुड़ का प्रयोग ना करें। अंतिम सोमवार को हवन के साथ पूर्णाहूति करें एवं गरीबों के बीच खाना वितरित करें।

अपने माता–पिता एवं बड़े–बुजुर्गों का सम्मान करें। इससे आप दीर्घायु, खुशहाल एवं सुखी–सम्पन्न होंगे, क्योंकि माता–पिता के चरणों में ही स्वर्ग है। यदि आप अपने माता–पिता की सेवा करेंगे, उनकी उचित देखभाल करेंगे, तो आपको भी अपनी औलाद से सम्मान और सुख प्राप्त होगा।

जैसी करनी, वैसी भरनी कहावत के अनुसार, आपको हमेशा अपने कर्मों के अनुसार ही फल प्राप्त होगा। सत्कर्म से आपको मानसिक शांति, खुशी एवं अन्न–धन प्राप्त होंगे, तो बुरे कर्मों के कारण आप अपने जीवन में कई तरह की समस्याओं का सामना कर सकते हैं।

चन्द्रमा ग्रह पीड़ा शांति हेतु जड़ियों का प्रयोग

ग्रह पीड़ा शांति की कई विधियां हैं, जैसे दान करना, मंत्र जप करना, रत्न धारण करना आदि। जड़ी धारण करना भी ग्रह शांति का एक आसान तरीका है और यह लाभदायक भी है।

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

चंद्रमा के लिए खिरनी की जड़ को सफेद रंग के कपड़े में सिलकर सोमवार या रोहिणी, हस्त या श्रवण नक्षत्र में पूर्णिमा की रात में गले, जेब, भुजा या कमर में सुविधानुसार धारण करें।

चन्द्रमा ग्रह के अनिष्ट प्रभाव को शांत करने के लिए हवन में प्रयुक्त सामग्री

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ–साथ आस–पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी–बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री– लाल चंदन, कपूर, अगर, तगर, केसर, गोरोचन।
जड़ी – खिरनी की जड़।

चन्द्रमा ग्रह के लिए स्नान और दान

चंद्रमा के लिए शुद्ध देशी घी से भरकर नया बर्तन, सफेद वस्त्र, गन्ना, दूध, चावल, चांदी, शंख, कपूर, छोटी इलायची, चीनी, चंदन, कांसे का बर्तन इत्यादि का दान करना चाहिए। नहाते समय नहाने के पानी में थोड़ा सा दूध या दही डालकर नहाने से चंद्रमा प्रसन्न होते हैं।

चन्द्रमा ग्रह के लिए यंत्र

यंत्र भोजपत्र पर लाल चंदन या अष्टगन्ध या केसर मिले चंदन से तुलसी, अनार, सोने या चाँदी की कलम से अंकित करना चाहिए। यंत्र सोने, चाँदी या ताँबे पर भी अंकित हो सकते हैं, लेकिन ऐसे यंत्र स्थापित करके पूजे

जा सकते हैं। धारण करने के लिए भोजपत्र पर ही अंकित करना चाहिए। यंत्रों को हमेशा सोने, चाँदी या ताँबे के ताबीज में भरकर धारण करना चाहिए। यंत्रों का निर्माण जनेऊधारी व्यक्ति को करना चाहिए। इससे यंत्र अधिक जागृत होकर धारणकर्ता पर अपना प्रभाव डालते हैं।

7	2	9
8	6	4
3	10	5

तांत्रिक यंत्र

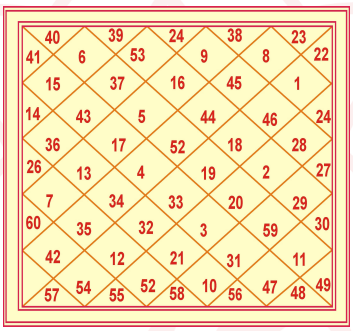

मंगल ग्रह से संबंधित मंत्र, यंत्र और उपाय

ओं क्षितिपुत्राय विद्‌महे लोहितांगाय धीमहि तन्नो भौमः प्रचोदयात।

भौमो दक्षिणादिक् त्रिकोण यमदिग् विघ्नेश्वरो रक्तभः,
स्वामी वृश्चिक मेषयोः सुरगुरुश्चाऽर्कः शशी सौहृदः।
ज्ञोऽरि षट्त्रिफलप्रदश्च वसुधास्कन्दौ क्रमाद् देवते,
भारद्वाजकुलोद्‌भवः क्षितिसुतः कुर्यात् सदा मंगलम्।।

मंगल ग्रह के लिए रत्न

भावगत/राशिगत मंगल का फल

आपकी कुण्डली में मंगल मेष राशि में स्थित है। इस कारण से आप कई मामलों में भाग्यशाली होंगे। आप सत्यवादी, उर्जावान, उत्साही, आशावादी, साहसी, वीर और ओजपूर्ण होंगे। आपकी बाहरी खेलों और साहसिक क्रियाकलापों में रूचि होगी और युद्ध एवं लड़ाई में आपको विशेष आनन्द मिलेगा। आपको पर्याप्त भौतिक सम्पत्तियां प्राप्त होंगी तथा आपका भविष्य काफी सुरक्षित होगा। आपको शक्तिशाली और प्रभावशाली लोगों से लाभ एवं सहयोग मिलेंगे एवं आप व्यवसाय के एक सम्मानित क्षेत्र से आय प्राप्त करेंगे– जैसे किसी भाग के प्रमुख, विभाग के प्रधान, प्रबंधक, नियंत्रक या निदेशक बनकर। सामाजिक रूप से आप बहुत विख्यात होंगे।

आपकी कुण्डली में मंगल आठवें भाव में स्थित है। यदि मंगल मेष या वृश्चिक राशि में स्थित है, तो आप दीर्घजीवी और कई मामलों में भाग्यशाली होंगे– विशेषकर विरासत के मामले में। यदि मंगल मकर राशि में स्थित है, तो आप आर्थिक रूप से सम्पन्न होंगे, लेकिन शत्रुओं के कारण आपको परेशानियां हो सकती हैं, आप किसी

दुर्घटना या अशुभ घटना का सामना करने से बाल–बाल बच सकते हैं। यदि यह कर्क राशि मे स्थित है, तो आप किसी दुर्घटना का सामना कर सकते हैं और आपको शल्य चिकित्सा करवानी पड़ सकती है। यदि मंगल किसी अन्य राशि में स्थित है, तो यह आपके जीवनसाथी के स्वास्थ्य और सुख के लिए अनुकूल नहीं है तथा आपको शारीरिक हिंसा का शिकार होने का भय हो सकता है।

भावगत/राशिगत मंगल का विशेष फल

आपकी कुण्डली में मंगल मेष राशि में बैठा हुआ है। आप स्वभाव से उग्र और तानाशाह हो सकते हैं। विपरीत लिंग वाले आपके प्रति खास आकर्षण महसूस कर सकते हैं।

आपकी कुण्डली में मंगल आठवें भाव में स्थित है। आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य आपके लिए चिन्ता का विषय हो सकता है। आपका उनसे किसी कारणवश अलगाव भी हो सकता है।

यदि आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता है, तो आप मंगल कष्ट निवारक मंत्र का प्रतिदिन 8 बार जप करें।

यदि अपने जीवनसाथी के साथ संबंधों में सामंजस्य की कमी हो, तो आप रामचरितमानस के सुन्दर काण्ड का पाठ करें।

यदि आपके घर में अशांति हो तो ऊँ हां हां सः खं खः। मंत्र का 108 बार जाप करें। यदि यह पाठ घर के मुखिया या उनकी पत्नी के द्वारा किया जाता है, तो लाभ मिलने की संभावना अधिक हो सकती है।

यदि आपमें उत्साह की कमी या ज्यादा क्रोध अथवा अपने विचारों को व्यक्त ना कर पाने की कमी हो, तो आपको प्रतिदिन 28 बार मंगल गायत्री का जप करना चाहिए।

यदि मंगल दोष के कारण आपको बार––बार या साधारण चोट इत्यादि लगती है, तो आपको मंगल कवच का पाठ करना चाहिए।

यदि मंगल के कुप्रभाव आपकी संतान पर आ रहे हों तथा संतान का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता हो अथवा आपकी बात ना मानते हों, तो आपको मंगल कष्ट निवारक मंत्र का नियमित रूप से पाठ करना चाहिए।

यदि आप धन हानि, कर्ज में बढ़ोत्तरी आदि से परेशान हैं, तो आपको नियमित रूप से एक साल तक मंगलवार का व्रत करना चाहिए, जिससे मंगल के राशि जनित या भाव जनित दोष दूर हो सकते हैं।

मंगल ग्रह के साधारण उपाय

आपको रूद्रसूक्त का पाठ नियमित रूप से करना चाहिए। भैरव और हनुमान जी की नियमित पूजा करें। हनुमान चालीसा का नियमित पाठ करें। यदि रूद्रसूक्त का जप मुश्किल है, तो आगे लिखे हुए मंत्र का प्रतिदिन 28 बार जप करें।

अघोरेभ्यों अघघोरेभ्यो घोर घोर तरेभ्यः।
सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्तेतु रूद्ररूपेभ्यः।

मित्रों और संबंधियों से प्रेम पूर्वक व्यवहार करने से मंगल का अशुभ प्रभाव कम होता है।

मंगल ग्रह के लिए व्रत

बहुत सारे लोगों के लिए सही तरीके से मंत्र का जप करना किसी भी कारण से थोड़ा मुश्किल हो सकता है। उनके लिए समस्याकारक ग्रह के शासित दिन व्रत रखना ग्रह शांति का एक सरल उपाय है। नीचे ग्रहों के शासित दिन दिए गये हैं।

मंगल के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए मंगलवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले मंगलवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम 21 और अधिकतम 45 मंगलवार रखनी चाहिए। अगर संभव हो तो आप पूरी जीन्दगी भी इस व्रत को रख सकते हैं। व्रत के दिन केवल गुड़ का हलवा खाना बेहतर होगा। आप अपनी शक्ति के अनुसार गरीबों के बीच भी हलवा वितरित कर सकते हैं। व्रत तोड़ने से पहले आपको लाल कपड़ा पहनना चाहिए और मंगल के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का अपने उपलब्ध समयानुसार 1, 5 या 7 माला का जप करना चाहिए। सांड़ को गुड़ खिलाना चाहिए। इस व्रत को रखने से आप ऋणमुक्त होंगे, संतान की प्राप्ति होगी एवं अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त होगी। अंतिम मंगलवार को हवन के साथ पूर्णाहूति करें एवं लाल कपड़ा, तांबा, गुड़ एवं नारियल गरीबों के बीच दान करें।

अपने माता–पिता एवं बड़े–बुजुर्गों का सम्मान करें। इससे आप दीर्घायु, खुशहाल एवं सुखी–सम्पन्न होंगे, क्योंकि माता–पिता के चरणों में ही स्वर्ग है। यदि आप अपने माता–पिता की सेवा करेंगे, उनकी उचित देखभाल करेंगे, तो आपको भी अपनी औलाद से सम्मान और सुख प्राप्त होगा।

जैसी करनी, वैसी भरनी कहावत के अनुसार, आपको हमेशा अपने कर्मों के अनुसार ही फल प्राप्त होगा। सत्कर्म से आपको मानसिक शांति, खुशी एवं अन्न–धन प्राप्त होंगे, तो बुरे कर्मों के कारण आप अपने जीवन में कई तरह की समस्याओं का सामना कर सकते हैं।

मंगल ग्रह पीड़ा शांति हेतु जड़ियों का प्रयोग

ग्रह पीड़ा शांति की कई विधियां हैं, जैसे दान करना, मंत्र जप करना, रत्न धारण करना आदि। जड़ी धारण करना भी ग्रह शांति का एक आसान तरीका है और यह लाभदायक भी है।

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

मंगल के लिए अनन्त मूल या नागफनी (गो जिव्हा संगमुसी नाग जिव्हा) की जड़ को लाल रंग के कपड़े में सिलकर मंगलवार या मृगशिरा, चित्रा या घनिष्ठा नक्षत्र में सूर्योदय के समय गले, जेब, भुजा या कमर में सुविधानुसार धारण करें।

मंगल ग्रह के अनिष्ट प्रभाव को शांत करने के लिए हवन में प्रयुक्त सामग्री

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ–साथ आस–पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी–बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री– सोंठ, चमेली का तेल, कुमकुम।
जड़ी– सौंफ की जड़, नाग जिव्हा, अनन्त मूल।

मंगल ग्रह के लिए स्नान और दान

लाल फूल, लाल चंदन, घी, गेहूँ, मसूर, या ताम्बे के बर्तन में सुपारी भरकर दान करने से मंगल प्रसन्न होते हैं। मंगल की प्रसन्नता के लिए स्नान करते समय जल में बेलपत्र या लाल चंदन डालकर स्नान करना चाहिए।

मंगल ग्रह के लिए यंत्र

यंत्र भोजपत्र पर लाल चंदन या अष्टगन्ध या केसर मिले चंदन से तुलसी, अनार, सोने या चाँदी की कलम से अंकित करना चाहिए। यंत्र सोने, चाँदी या ताँबे पर भी अंकित हो सकते हैं, लेकिन ऐसे यंत्र स्थापित करके पूजे जा सकते हैं। धारण करने के लिए भोजपत्र पर ही अंकित करना चाहिए। यंत्रों को हमेशा सोने, चाँदी या ताँबे के ताबीज में भरकर धारण करना चाहिए। यंत्रों का निर्माण जनेऊधारी व्यक्ति को करना चाहिए। इससे यंत्र अधिक जागृत होकर धारणकर्ता पर अपना प्रभाव डालते हैं।

8	3	10
9	7	5
4	11	6

तांत्रिक यंत्र

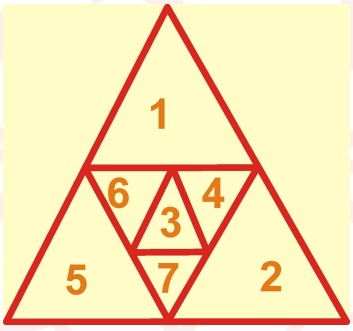

बुध ग्रह से संबंधित मंत्र, यंत्र और उपाय

ओं चन्द्रपुत्राय विद्महे रोहिणीप्रियाय धीमहि तन्नो बुधः प्रचोदयात्।

सौम्योदङ्मुख पीतवर्ण मगधश्चात्रेय गोत्रोद्भवो।
बाणेशानदिशः सुहृच्छनिभृगुः शत्रु सदा शीतगुः।।
कन्या युग्मपतिर्दशाष्ट चतुरः षड्नेत्रकः शोभनो।
विष्णुः पौरुषदेवते शशिसुतः कुर्यात् सदा मंगलम्।।

बुध ग्रह के लिए रत्न

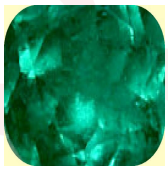

भावगत/राशिगत बुध का फल

आपकी कुण्डली में बुध वृश्चिक राशि में स्थित है। इस कारण से आप कुछ मामलों में भाग्यशाली नहीं हो सकते हैं। हांलांकि, यदि बुध अपने नक्षत्र में स्थित है, और/या यदि मंगल उच्चस्थ या अपनी राशि में स्थित है, तो आप कई मामलों में भाग्यशाली होंगे और अपेक्षाकृत कम आयु में अपनी शिक्षा, बुद्धिमत्ता और विवेक का प्रभावी रूप से प्रयोग करके जीवन में प्रगति करेंगे। लेकिन, यदि कुछ संशोधनकारी प्रभाव आपकी कुण्डली में मौजूद नहीं है, तो आप बहुत बुद्धिमान नहीं हो सकते हैं– जिससे आपकी शिक्षा उत्तम नहीं हो सकती है। अपनी मध्य किशोरावस्था में आप बुरी संगति में पड़ सकते हैं और गलत रास्तों को अपनाकर अपने भविष्य को बर्बाद कर सकते हैं।

आपकी कुण्डली में बुध तीसरे भाव में स्थित है। इस कारण से आप अपने छोटे भाई–बहनों के मामले में भाग्यशाली होंगे। आप अशांत, सक्रिय और व्यस्त होंगे, आपको विषयों के बारे में व्यापक जानकारी और ज्ञान को

प्राप्त करने में रूचि होगी और कई सालों तक आप अनौपचारिक अध्ययन जारी रखेंगे। अधिक लेखन और संवादों का आदान–प्रदान आपके पेशे का हिस्सा हो सकते हैं, आप कई यात्रायें कर सकते हैं। आपकी संगीत में विशेष रूचि हो सकती है या समय व्यतीत करने के लिए आप संगीत का आनन्द ले सकते हैं। यदि नैसर्गिक अशुभ ग्रह बुध के साथ है या उसकी दृष्टि इस पर है, तो आप मानसिक भ्रम का सामना कर सकते हैं और कुछ गलत काम कर सकते हैं।

भावगत/राशिगत बुध का विशेष फल

आपकी कुण्डली में बुध वृश्चिक राशि में स्थित है। आप चालाक एवं झगड़ालू स्वभाव वाले हो सकते हैं। आपके मित्र स्वार्थी हो सकते हैं, जिसकी वजह से आपको आर्थिक हानि हो सकती है।

आपकी कुण्डली में बुध तीसरे, छठे या बारहवें भाव में स्थित है। आपमें संकोच और निराशा की भावना कभी–कभी बहुत ही ज्यादा हो सकती है।

यदि आपकी वाणी में दोष्ष है, जैसे हकलाना, तुतलाना इत्यादि अथवा बुद्धि कमजोर है या अपने जुबान पर नियंत्रण नहीं है, तो आप कार्तिकेय मंत्र का जप पीपल के पेड़ के नीचे बैठकर दस बार करें। यह जप पुष्य नक्षत्र से शुरू करके अगले 27 दिनों तक करें।

यदि आप अपने विचार प्रकट करने में असमर्थ है या जनसमुदाय इत्यादि के सामने आप नहीं बोल पा रहे हैं, तो आप बुध कवच का नियमित पाठ करें।

यदि आपको तनाव से नींद नहीं आती है या नींद आने पर बुरे सपने दिखाई देते हैं, तो आपको बुध गायत्री मंत्र का दिन में 3 बार जप करना चाहिए।

यदि बुध के दोष के कारण धन नहीं ठहरता हो या आमदनी कम हो, तो आपको श्रीसूक्त का पाठ करना चाहिए।

यदि बुध के दोष के कारण धन नहीं ठहरता हो या आमदनी कम हो, तो आपको श्रीसूक्त का पाठ करना चाहिए।

यदि आपकी त्वचा में कोई विकार है, जैसे छोटे फुंसियों––फोड़े इत्यादि, तो इन विकारों को दूर करने के लिए शीतला माता के मंत्र का 10 हजार बार जप करें। जप समाप्त होने पर इसी मंत्र से 1000 आहूति दें।

यदि बुध के किसी दोष के कारण आपको व्यापार में सफलता नहीं मिल पाती है, तो बुध गायत्री का 10 हजार जप करें। जप के पश्चात अपने सामर्थ्य के अनुसार मूंग, घी, चाँदी या हाथी दाँत से बनी वस्तु का दान करें।

यदि बुध के किसी दोष के कारण आप किसी असाध्य रोग से पीड़ित है, तो आपको विष्णु सहस्त्र नाम का जप करना चाहिए।

बुध ग्रह के साधारण उपाय

आपको प्रतिदिन या हर बुधवार के दिन विष्णु सहस्त्र नाम स्त्रोत का पाठ करना चाहिए। प्रतिदिन सुबह ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय नामक द्वादशाक्षरी विष्णु मंत्र का 28 या 108 बार जप करें।

1– बिना अपशब्दों का प्रयोग किए बोलें।

2– अपने से छोटों के साथ प्रेमपूर्वक व्यवहार करें।

3– किसी कार्य के लिए गलत तरीका ना अपनायें।

बुध ग्रह के लिए व्रत

बहुत सारे लोगों के लिए सही तरीके से मंत्र का जप करना किसी भी कारण से थोड़ा मुश्किल हो सकता है। उनके लिए समस्याकारक ग्रह के शासित दिन व्रत रखना ग्रह शांति का एक सरल उपाय है। नीचे ग्रहों के शासित दिन दिए गये हैं।

बुध के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए बुधवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले बुधवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम 21 और अधिकतम 45 बुधवार को रखनी चाहिए। व्रत के दिन स्नान के बाद आपको हरे रंग का वस्त्र पहनना चाहिए और बुध के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का 3 या 17 माला का जप करना चाहिए। इसके बाद मूंग दाल के आटे का हलवा या लड्डू या गुड़ से बनी कोई चीज गरीबों में बांटें और खुद भी खायें। व्रत के अंतिम बुधवार को हवन के साथ पूर्णाहूति करें। इस व्रत से आप शैक्षणिक क्षेत्र या व्यावसायिक मामलों में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। ऐसा माना जाता है कि अमावस्या के दिन व्रत रखने से बुध ग्रह अनुकूल हो जाता है।

अपने माता–पिता एवं बड़े–बुजुर्गों का सम्मान करें। इससे आप दीर्घायु, खुशहाल एवं सुखी–सम्पन्न होंगे, क्योंकि माता–पिता के चरणों में ही स्वर्ग है। यदि आप अपने माता–पिता की सेवा करेंगे, उनकी उचित देखभाल करेंगे, तो आपको भी अपनी औलाद से सम्मान और सुख प्राप्त होगा।

जैसी करनी, वैसी भरनी कहावत के अनुसार, आपको हमेशा अपने कर्मों के अनुसार ही फल प्राप्त होगा। सत्कर्म से आपको मानसिक शांति, खुशी एवं अन्न–धन प्राप्त होंगे, तो बुरे कर्मों के कारण आप अपने जीवन में कई तरह की समस्याओं का सामना कर सकते हैं।

बुध ग्रह पीड़ा शांति हेतु जड़ियों का प्रयोग

ग्रह पीड़ा शांति की कई विधियां हैं, जैसे दान करना, मंत्र जप करना, रत्न धारण करना आदि। जड़ी धारण करना भी ग्रह शांति का एक आसान तरीका है और यह लाभदायक भी है।

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

बुध के लिए विधारा की जड़ या भारंगी की जड़ (बिदायरे जड़ या वर धारा जड़) को हरे वस्त्र में सिलकर बुधवार या आश्लेषा, ज्येष्ठा या रेवती नक्षत्र में सुबह के समय अपने गले, जेब, भुजा या कमर में धारण करें।

बुध ग्रह के अनिष्ट प्रभाव को शांत करने के लिए हवन में प्रयुक्त सामग्री

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ–साथ आस–पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी–बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री– विधारा मूल, देवदार की जड़, सफेद सरसों।
जड़ी– भारंगी की जड़।

बुध ग्रह के लिए स्नान और दान

आपको स्नान के जल में साबुत चावल या सोने का कोई आभूषण डालकर स्नान करना चाहिए। बुध की प्रसन्नता

के लिए चांदी या हाथी दांत से बनी कोई वस्तु, नीला कपड़ा, घी या मूंग दान करना चाहिए।

बुध ग्रह के लिए यंत्र

यंत्र भोजपत्र पर लाल चंदन या अष्टगन्ध या केसर मिले चंदन से तुलसी, अनार, सोने या चाँदी की कलम से अंकित करना चाहिए। यंत्र सोने, चाँदी या ताँबे पर भी अंकित हो सकते हैं, लेकिन ऐसे यंत्र स्थापित करके पूजे जा सकते हैं। धारण करने के लिए भोजपत्र पर ही अंकित करना चाहिए। यंत्रों को हमेशा सोने, चाँदी या ताँबे के ताबीज में भरकर धारण करना चाहिए। यंत्रों का निर्माण जनेऊधारी व्यक्ति को करना चाहिए। इससे यंत्र अधिक जागृत होकर धारणकर्ता पर अपना प्रभाव डालते हैं।

9	4	11
10	8	6
5	12	7

तांत्रिक यंत्र

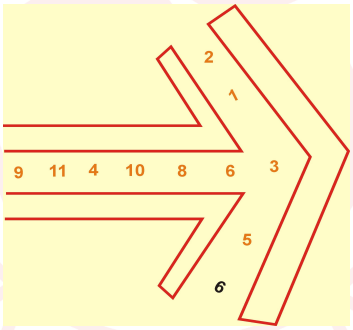

बृहस्पति ग्रह से संबंधित मंत्र, यंत्र और उपाय

ओं अंगिरोजाताय विद्महे वाचस्पतये धीमहि तन्नो गुरुः प्रचोदयात्।

जीवश्चांगिर-गोत्रजोत्तरमुखो दीर्घोत्तरा संस्थितः।
पीतोऽश्वत्थ समिद्ध सिन्धुजनितश्चापोऽथमीनाधिपः।।
सूर्येन्दु क्षितिज प्रियो बुध सितौ शत्रूममाश्चापरे।
सप्तांकद्भिवः शुभः सुगुरुः कुर्यात् सदा मङ्गलम।।

बृहस्पति ग्रह के लिए रत्न

भावगत/राशिगत बृहस्पति का फल

आपकी कुण्डली में बृहस्पति मकर राशि में स्थित है। बृहस्पति यहां नीचस्थ है, इस कारण से आप अपने जीवन के प्रारम्भ में कुछ परेशानियों का सामना कर सकते हैं। यदि बृहस्पति सूर्य को छोड़कर अन्य 7 ग्रहों में से किसी के साथ है, तो बृहस्पति की भुक्ति या दशा के दौरान आप जीवन में शानदार प्रगति करेंगे। बृहस्पति के नीचस्थ होने के कारण से आपको व्याकरण का पर्याप्त ज्ञान नहीं होगा और भाषाओं पर बहुत उत्तम नियंत्रण नहीं हो सकता है। साथ ही आप अपनी संतानों के जन्म के समय पर कुछ परेशानियों का सामना कर सकते हैं, गर्भपात का भय है। यदि आपका लग्न धनु या मीन है, तो आपका जन्म अवश्य एक धनी परिवार में हुआ होगा।

आपकी कुण्डली में बृहस्पति पांचवें भाव में स्थित है। इस कारण से आप कई मामलों में बहुत भाग्यशाली होंगे। आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा और आपके पिता एक आदरणीय और जिम्मेदार व्यक्ति होंगे, आपका जीवनसाथी अपने परिवार में भाई–बहनों में सबसे बड़ा हो सकता है और आपकी संतानें योग्य एवं कर्तव्यपरायण होंगी। आप

बहुत बुद्धिमान, सुशिक्षित, मर्यादित और विवेकी व्यक्ति होंगे, आपके मित्रों और परिचितों का दायरा बहुत बड़ा होगा और पेशे से आपकी आय बहुत सारभूत होगी। आप एक शांतिपूर्ण और आरामदायक जीवन व्यतीत करेंगे। आप अपने प्रशंसनीय कामों के कारण विख्यात होंगे और सामान्यतः लोग आपको उचित आदर देंगे। आपके सम्मान और विश्वसनीयता में हमेशा वृद्धि होगी।

भावगत/राशिगत बृहस्पति का विशेष फल

आपकी जन्मकुण्डली में बृहस्पति मकर राशि में स्थित है। आपमें धैर्य एवं बुद्धि की कमी हो सकती है। पर्याप्त मेहनत के बावजूद आपको उचित सफलता नहीं मिल सकती है। भाई–बन्धुओं से प्रेम एवं सहयोग की कमी हो सकती है। विवाहित जीवन में कटुता आ सकती है। आपमें अपना भला बुरा समझने की समझ कम हो सकती है।

यदि बृहस्पति की कमजोरी के कारण घर में पैसे की बरकत ना हो, तो गुरु गायत्री मंत्र का दिन में 10 बार पाठ करें।

व्यापार में वृद्धि के लिए आठ गुरु मंत्रों से गंगा जल को अभिमंत्रित करके अपने काम–धंधे की जगह पर छिड़कें।

यदि अपने जीवनसाथी के साथ आपके मतभेद हैं, तो गुरु गायत्री मंत्र का रोज सुबह 10 बार पाठ करें।

यदि आपके बीच कलह की स्थिति है, तो शिव एवं पार्वती की पूजा करें एवं अर्धनारीनटेश्वर स्त्रोत का पाठ सुबह–शाम करें।

यदि लड़की के विवाह में रूकावट आ रही हो या रिश्ता बनते–बनते रह जा रहा हो, तो तीन सौ पार्थिव लिंगों पर पूजा करने से इस समस्या का निवारण हो सकता है। यदि लड़के के विवाह में ऐसी स्थिति बन रही हो, तो दुर्गा सप्तशती का 17 बार पाठ करें।

बृहस्पति ग्रह के साधारण उपाय

बृहस्पति जनित दोषों को दूर करने के लिए आपको स्कन्द पुराण में वर्णित बृहस्पति स्त्रोत का पाठ करना चाहिए और पूर्णिमा इत्यादि के दिन सत्यनारायण भगवान की कथा सुननी चाहिए। बृहस्पति देव को हल्दी से रंगे चावल, पीले फूल, पीले चंदन समर्पित करना चाहिए। बृहस्पतिवार के दिन साबुत हल्दी, चने की दाल, नमक आदि का दान करना चाहिए।

1– शिक्षकों, गरुओं, वृद्धों, साधु–संतों और उच्च शिक्षित लोगों से प्रेमपूर्वक व्यवहार करें।
2– कोर्ट–कचहरी में झूठी गवाही ना दें।

बृहस्पति ग्रह के लिए व्रत

बहुत सारे लोगों के लिए सही तरीके से मंत्र का जप करना किसी भी कारण से थोड़ा मुश्किल हो सकता है। उनके लिए समस्याकारक ग्रह के शासित दिन व्रत रखना ग्रह शांति का एक सरल उपाय है। नीचे ग्रहों के शासित दिन दिए गये हैं।

बृहस्पति के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए गुरुवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले गुरुवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम 21 गुरुवार और अधिकतम 3 साल तक प्रत्येक गुरुवार को रखनी चाहिए। व्रत के दिन स्नान के बाद आपको पीले रंग का वस्त्र पहनना चाहिए और बृहस्पति के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का 3 या 11 माला का जप करना चाहिए। बृहस्पति को पीले फूल अर्पित करना चाहिए। इस दिन केवल बेसन के लड्डू (गुड़ से बना) या केसरिया या पीला रंग लिए मीठा चावल गरीबों के बीच बांटना चाहिए एवं खुद भी खाना चाहिए। व्रत के अंतिम गुरुवार को हवन के साथ पूर्णाहूति करें एवं गरीब ब्राह्मणों के बीच भोजन (पीला रंग लिए खाना) बांटें। इस व्रत को करने से आप बुद्धिमान, विद्वान एवं धनवान होंगे। अगर कोई अविवाहित कन्या इस व्रत को करे तो जल्द शादी की संभावना होती है।

अपने माता–पिता एवं बड़े–बुजुर्गों का सम्मान करें। इससे आप दीर्घायु, खुशहाल एवं सुखी–सम्पन्न होंगे, क्योंकि माता–पिता के चरणों में ही स्वर्ग है। यदि आप अपने माता–पिता की सेवा करेंगे, उनकी उचित देखभाल करेंगे, तो आपको भी अपनी औलाद से सम्मान और सुख प्राप्त होगा।

जैसी करनी, वैसी भरनी कहावत के अनुसार, आपको हमेशा अपने कर्मों के अनुसार ही फल प्राप्त होगा। सत्कर्म से आपको मानसिक शांति, खुशी एवं अन्न–धन प्राप्त होंगे, तो बुरे कर्मों के कारण आप अपने जीवन में कई तरह की समस्याओं का सामना कर सकते हैं।

बृहस्पति ग्रह पीड़ा शांति हेतु जड़ियों का प्रयोग

ग्रह पीड़ा शांति की कई विधियां हैं, जैसे दान करना, मंत्र जप करना, रत्न धारण करना आदि। जड़ी धारण करना भी ग्रह शांति का एक आसान तरीका है और यह लाभदायक भी है।

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

बृहस्पति के लिए हल्दी की गांठ या केले की जड़ को पीले कपड़े में सिलकर बृहस्पतिवार या पुनर्वसु, विशाखा या पूर्व भाद्रपद नक्षत्र में शाम के समय अपने गले, जेब, भुजा या कमर में धारण करें।

बृहस्पति ग्रह के अनिष्ट प्रभाव को शांत करने के लिए हवन में प्रयुक्त सामग्री

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ–साथ आस–पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी–बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री– हल्दी, सूखा गुलाब।
जड़ी– केले की जड़।

बृहस्पति ग्रह के लिए स्नान और दान

स्नान करते समय जल में बड़ी इलायची, पीली सरसों के दाने डालकर स्नान करने से बृहस्पति जनित दोषों का निवारण होता है। बृहस्पति की प्रसन्नता के लिए हल्दी, पीला कपड़ा, पीला अन्न, नमक, मेंहदी या नींबू का दान करना चाहिए।

बृहस्पति ग्रह के लिए यंत्र

यंत्र भोजपत्र पर लाल चंदन या अष्टगन्ध या केसर मिले चंदन से तुलसी, अनार, सोने या चाँदी की कलम से अंकित करना चाहिए। यंत्र सोने, चाँदी या ताँबे पर भी अंकित हो सकते हैं, लेकिन ऐसे यंत्र स्थापित करके पूजे जा सकते हैं। धारण करने के लिए भोजपत्र पर ही अंकित करना चाहिए। यंत्रों को हमेशा सोने, चाँदी या ताँबे के ताबीज में भरकर धारण करना चाहिए। यंत्रों का निर्माण जनेऊधारी व्यक्ति को करना चाहिए। इससे यंत्र अधिक

जागृत होकर धारणकर्ता पर अपना प्रभाव डालते हैं।

10	5	12
11	9	7
6	13	8

तांत्रिक यंत्र

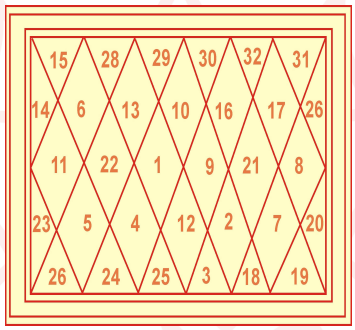

शुक्र ग्रह से संबंधित मंत्र, यंत्र और उपाय

ओं भृगुपुत्राय विद्महे श्वेतवाहनाय धीमहि तन्नः शुक्रः प्रचोदयात्।

शुक्रो भार्गवगोत्रजः सितनिभः प्राचीमुखः पूर्वदिक्।
पञ्चाङ्गो वृषभस्तुलाधिप महाराष्ट्राधिपोदुम्बरः।।
इन्द्राणी मघवानुभौ बुध शनी मित्रार्क चन्द्रौ रिपू।
षष्ठो द्विर्दश वर्जितो भृगुसुतः कुर्यात् सदा मंगलम्।।

शुक्र ग्रह के लिए रत्न

भावगत/राशिगत शुक्र का फल

आपकी कुण्डली में शुक्र मकर राशि में स्थित है। जैसाकि शुक्र इस राशि में सुव्यवस्थित नहीं है, आप कुछ मामलों में भाग्यशाली नहीं हो सकते हैं। आप किसी रोग से ग्रसित हो सकते हैं, आपका शरीर कमजोर हो सकता है और कंजूस हो सकते हैं। जैसाकि वादों को पूरा करना आपकी आदत नहीं हो सकती है, अतः लोग आप पर विश्वास नहीं कर सकते हैं। आपको दूसरों के मामलों में अधिक रूचि हो सकती है, कुछ अन्य के पास होने वाली चीज का स्वयं के पास अभाव होने की सोच आपको अप्रसन्न कर सकती है। आपका वैवाहिक जीवन ना ही खुशहाल हो सकता है, और ना ही लम्बे समय तक रहने वाला हो सकता है। हालांकि, बाद की आयु में आपकी संभावनायें उत्तम हैं एवं आप जीवन के उस भाग में काफी सुखी होंगे।

आपकी कुण्डली में शुक्र पांचवें भाव में स्थित है। इस कारण से आप मृदुभाषी, परिष्कृत स्वभाव वाले सभ्य व्यक्ति, मनोहारी ढंगों और आकर्षक व्यवहार वाले होंगे। आप नम्रता, ज्ञान और मेधा की प्रतिमूर्ति होंगे और ललित

कलाओं के किसी क्षेत्र में निपुणता प्राप्त कर सकते हैं और अपनी रचनात्मक योग्यताओं के कारण विख्यात होंगे। आप पवित्र मंत्रों के जाप से कुछ वांछित प्रभाव प्राप्त कर सकते हैं और जादुई उपचार के द्वारा पीड़ित लोगों के दुखों को दूर करने का गुण भी प्राप्त कर सकते हैं। आप और आपका जीवनसाथी दोनों एक दूसरे को अपने जीवन से अधिक चाहेंगे, आपकी पुत्रियों की संख्या अधिक हो सकती है– जो सुन्दर और कर्तव्यपरायण होंगी। आपका घरेलू जीवन वास्तव में बहुत खुशहाल और आनन्दमय होगा। यदि शुक्र वृषभ या मीन या तुला राशि में स्थित है, तो लाभकारी परिणामों की संख्या और भी बढ़ सकती है।

भावगत/राशिगत शुक्र का विशेष फल

आपकी कुण्डली में शुक्र मकर राशि में स्थित है। विपरीत लिंग के अपने से बड़े व्यक्ति के साथ आपके नजदीकी संबंध हो सकते हैं, जिससे आपको हानि भी हो सकती है। आप हृदय रोग से पीड़ित हो सकती हैं।

संतान सुख के लिए कन्याओं को किसी भी प्रकार से ठेस नहीं पहुंचाना चाहिए। नवरात्र के दौरान कन्याओं का पूजन कर अपने सामर्थ्य के अनुसार भोजन एवं वस्त्र उपहार देना चाहिए। साल में किसी अवसर पर किसी व्यक्ति को शिव––पार्वती या विष्णु––लक्ष्मी का फोटो भेंट करना चाहिए या किसी ब्राह्मण को बिछाने योग्य चादर, तकिया या वस्त्रों का जोड़ा दान करना चाहिए। सौन्दर्य लहरी स्त्रोत या देवी सूक्त और श्रीकवच का रोजाना पाठ भी काफी लाभदायक होगा।

यदि शुक्र के दोष के कारण काम––वासना अनियंत्रित हो या अप्राकृतिक वासना के प्रति रूझान हो, तो आपको अथर्ववेद में कहे गये शिव संकल्प का रोजाना सोते समय एक बार पाठ करना चाहिए। आप शुक्र गायत्री का भी रोजाना 10 बार पाठ कर सकते हैं।

यदि घर में दरिद्रता हो या लक्ष्मी का वास ना हो, तो सुबह में अर्गला एवं कीलक स्त्रोत का पाठ करना चाहिए।

यदि शुक्र दोष के कारण शरीर में आलस्य हो या अधिक सोने के कारण कार्य अधूरे रह जा रहे हो, तो सुबह एवं रात में सोते समय रात्रिसूक्त का पाठ करना चाहिए।

यदि शुक्र दोष के कारण विवाह में बाधा उत्पन्न होती है, या संबंध तय नहीं हो पा रहा है, तो शुक्र स्तवराज का पाठ करना चाहिए।

शुक्र के दोष के कारण यदि बार––बार चोट लगती है, या शरीर में विकार उत्पन्न होता है, तो शुक्र कवच का पाठ करना चाहिए।

शुक्र ग्रह के साधारण उपाय

रोजाना सुबह स्नान करने के पश्चात तुलसी के पौधे को सींचकर आगे लिखे मंत्र का एक बार पाठ करें। फिर वहीं पर खड़े होकर तुलसी कवच का पाठ करें।

1– अपने जीवनसाथी से ही संबंध रखें।
2– कन्याओं और पराई स्त्रियों के प्रति सम्मान का भाव रखें।

शुक्र ग्रह के लिए व्रत

बहुत सारे लोगों के लिए सही तरीके से मंत्र का जप करना किसी भी कारण से थोड़ा मुश्किल हो सकता है। उनके लिए समस्याकारक ग्रह के शासित दिन व्रत रखना ग्रह शांति का एक सरल उपाय है। नीचे ग्रहों के शासित दिन दिए गये हैं।

शु क्र के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए शुक्रवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले शुक्रवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम 21 गुरुवार और अधिकतम 31 शुक्रवार को रखनी चाहिए। व्रत के दिन स्नान के बाद आपको सफेद रंग का वस्त्र पहनना चाहिए और शुक्र के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का 3 या 21 माला का जप करना चाहिए। व्रत के दिन मीठा चावल या दूध से बना पदार्थ खुद खाना चाहिए एवं एक आंख वाले आदमी या सफेद गाय को खिलाना चाहिए। व्रत के अंतिम शुक्रवार को हवन के साथ पूर्णाहूति करें। इसके बाद चांदी, सफेद कपड़े, खीर आदि गरीबों के बीच दान करना चाहिए। इस व्रत को करने से शुक्र अनुकूल होगा और आपको आर्थिक लाभ हो सकता है तथा आपका वैवाहिक जीवन खुशहाल होगा।

अपने माता–पिता एवं बड़े–बुजुर्गों का सम्मान करें। इससे आप दीर्घायु, खुशहाल एवं सुखी–सम्पन्न होंगे, क्योंकि माता–पिता के चरणों में ही स्वर्ग है। यदि आप अपने माता–पिता की सेवा करेंगे, उनकी उचित देखभाल करेंगे, तो आपको भी अपनी औलाद से सम्मान और सुख प्राप्त होगा।

जैसी करनी, वैसी भरनी कहावत के अनुसार, आपको हमेशा अपने कर्मों के अनुसार ही फल प्राप्त होगा। सत्कर्म से आपको मानसिक शांति, खुशी एवं अन्न–धन प्राप्त होंगे, तो बुरे कर्मों के कारण आप अपने जीवन में कई तरह की समस्याओं का सामना कर सकते हैं।

शुक्र ग्रह पीड़ा शांति हेतु जड़ियों का प्रयोग

ग्रह पीड़ा शांति की कई विधियां हैं, जैसे दान करना, मंत्र जप करना, रत्न धारण करना आदि। जड़ी धारण करना भी ग्रह शांति का एक आसान तरीका है और यह लाभदायक भी है।

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

शुक्र ग्रह के लिए अनार, सरपोंखा या अरण्ड मूल की जड़ को सफेद कपड़े में सिलकर शुक्रवार या भरणी, पूर्व फाल्गुनी या उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में दोपहर के समय अपने गले, भुजा, जेब या कमर में धारण करें।

शुक्र ग्रह के अनिष्ट प्रभाव को शांत करने के लिए हवन में प्रयुक्त सामग्री

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ–साथ आस–पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी–बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री– सरपोखों, अनार की जड़, सूखे आंवले।
जड़ी– अरंडे की जड़।

शुक्र ग्रह के लिए स्नान और दान

स्नान करते समय जल में छोटी इलायची, नींबू का रस अथवा इत्र मिलाकर स्नान करने से शुक्र प्रसन्न होते हैं। शुक्र के लिए बासमती चावल, घी, चांदी, सफेद वस्त्र, सफेद चंदन, कपूर, धूप और अगरबत्ती, इत्र और रेशमी वस्त्र का यथाशक्ति दान करना चाहिए।

शुक्र ग्रह के लिए यंत्र

यंत्र भोजपत्र पर लाल चंदन या अष्टगन्ध या केसर मिले चंदन से तुलसी, अनार, सोने या चाँदी की कलम से अंकित करना चाहिए। यंत्र सोने, चाँदी या ताँबे पर भी अंकित हो सकते हैं, लेकिन ऐसे यंत्र स्थापित करके पूजे जा सकते हैं। धारण करने के लिए भोजपत्र पर ही अंकित करना चाहिए। यंत्रों को हमेशा सोने, चाँदी या ताँबे के ताबीज में भरकर धारण करना चाहिए। यंत्रों का निर्माण जनेऊधारी व्यक्ति को करना चाहिए। इससे यंत्र अधिक जागृत होकर धारणकर्ता पर अपना प्रभाव डालते हैं।

11	6	13
12	10	8
7	14	9

तांत्रिक यंत्र

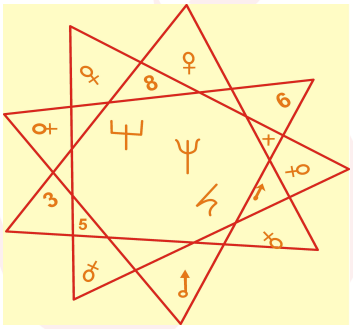

शनि ग्रह से संबंधित मंत्र, यंत्र और उपाय

ओं कृष्णांगाय विद्महे रविपुत्राय धीमहि तन्नः सौरिः प्रचोदयात्।

मन्दः कृष्णनिभस्तु पश्चिममुखः सौराष्ट्रकः काश्यपः।
स्वामी नक्रभकुम्भयोर्बुधसितौ मित्रे समश्चाऽङ्गिराः।।
स्थानं पश्चिमदिक्प्रजापति यमौ देवौ धनुष्यासनः।
षटत्रिस्थः शुभकृच्छनी रविसुतः कुर्यात् मंगलम्।।

शनि ग्रह के लिए रत्न

भावगत/राशिगत शनि का फल

आपकी कुण्डली में शनि मिथुन राशि में स्थित है। इस कारण से आप युवा विचारों वाले, काफी बुद्धिमान, बहुत उर्जावान और उत्साही व्यक्ति होंगे। आपमें जल्दबाजी में निर्णय लेने की आदत नहीं होगी और विभिन्न संभावनाओं का सावधानीपूर्वक विश्लेषण करके और उपयोगी पहलूओं का उचित ध्यान रखते हुए ही आप अपनी सुविचारित योजनाओं को आकार देंगे। आप अपने कार्यक्षेत्र, कर्तव्यों और जिम्मेदारियों तथा उपलब्धियों की संभावनाओं के मामले में बहुत अधिक चैतन्य होंगे। अपने निवास स्थान से बहुत दूर किसी स्थान पर आप प्रगति करेंगे और रचनात्मक कामों में प्रयास करके अपने भाग्य को संवारेंगे। पवित्र प्राचीन शास्त्रों में आपकी गहरी रूचि हो सकती है और मंत्रों के जाप तथा प्रार्थनाओं में दृढ़ आस्था हो सकती है।

आपकी कुण्डली में शनि दसवें भाव में स्थित है। यह स्थिति बहुत युक्तिपूर्ण और संभवतः खतरनाक है, आपको बहुत सावधान और सजग रहना होगा और आपको एक नियमित तथा अनुशासित जीवनशैली अपनानी चाहिए एवं

सद्मार्ग से कभी विचलित नहीं होना चाहिए। आपमें लोगों के ध्यान को मोड़ने की विलक्षण प्रतिभा होगी और आप वास्तव में जो सोचेंगे, लोग उस पर विश्वास कर सकते हैं। यदि आप किसी सामाजिक उद्देश्य के लिए काम कर रहे हैं या राजनीति में शामिल हैं, तो आप बहुमत के सक्रिय सहयोग से अपने समकालीनों से बहुत आगे निकलने में सक्षम होंगे, लेकिन जैसाकि आप बड़ी अभिलाषाओं को पूरा कर पाने में सक्षम नहीं हो सकते हैं, आप अचानक किसी आकस्मिक पतन का सामना कर सकते हैं– विशेषकर यदि शनि वक्री है। यदि मंगल शनि के साथ में स्थित है, तो आपके किसी सगे छोटे भाई या बहन की मानसिक स्थिति का क्षय आपकी वास्तविक भारी चिन्ता का कारण हो सकता है। यदि शनि कुम्भ या मकर या तुला राशि में स्थित है, तो आप बहुत भाग्यशाली होंगे– जैसाकि आपको शश योग (एक पंचमहापुरुष युति) का सुख प्राप्त होगा। आप एक महत्वपूर्ण और सम्माननीय व्यक्ति की तरह समाज में जाने जायेंगे, लेकिन आपको अपने सगे–संबंधियों से दूर रहना पड़ सकता है।

भावगत/राशिगत शनि का विशेष फल

आपकी जन्मकुण्डली में शनि मिथुन राशि में स्थित है। आप प्रायः कर्जदारी की वजह से परेशान होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में शनि दसवें भाव में स्थित है। वरिष्ठ अधिकारियों के साथ आपके मतभेद हो सकते हैं। आपके सिर या मस्तिष्क में किसी तरह के विकार होने की संभावना है। अपने ससुराल वालों के कारण कष्ट प्राप्त हो सकता है।

शनि के राशिगत अथवा भावगत दोष के निवारण के लिए शनि गायत्री मंत्र का जप रोजाना आसन पर खड़े होकर एक निश्चित संख्या में करें।

यदि शनि की दशा अथवा गोचर के दौरान किसी तरह के रोग या दुर्घटना की वजह से जीवन पर संकट आए, तो मार्कण्डेय जी द्वारा रचित भगवान शंकर के महामृत्युंजय मंत्र का जप करना चाहिए।

यदि आपकी संतान आपके बताये रास्ते पर ना चलकर आपकी अवहेलना करती है, तो आपको शनि गायत्री का नियमित 28 या 108 बार जप करना चाहिए। शाम के समय हनुमान जी का ध्यान करते हुए हनुमान जी के भुजंग स्तोत्र या शिवताण्डव स्तोत्र का पाठ करने से आपको लाभ होगा।

शनि के साढ़ेसाती, गोचर काल अथवा शनि की दशा या अन्तर्दशा के अनुसार, यदि कुफल प्राप्त हो रहा हो, तो शनि स्तवराज मंत्र का जप करना चाहिए।

यदि शनि की दशा या गोचर के दौरान आपको बार––बार चोट लगती हो अथवा कोई रोग आपको परेशान कर रहा हो, तो आपको शनैश्चराष्टक स्तोत्र का पाठ करना चाहिए।

शनि ग्रह के साधारण उपाय

सोमवार, बुधवार एवं शनिवार को कडुवे तेल का मालिश करके स्नान करें और साफ–सफाई पर विशेष ध्यान दें। साफ–सुथरा रहने से शनि के सामान्य दोष स्वतः ही नष्ट हो जाते हैं। स्नान के पश्चात रोजाना भगवान शंकर

जी, हनुमान जी या भैरव जी की स्तुति करनी चाहिए। टूटे बर्तन या आईना या चारपाई का प्रयोग ना करें।

नौकरों, दासों, मजदूरों व मेहनतकश लोगों का हक ना मारें। उनका व्यर्थ में अपमान ना करें।

शनि ग्रह के लिए व्रत

बहुत सारे लोगों के लिए सही तरीके से मंत्र का जप करना किसी भी कारण से थोड़ा मुश्किल हो सकता है। उनके लिए समस्याकारक ग्रह के शासित दिन व्रत रखना ग्रह शांति का एक सरल उपाय है। नीचे ग्रहों के शासित दिन दिए गये हैं।

शनि के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए शनिवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले शनिवार से करनी चाहिए। व्रत के दिन स्नान के बाद आपको काले रंग का वस्त्र पहनना चाहिए और शनि के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का 3 या 19 माला का जप करना चाहिए। उसके बाद साफ पानी, काले तिल का बीज, काला या नीला फूल, लौंग, गंगाजल, चीनी एवं दूध एक बर्तन में लेकर पूर्वाभिमुख होकर पीपल की जड़ में डालें। इस दिन केवल उड़द दाल एव तेल से बनी कोई भोज्य सामग्री खानी चाहिए एवं दान करनी चाहिए। व्रत के अंतिम दिन हवन के साथ पूर्णाहूति करें और तेल से बनी कोई चीज, काला कपड़ा, चमड़े का जूता आदि दान करना चाहिए। इस व्रत को करने से आपको झगड़े एवं वाद–विवाद में सफलता प्राप्त होगी। फैक्ट्री मालिक एवं लोहे या स्टील का कारोबार करने वालों को काफी सफलता प्राप्त होगी।

अपने माता–पिता एवं बड़े–बुजुर्गों का सम्मान करें। इससे आप दीर्घायु, खुशहाल एवं सुखी–सम्पन्न होंगे, क्योंकि माता–पिता के चरणों में ही स्वर्ग है। यदि आप अपने माता–पिता की सेवा करेंगे, उनकी उचित देखभाल करेंगे, तो आपको भी अपनी औलाद से सम्मान और सुख प्राप्त होगा।

जैसी करनी, वैसी भरनी कहावत के अनुसार, आपको हमेशा अपने कर्मों के अनुसार ही फल प्राप्त होगा। सत्कर्म से आपको मानसिक शांति, खुशी एवं अन्न–धन प्राप्त होंगे, तो बुरे कर्मों के कारण आप अपने जीवन में कई तरह की समस्याओं का सामना कर सकते हैं।

शनि ग्रह पीड़ा शांति हेतु जड़ियों का प्रयोग

ग्रह पीड़ा शांति की कई विधियां हैं, जैसे दान करना, मंत्र जप करना, रत्न धारण करना आदि। जड़ी धारण करना भी ग्रह शांति का एक आसान तरीका है और यह लाभदायक भी है।

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

शनि के लिए बिछुआ की जड़ नीले कपड़े में सिलकर शनिवार या पुष्य, अनुराधा या उत्तर भाद्रपद नक्षत्र में दोपहर के समय अपने गले, जेब, भुजा या कमर में धारण करें।

शनि ग्रह के अनिष्ट प्रभाव को शांत करने के लिए हवन में प्रयुक्त सामग्री

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ–साथ आस–पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी–बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री– काला तिल, काला उड़द, बिछुआ की जड़।
जड़ी– धतुरे की जड़।

शनि ग्रह के लिए स्नान और दान

स्नान करते समय जल में धान का छिलका, जड़ सहित दूब अथवा काला तिल डालकर स्नान करने से शनि

जनित दोषों का नाश होता है। शनि की प्रसन्नता के लिए बड़ी ईलायची, जायफल, लौंग, काला या नीला कपड़ा, मोटे अनाज, काली तिल, लोहे का सामान, गूगल और साबूत उड़द का अपनी शक्ति अनुसार दान करना चाहिए।

शनि ग्रह के लिए यंत्र

यंत्र भोजपत्र पर लाल चंदन या अष्टगन्ध या केसर मिले चंदन से तुलसी, अनार, सोने या चाँदी की कलम से अंकित करना चाहिए। यंत्र सोने, चाँदी या ताँबे पर भी अंकित हो सकते हैं, लेकिन ऐसे यंत्र स्थापित करके पूजे जा सकते हैं। धारण करने के लिए भोजपत्र पर ही अंकित करना चाहिए। यंत्रों को हमेशा सोने, चाँदी या ताँबे के ताबीज में भरकर धारण करना चाहिए। यंत्रों का निर्माण जनेऊधारी व्यक्ति को करना चाहिए। इससे यंत्र अधिक जागृत होकर धारणकर्ता पर अपना प्रभाव डालते हैं।

12	7	14
13	11	9
8	15	10

तांत्रिक यंत्र

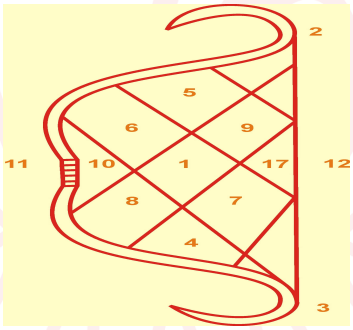

राहु ग्रह से संबंधित मंत्र, यंत्र और उपाय

ओं नीलवर्णाय विद्महे सैंहिकेयाय धीमहि तन्नो राहुः प्रचोदयात्।

राहुः सिंहलदेशजश्च निर्ऋतिः कृष्णाङ्गशूर्पासनो।
यः पैठीनसि गोत्रसम्भवसमिद् दूर्वामुखो दक्षिणः।।
यः सर्पाद्यधिदैवते च निर्ऋतिः प्रत्याधिदेवः सदा।
षट्त्रिंस्थः शुभकृच सिंहिकासुतः कुर्यात् सदा मंगलम्।।

राहु गग्रह के लिए रत्न

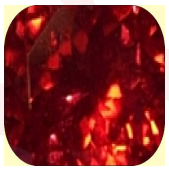

भावगत/राशिगत राहु का फल

आपकी कुण्डली में राहु चौथे भाव में स्थित है। इस कारण से आप उत्तम शिक्षा प्राप्त करने और बौद्धिक कामों में सफलता प्राप्त करने के मामले में भाग्यशाली होंगे, लेकिन आपको वायु विकार हो सकता है और आपकी माता को लकड़ी या पत्थर से चोट लग सकती है। कुछ छोटी समस्याओं के कभी–कभी उभरने के कारण आपको अपने घर या निवास स्थान पर बहुत आराम महसूस नहीं हो सकता है। यदि बृहस्पति भी राहु के साथ है, तो आपकी किसी एक संतान के विचार कुछ हद तक संशयपूर्ण हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में राहु लग्न से या तो केन्द्र भाव में या त्रिकोण भाव में स्थित है। यह एक अनुकूल युति है, इस स्थिति में होने के कारण राहु इस कुण्डली में एक तात्कालिक लाभप्रदाता का काम करता है। आप शैक्षिणिक और/या बौद्धिक कार्यों को उत्तम प्रकार से करेंगे और अपने व्यवसाय के क्षेत्र में आपका सुधार होगा। आप बहुत भाग्यशाली होंगे तथा राहु की भुक्ति या दशा के दौरान आपको अपने सभी कार्यों में सफलता मिलेगी। हालांकि

आप इसके अन्तिम चरण के दौरान कुछ छोटी खीज पैदा करने वाली समस्याओं का सामना कर सकते हैं।

आपकी कुण्डली में राहु प्रतिकूल आठवें भाव में उपस्थित नहीं है और यह सूर्य के निकट (3 डिग्री 20 मिनट के अन्दर) स्थित है। आपको अपनी आंखों से संबंधी कुछ परेशानियां हो सकती हैं। फिर भी कई संदर्भों में यह एक अनुकूल योग है। बृहस्पति ग्रह की दशा एवं भुक्ति अवधि के दौरान, आपके जीवन में किसी समय, ऐसे व्यक्ति से मिलने की संभावना है जिसका लग्न सिंह है– जिससे कि आप लाभ अर्जित करेंगे।

भावगत/राशिगत राहु का विशेष फल

आपकी कुण्डली में राहु सूर्य या चंद्रमा के साथ स्थित है। आपको कोई निर्णय लेने में मुश्किल हो सकती है या आपकी निर्णय क्षमता में कमी हो सकती है।

राहु ग्रह के साधारण उपाय

स्नान करते समय अपनी नाभि में खुशबुदार तेल का लेप करके पूर्वाभिमुख होकर स्नान करें। विष्णु, शिव या दुर्गा का स्मरण कर दिनचर्या शुरू करें। ग्रहण के दौरान, सूर्यास्त से ठीक पहले या बाद में तथा आस–पास में किसी की मृत्यु के बाद शव उठने तक भोजन, मैथुन और कटु वाणी का प्रयोग ना करें। भोजन करते समय अपना सिर ढक कर ना रखें और दक्षिण की ओर मुँह करके भोजन ना करें।

1– अस्पतालों, अनाथालयों अथवा सैनिक संस्थानों में कार सेवा करें।
2– सफाई कर्मचारियों के साथ दुर्व्यवहार ना करें।

राहु ग्रह के लिए व्रत

बहुत सारे लोगों के लिए सही तरीके से मंत्र का जप करना किसी भी कारण से थोड़ा मुश्किल हो सकता है। उनके लिए समस्याकारक ग्रह के शासित दिन व्रत रखना ग्रह शांति का एक सरल उपाय है। नीचे ग्रहों के शासित दिन दिए गये हैं।

राहु के लिए कोई भी दिन निश्चित नहीं किया गया है। राहु के लिए शनिवार का व्रत किया जा सकता है।

राहु के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए शनिवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले शनिवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम 18 शनिवार को रखनी चाहिए। व्रत के दिन स्नान के बाद आपको काले रंग का वस्त्र पहनना चाहिए और शनि के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का 3 या 18 माला का जप करना चाहिए। इसके बाद जल, हरी घास एवं कुश एक बर्तन में लेकर पीपल की जड़ में डालना चाहिए। इस दिन केवल मीठी चपाती खुद भी खानी चाहिए एवं दान भी करनी चाहिए। रात में पीपल की जड़ में दीपक जलाना चाहिए। इस व्रत को करने से शत्रुओं पर विजय, सरकार से सहयोग एवं राहु–केतु जनित रोगों से मुक्ति प्राप्त होती है।

अपने माता–पिता एवं बड़े–बुजुर्गों का सम्मान करें। इससे आप दीर्घायु, खुशहाल एवं सुखी–सम्पन्न होंगे, क्योंकि माता–पिता के चरणों में ही स्वर्ग है। यदि आप अपने माता–पिता की सेवा करेंगे, उनकी उचित देखभाल करेंगे, तो आपको भी अपनी औलाद से सम्मान और सुख प्राप्त होगा।

जैसी करनी, वैसी भरनी कहावत के अनुसार, आपको हमेशा अपने कर्मों के अनुसार ही फल प्राप्त होगा। सत्कर्म से आपको मानसिक शांति, खुशी एवं अन्न–धन प्राप्त होंगे, तो बुरे कर्मों के कारण आप अपने जीवन में कई तरह की समस्याओं का सामना कर सकते हैं।

राहु ग्रह पीड़ा शांति हेतु जड़ियों का प्रयोग

ग्रह पीड़ा शांति की कई विधियां हैं, जैसे दान करना, मंत्र जप करना, रत्न धारण करना आदि। जड़ी धारण करना भी ग्रह शांति का एक आसान तरीका है और यह लाभदायक भी है।

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

राहु के लिए मलय चंदन की जड़ की माला बुधवार या शनिवार या आर्द्रा, स्वाति या शतभिषा नक्षत्र में शाम 4 बजे के आस–पास अपने गले, भुजा, जेब या कमर में धारण करें।

राहु ग्रह के अनिष्ट प्रभाव को शांत करने के लिए हवन में प्रयुक्त सामग्री

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ–साथ आस–पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी–बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री– चंदन की लकड़ी।
जड़ी– अष्टगन्ध मूल।

राहु ग्रह के लिए स्नान और दान

स्नान करते समय जल में कुश या सरकण्डा, नीम के पत्ते या फल, नागरमोथा आदि डालकर स्नान करने से राहु जनित दोषों का निवारण होता है। राहु की प्रसन्नता के लिए ऊन का कपड़ा, जटादार पानी वाला नारियल, कम्बल एवं पेठा बांस की टोकरी में धातु का बना सर्प रखकर दान करना चाहिए।

राहु ग्रह के लिए यंत्र

यंत्र भोजपत्र पर लाल चंदन या अष्टगन्ध या केसर मिले चंदन से तुलसी, अनार, सोने या चाँदी की कलम से अंकित करना चाहिए। यंत्र सोने, चाँदी या ताँबे पर भी अंकित हो सकते हैं, लेकिन ऐसे यंत्र स्थापित करके पूजे जा सकते हैं। धारण करने के लिए भोजपत्र पर ही अंकित करना चाहिए। यंत्रों को हमेशा सोने, चाँदी या ताँबे के ताबीज में भरकर धारण करना चाहिए। यंत्रों का निर्माण जनेऊधारी व्यक्ति को करना चाहिए। इससे यंत्र अधिक जागृत होकर धारणकर्ता पर अपना प्रभाव डालते हैं।

13	8	15
14	12	10
9	16	11

तांत्रिक यंत्र

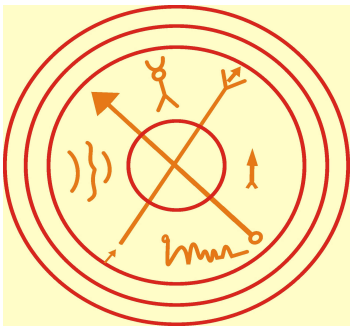

केतु ग्रह से संबंधित मंत्र, यंत्र और उपाय

ओं धूम्रवर्णाय विद्महे कपोतवाहनाय धीमहि तन्नः केतुः प्रचोदयात्।

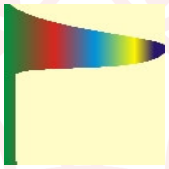

केतुर्जैमिनिगोत्रजः कुशसमृद् वायव्यकोणे स्थितः।
चित्राङ्गध्वज लाञ्छनो हिमगुहो यो दक्षिणाशामुखः।।
ब्रह्मा चैव सचित्र चित्रसहितः प्रत्याधिदेवः सदा।
षट्त्रिंस्थः शुभकृच बर्बरपतिः कुर्यात् सदा मङ्गलम्।।

केतु ग्रह के लिए रत्न

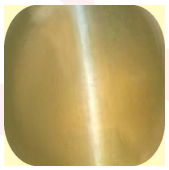

भावगत/राशिगत केतु का फल

आपकी कुण्डली में केतु दसवें भाव में स्थित है। इस कारण आपको अपने व्यवसाय के कारण अपना घर या निवास स्थान छोड़ना पड़ सकता है। लेकिन यह आपको और प्रसन्न बना सकता है– चूंकि आप अपने घर या निवास स्थान पर रहते हुए बहुत प्रसन्न नहीं हो सकते हैं। यदि मंगल भी केतु के साथ स्थित है, तो आपके सगे छोटे भाई–बहनों को कुछ गंभीर प्रकार की समस्यायें हो सकती हैं, लेकिन यदि कोई नैसर्गिक शुभ ग्रह केतु के साथ है या उसकी दृष्टि इस पर है, तो आप मनोरम वातावरण के बीच में एक उत्तम समय गुजारेंगे।

केतु ग्रह के साधारण उपाय

स्नान करते समय अपनी नाभि में खुशबुदार तेल का लेप करके पूर्वाभिमुख होकर स्नान करें। विष्णु, शिव या दुर्गा का स्मरण कर दिनचर्या शुरू करें। ग्रहण के दौरान, सूर्यास्त से ठीक पहले या बाद में तथा आस–पास में किसी की मृत्यु के बाद शव उठने तक भोजन, मैथुन और कटु वाणी का प्रयोग ना करें। भोजन करते समय अपना सिर

ढक कर ना रखें और दक्षिण की ओर मुँह करके भोजन ना करें।

1– अस्पतालों, अनाथालयों अथवा सैनिकों संस्थानों में कार सेवा करें।
2– सफाई कर्मचारियों के साथ दुर्व्यवहार ना करें।

केतु ग्रह के लिए व्रत

बहुत सारे लोगों के लिए सही तरीके से मंत्र का जप करना किसी भी कारण से थोड़ा मुश्किल हो सकता है। उनके लिए समस्याकारक ग्रह के शासित दिन व्रत रखना ग्रह शांति का एक सरल उपाय है। नीचे ग्रहों के शासित दिन दिए गये हैं।

केतु के लिए कोई भी दिन निश्चित नहीं किया गया है। केतु के लिए शनिवार का व्रत किया जा सकता है।

केतु के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए शनिवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले शनिवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम 18 शनिवार को रखनी चाहिए। व्रत के दिन स्नान के बाद आपको काले रंग का वस्त्र पहनना चाहिए और शनि के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का 3 या 18 माला का जप करना चाहिए। इसके बाद जल, हरी घास एवं कुश एक बर्तन में लेकर पीपल की जड़ में डालना चाहिए। इस दिन केवल मीठी चपाती खुद भी खानी चाहिए एवं दान भी करनी चाहिए। रात में पीपल की जड़ में दीपक जलाना चाहिए। इस व्रत को करने से शत्रुओं पर विजय, सरकार से सहयोग एवं राहु–केतु जनित रोगों से मुक्ति प्राप्त होती है।

अपने माता–पिता एवं बड़े–बुजुर्गों का सम्मान करें। इससे आप दीर्घायु, खुशहाल एवं सुखी–सम्पन्न होंगे, क्योंकि माता–पिता के चरणों में ही स्वर्ग है। यदि आप अपने माता–पिता की सेवा करेंगे, उनकी उचित देखभाल करेंगे, तो आपको भी अपनी औलाद से सम्मान और सुख प्राप्त होगा।

जैसी करनी, वैसी भरनी कहावत के अनुसार, आपको हमेशा अपने कर्मों के अनुसार ही फल प्राप्त होगा। सत्कर्म से आपको मानसिक शांति, खुशी एवं अन्न–धन प्राप्त होंगे, तो बुरे कर्मों के कारण आप अपने जीवन में कई तरह की समस्याओं का सामना कर सकते हैं।

केतु ग्रह पीड़ा शांति हेतु जड़ियों का प्रयोग

ग्रह पीड़ा शांति की कई विधियां हैं, जैसे दान करना, मंत्र जप करना, रत्न धारण करना आदि। जड़ी धारण करना भी ग्रह शांति का एक आसान तरीका है और यह लाभदायक भी है।

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

केतु के लिए असगन्ध की जड़ को काले या पीले कपड़े में सिलकर बृहस्पतिवार या अश्विनी, मघा या मूल नक्षत्र में अपने गले, भुजा, जेब या कमर में धारण करें।

केतु ग्रह के अनिष्ट प्रभाव को शांत करने के लिए हवन में प्रयुक्त सामग्री

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ–साथ आस–पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी–बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री– सात अनाज (उड़द, मूंग, गेहूँ चना, जौ, चावल, कंगनी)।
जड़ी– वट वृक्ष की जड़।

केतु ग्रह के लिए स्नान और दान

स्नान करते समय जल में कुश या सरकण्डा, नीम के पत्ते या फल, नागरमोथा एवं खुशबुदार इत्र आदि डालकर स्नान करें। केतु की प्रसन्नता के लिए रंग–बिरंगे कम्बल, कस्तूरी, बिस्तर, मुँह देखने का शीशा, साबुत उड़द, लाल अनार आदि को बांस की टोकरी में रखकर दान करना चाहिए।

केतु ग्रह के लिए यंत्र

यंत्र भोजपत्र पर लाल चंदन या अष्टगन्ध या केसर मिले चंदन से तुलसी, अनार, सोने या चाँदी की कलम से अंकित करना चाहिए। यंत्र सोने, चाँदी या ताँबे पर भी अंकित हो सकते हैं, लेकिन ऐसे यंत्र स्थापित करके पूजे जा सकते हैं। धारण करने के लिए भोजपत्र पर ही अंकित करना चाहिए। यंत्रों को हमेशा सोने, चाँदी या ताँबे के ताबीज में भरकर धारण करना चाहिए। यंत्रों का निर्माण जनेऊधारी व्यक्ति को करना चाहिए। इससे यंत्र अधिक जागृत होकर धारणकर्ता पर अपना प्रभाव डालते हैं।

14	9	16
15	13	11
10	17	12

तांत्रिक यंत्र

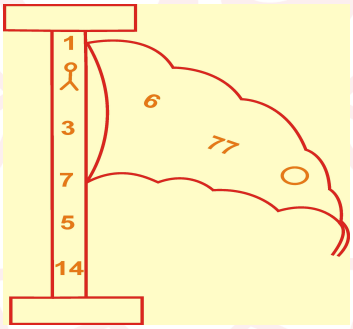

कन्या लग्न के लिए रत्नों का चुनाव

अपनी समस्याओं या कष्टों से निजात पाने के लिए या भाग्योदय के लिए या शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आवश्यकतानुसार रत्न धारण करें।

माणिक रत्न धारण करने के लिए सुझाव

आपकी कुण्डली में सूर्य व्यय भाव का स्वामी है। माणिक धारण करना आपके लिए अशुभ हो सकता है।

मोती रत्न धारण करने के लिए सुझाव

आपकी कुण्डली में चंद्रमा ग्यारहवें भाव का स्वामी होकर मिश्रित फल प्रदान करेगा। आपको मोती धारण करने से बहुत अधिक शुभ फल प्राप्त नहीं हो सकता है।

आपकी कुण्डली में चंद्रमा कारक ग्रह नहीं है। योग्य ज्योतिषी की सलाह से ही मोती धारण करें।

यदि आप मानसिक रूप से अशांत रहते हों या सर्दी–कफ आदि से ग्रसित रहते हों या शरीर में कैल्सियम की कमी हो और आपकी कुण्डली में चंद्रमा पापी ग्रह राहु एवं शनि के साथ स्थित नहीं हो तो मोती धारण करने से लाभ होगा।

मूंगा रत्न धारण करने के लिए सुझाव

आपकी कुण्डली में मंगल तीसरे एवं आठवें भाव का स्वामी है। आपको मूंगा धारण नहीं करना चाहिए।

यदि आप रक्त, मांस, मज्जा आदि से संबंधित किसी रोग से पीड़ित हैं, तो आपको मूंगा धारण करना चाहिए।

आपकी कुण्डली में मंगल आठवें भाव में स्थित है। मूंगा ना धारण करना ही आपके लिए बेहतर होगा।

पन्ना रत्न धारण करने के लिए सुझाव

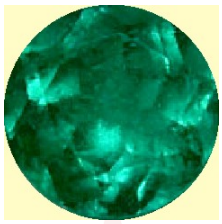

आपकी कुण्डली में बुध पहले भाव एवं दसवें भाव का स्वामी है। पन्ना धारण करने से आपको लाभ प्राप्त होगा।

यदि आप बौद्धिक विकृति, विवेक में कमी, शिक्षा प्राप्ति में बाधा, मानसिक रोग, मिर्गी, पागलपन या वाणी दोष से ग्रसित हैं, तो आपको पन्ना धारण करना चाहिए।

पुखराज रत्न धारण करने के लिए सुझाव

आपकी कुण्डली में गुरु चौथे एवं सातवें भाव का स्वामी है। पुखराज धारण करना आपके लिए लाभदायक होगा।

यदि आप कपास, वस्त्र, साहित्य आदि से जुड़ा कोई व्यवसाय करते हैं, तो आपके लिए पुखराज धारण करना लाभदायक रहेगा।

आपकी कुण्डली में गुरु लग्नेश बुध से शत्रुता रखता है। अतः किसी योग्य ज्योतिषी की सलाह के बाद ही पुखराज धारण करें।

यदि आपके विवाह में बाधा आ रही है या विवाह में देरी हो रही है या वैवाहिक जीवन में बाधा आ रही है, तो आपको गहरे पीले रंग का पुखराज धारण करना चाहिए।

हीरा रत्न धारण करने के लिए सुझाव

आपकी कुण्डली में शुक्र दूसरे एवं भाग्य भाव का स्वामी है। विपरीत परिस्थितियों में शुभ फल प्राप्त करने के लिए आपको हीरा धारण करना चाहिए।

आपकी कुण्डली में शुक्र भाग्य भाव का स्वामी है। हीरा धारण करना आपके लिए लाभदायक होगा।

यदि आपके विवाह में कोई बाधा आ रही है या विवाह मे देरी हो रही है या विवाह पश्चात वैवाहिक जीवन में तनाव हो रहा है या स्त्री–सुख प्राप्त नहीं हो रहा हो, तो आपको हीरा धारण करना चाहिए।

यदि आप खाद्य पदार्थ, रस, फल, कास्मेटिक्स आदि का व्यवसाय करते हैं, तो आपके लिए हीरा धारण करना लाभदायक होगा।

आपकी कुण्डली में शुक्र, बुध या शनि के साथ स्थित नहीं है। यदि आप यौन रोगों या गुप्त रोगों से पीड़ित हैं तो आपको हीरा धारण करने से लाभ होगा।

नीलम रत्न धारण करने के लिए सुझाव

आपकी कुण्डली में शनि पांचवें एवं छठे भाव का स्वामी है। आपको नीलम धारण करने से लाभ होगा।

शनि की साढ़ेसाती या ढैय्या के शुरू होने पर नीलम अवश्य धारण करें।

आपकी कुण्डली में नौवें, दसवें या लग्न भाव पर शनि का प्रभाव है। आपको नीलम धारण करना चाहिए।

आपकी कुण्डली में लग्नेश शनि का मित्र ग्रह है। रोग, शत्रु, शिक्षा, संतान, वाणी आदि से संबंधित शुभ फलों के लिए आप नीलम धारण कर सकते हैं।

गोमेद रत्न धारण करने के लिए सुझाव

राहु किसी विशेष राशि का स्वामी नहीं होता है, अतः राहु की शुभता एवं अशुभता का विचार जन्मकुण्डली में राहु की स्थिति (भाव एवं राशि) के आधार पर शनि की स्थिति देखकर किया जाता है।

जन्मकुण्डली में शनि के स्थिति के अनुसार गोमेद धारण करना चाहिए, अन्यथा हानि भी हो सकती है।

आपकी कुण्डली में राहु केन्द्र भाव (1, 4, 7, 10) या त्रिकोण भाव (5, 9) में स्थित है। यदि आप सार्वजनिक जीवन में पद सम्मान, ख्याति प्राप्त करना चाहते हैं, तो आपके लिए गोमेद धारण करना लाभदायक रहेगा।

आपकी राशि मेष, वृश्चिक या धनु नहीं है। आपके लिए गोमेद धारण करना लाभदायक होगा।

लहसुनियॉ रत्न धारण करने के लिए सुझाव

केतु किसी विशेष राशि का स्वामी नहीं होता है, अतः केतु की शुभता एवं अशुभता का विचार जन्मकुण्डली में केतु की स्थिति (भाव एवं राशि) के आधार पर किया जाता है।

लहसुनिया बिना किसी योग्य ज्योतिषी की सलाह के ना पहनें। लहसुनिया अत्यंत कम समय के लिए धारण किया जाता है। लाभदायक परिणाम प्राप्त होने के बाद इसे विसर्जित कर देना चाहिए।

आपकी कुण्डली में केतु लग्न एवं चंद्रमा दोनों से केन्द्र या त्रिकोण भाव में स्थित है। आपको लहसुनिया धारण करना चाहिए।

यदि आप किसी अज्ञात भय, चोट आतंक, दुर्घटना, कलंक आदि की संभावना से परेशान हैं या किसी प्रकार के मानसिक रोग से ग्रस्त हैं, तो आपको लहसुनिया धारण करना चाहिए।

आपकी राशि वृष, मिथुन या कर्क है और केतु छठे, आठवें, दसवें या बारहवें भाव में स्थित है। आपको लहसुनिया धारण नहीं करना चाहिए।

ज्योतिषीय परामर्श –

यदि आप कालसर्प दोष, ब्रह्म दोष, मातृ, पितृ, भातृ, स्त्री दोष आदि से अशुभ फल प्राप्त कर रहे हैं या दुख, दरिद्रता, कष्ट, अपमान, रोग, शत्रु, कर्ज आदि से लम्बे समय से परेशान है, तो आप तीन रत्नों का लॉकेट या अंगूठी सोने या चांदी में बनवाकर एक साथ धारण कर सकते हैं।

लाकेट –

1– पन्ना, 2– नीलम, 3– हीरा।

अँगूंठी –

1– हीरा (तर्जनी में)

2– नीलम (मध्यमा में)

3– पन्ना (कनिष्ठिका में)

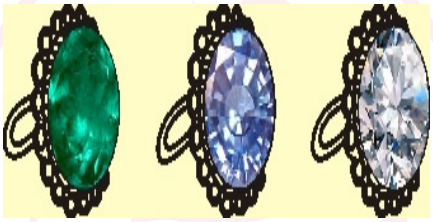

अन्य महत्वपूर्ण सुझाव –

1– भाग्यवर्द्धक रत्न– हीरा।

2– कार्य व्यवसाय, नौकरी, धनदायक रत्न– पन्ना।

3– संतान, शिक्षा, ख्यातिदायक रत्न– नीलम।

4– भीषण कष्ट, रोग, शत्रु या हानिकारक रत्न– मूंगा, माणिक।

Disclaimer

The calculations, future predictions, and remedies given in this Astrological Report are all based on the principles of either on Vedic Astrology, KP System, Jaimini or Lal Kitab, Numerology which are the result of consulting and engaging highly learned astrologers and astrology practitioners. This Report will prove to be highly useful for astrologers and practitioners of Astrology. We earnestly request the common users of this Report that they should not follow the Lal Kitab and or other prediction/remedies given in this Report without consulting a learned astrologer or an expert on this subject. Failing to do so might lead you to unexpected results which may or may not be favorable towards your well-being.

www.webjyotishi.com/MindSutra Software Technologies makes no warranty about the accuracy of any data contained herein, and the native is advised to not to take as conclusive any prediction generated for him. If you follow the advice given in this report you do so at your own risk, ww.webjyotishi.com/ MindSutra Software Technologies or any of its associates are not responsible for the consequence of any event or action.

www.webjyotishi.com/MindSutra Software Technologies shall not stand liable for any damages or harm done.

All disputes are subject to New Delhi Jurisdiction only.

Wishing the very best – prosperity and happiness.